वार्षिक रु. १६०, मूल्य रु. १७

ISSN 2582-0656
9 772582 065005

विवेक ज्योति

७५ आजादी का अमृत महोत्सव

रामकृष्ण मिशन
विवेकानन्द आश्रम
रायपुर (छ.ग.)

वर्ष ६० अंक ८
अगस्त २०२२

* आत्मनो मोक्षार्थं जगद्धिताय च *

वर्ष ६०

अंक ८

विवेक-ज्योति

श्रीरामकृष्ण-विवेकानन्द भावधारा से अनुप्राणित

हिन्दी मासिक

आजादी का अमृत महोत्सव को समर्पित

प्रबन्ध सम्पादक
स्वामी अव्ययात्मानन्द

व्यवस्थापक
स्वामी स्थिरानन्द

सम्पादक
स्वामी प्रपत्त्यानन्द

सह-सम्पादक
स्वामी पद्माक्षानन्द

श्रावण, सम्वत् २०७९

अगस्त २०२२

अनुक्रमणिका

* स्वतन्त्रता हेतु विवेकानन्द का उद्घोष ३४२
* स्वतन्त्रता संग्राम के बलिदानी (अरुण चूड़ीवाल) ३४५
* अपने पुत्र की बलि देनेवाले शिवभक्त : सिरुतोंडर नयनार (श्रीधर कृष्ण) ३५०
* (बच्चों का आंगन) यह मेरी पवित्र मातृभूमि है (स्वामी गुणदानन्द) ३५२
* वीर सेनानियों की धरती : उत्तरप्रदेश(नम्रता वर्मा) ३५५
* (युवा प्रांगण) देश के लिए सुहागन क्रान्तिकारिणी ननीबाला देवी (रीता घोष) ३५७
* रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द विश्वविद्यालय, हावड़ा (स्वामी तन्निष्ठानन्द) ३६०
* सहनं सर्वदु:खानाम् (स्वामी सत्यरूपानन्द) ३६७
* स्वतन्त्रता संग्राम में छत्तीसगढ़... (डॉ. जया सिंह) ३७०
* स्वातन्त्र्य योद्धा : सुभाषचन्द्र बोस (अवधेश प्रधान) ३७४
* (कविता) कृष्ण प्रभु तुम वंशीधर हो (डॉ. ओमप्रकाश वर्मा) ३६६
* (कविता) तब समझो शिवरात्रि सफल (डॉ. सत्येन्दु शर्मा) ३६६
* प्रगति-गीत (आनन्द तिवारी पौराणिक) ३६६

शृंखलाएँ

मंगलाचरण (स्तोत्र) ३४१
पुरखों की थाती ३४१
सम्पादकीय ३४३
आध्यात्मिक जिज्ञासा ३५३
प्रश्नोपनिषद् ३५६
रामराज्य का स्वरूप ३६८
गीतातत्त्व-चिन्तन ३७२
सारगाछी की स्मृतियाँ ३७७
श्रीरामकृष्ण-गीता ३८०
साधुओं के पावन प्रसंग ३८१
समाचार और सूचनाएँ ३८४

रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द आश्रम, रायपुर – ४९२००१ (छ.ग.)

विवेक-ज्योति दूरभाष : ०९८२७१ ९७५३५ (फोन करने का समय केवल सुबह १० से १२)
ई-मेल : **vivekjyotirkmraipur@gmail.com,** वेबसाइट : ***www.rkmraipur.org***
आश्रम कार्यालय : ०७७१ – २२२५२६९, ४०३६९५९ (समय : ८.३० से ११.३० और ३ से ६ बजे तक) रविवार एवं अन्य अवकाश को छोड़कर

ISSN 2582-0656

विवेक-ज्योति के सदस्य कैसे बनें

भारत में	वार्षिक	५ वर्षों के लिए	१० वर्षों के लिए
एक प्रति १७/–	१६०/-	८००/-	१६००/-
विदेशों में (हवाई डाक से)	५० यू.एस. डॉलर	२५० यू.एस. डॉलर	
संस्थाओं के लिये	२००/–	१०००/–	

* सदस्यता-शुल्क की राशि इलेक्ट्रॉनिक या साधारण मनिआर्डर से भेजें अथवा **ऐट पार** चेक – **'रामकृष्ण मिशन'** (रायपुर, छत्तीसगढ़) के नाम बनवाकर रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द आश्रम रायपुर (छ.ग.) ४९२००१ के नाम स्पीड पोस्ट से भेज दें अथवा निम्नलिखित खाते में सीधे जमा करायें :

बैंक का नाम : सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया
अकाउण्ट का नाम : रामकृष्ण मिशन, रायपुर
शाखा का नाम : रायपुर (छत्तीसगढ़)
अकाउण्ट नम्बर : 1 3 8 5 1 1 6 1 2 4
IFSC : CBIN0280804

विवेक-ज्योति कोष/स्थायी कोष

दान दाता	दान-राशि
डॉ. दर्शन लाल गुप्ता, मोहाली (पंजाब)	५१००/-
श्रीमती आशा अभिजीत नेमाड़े,जलगाँव(महा.)	१०००/-

* कृपया सदस्यता राशि जमा करने के बाद इसकी सूचना हमें तुरन्त **फोन, मोबाईल, एस.एम.एस., व्हाट्सएप, ई-मेल** अथवा **स्कैन द्वारा अपना नाम, पूरा पता, पिन कोड नं.** के साथ भेजें।
* विवेक-ज्योति पत्रिका के सदस्या किसी भी माह से बन सकते हैं।
* पत्रिका को निरन्तर चालू रखने हेतु अपनी सदस्यता की अवधि पूर्ण होने के पूर्व ही नवीनीकरण करा लें।
* विवेक-ज्योति कार्यालय से प्रतिमाह सभी सदस्यों को एक साथ पत्रिका प्रेषित की जाती है। डाक की अनियमियता के कारण कई बार पत्रिका सदस्यों को नहीं मिलती है, अत: पत्रिका प्राप्त न होने पर अपने समीप के डाक विभाग से सम्पर्क एवं शिकायत करें। इससे कई सदस्यों को पत्रिका मिलने लगी है। पत्रिका न मिलने की शिकायत माह के अंत में ही करें। अंक उपलब्ध होने पर ही पुन: प्रेषित किया जायेगा।
* सदस्यता, एजेन्सी, विज्ञापन एवं अन्य विषयों की जानकारी के लिए 'व्यस्थापक, विवेक-ज्योति कार्यालय' को लिखें।

अगस्त माह के जयन्ती और त्यौहार

१२	स्वामी निरंजनानन्द
१५	स्वतन्त्रता दिवस
१८	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
२६	स्वामी अद्वैतानन्द
८,२३	एकादशी

'vivek jyoti hindi monthly magazine' के नाम से

अब विवेक-ज्योति पत्रिका यू-ट्यूब पर सुने

आवरण-पृष्ठ के सम्बन्ध में

आवरण पृष्ठ पर आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर भारतवर्ष की स्वतन्त्रता के लिए अपने तन-मन-धन से सेवा करनेवाले महान व्यक्तित्वों को चित्रित किया गया है।

विवेक-ज्योति के अंक ऑनलाइन नि:शुल्क पढ़ें : www.rkmraipur.org

क्रमांक	विवेक ज्योति पुस्तकालय योजना के सहयोग कर्ता	प्राप्त-कर्ता (पुस्तकालय/संस्थान)
६८३.	श्री अनुराग प्रसाद, गाजियाबाद (उ.प्र.)	लाईब्रेरी, पी.के. रॉय मेमोरियल कॉलेज, धनबाद (झारखंड)
६८४.	,, ,,	लाईब्रेरी, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, कुसुन्दा,धनबाद (झारखंड)
६८५.	,, ,,	लाईब्रेरी, देहली पब्लिक स्कूल, कर्मिक नगर,धनबाद (झारखंड)
६८६.	,, ,,	लाईब्रेरी, गर्वनमेंट हाई स्कूल, खट्टा-पटेवा, महासमुंद (छ.ग)

सुदर्शन सोलार...
ऊर्जा अपरंपार !

आधुनिक भारत की बिजली की बढ़ती हुई आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हमारे पास पर्याप्त मात्रा में सौर ऊर्जा उपलब्ध है। प्राकृतिक रुप से उपलब्ध इस स्त्रोत का प्रतिदिन की अपनी आवश्यकताओं के लिये उपयोग करके, अपने बिजली के बिल में भारी पैमाने पर कटौती कर, हम अपने देश को बिजली के निर्माण में आत्मनिर्भर बनाने में सहायता कर सकते हैं।

इस सुन्दर भूमि को सदा हरी-भरी रखने के लिये अपना साथी

भारत का विश्वसनीय सौर ऊर्जा ब्रांड - 'सुदर्शन सौर'!

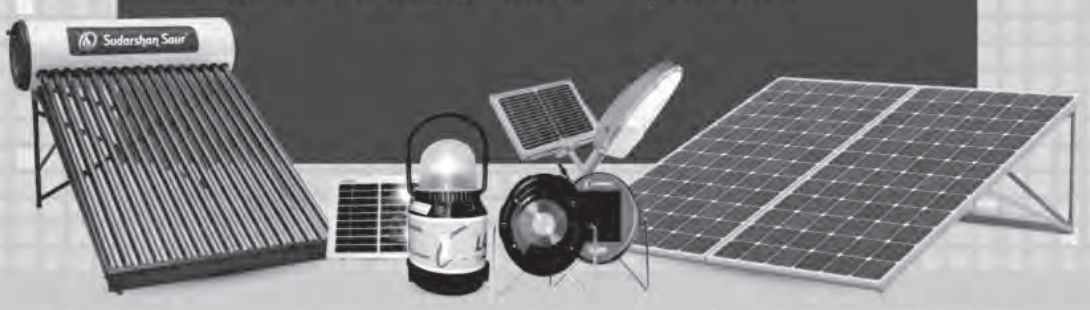

सोलर वॉटर हीटर
24 घंटे गरम पानी के लिए

सोलर लाइटिंग्स
ग्रामीण क्षेत्र में घरेलू उपयोग के लिए

सोलार इलेक्ट्रिसिटी सिस्टम
रुफटॉप सोलार
बिजली उत्पन्न करने के लिए

घर, बंगलोज, हॉस्पिटल्स, हॉटेल्स, इंडस्ट्रीज, कमर्शिअल कॉम्प्लेक्स, इन्स्टिट्यूट्स के लिए उपयुक्त

समझदारी की सोच!

३० साल का प्रदीर्घ अनुभव!

आजीवन सेवा — लाखां संतुष्ट ग्राहक — विस्तृत डीलर नेटवर्क

Sudarshan Saur®

www.sudarshansaur.com | Toll Free 1800 233 4545 | E-mail: office@sudarshansaur.com

।। आत्मनो मोक्षार्थं जगद्धिताय च ।।

विवेक-ज्योति

श्रीरामकृष्ण-विवेकानन्द भावधारा से अनुप्राणित

हिन्दी मासिक

वर्ष ६० **अगस्त २०२२** **अंक ८**

श्रीकृष्ण वन्दना

कदा वृन्दारण्ये विपुलयमुनातीरपुलिने
चरन्तं गोविन्दं हलधरसुदामादिसहितम् ।
अहो कृष्ण स्वामिन् मधुरमुरलीमोहन विभो
प्रसीदेति क्रोशन्निमिषमिव नेष्यामि दिवसान् ।।

– कभी वृन्दावन में और कभी विपुल यमुना तट की मरुभूमि में, तो कभी बलराम, सुदामा आदि के साथ आमोद-प्रमोद करनेवाले गोपालकृष्ण ! हे कृष्ण ! हे स्वामी ! मधुर मुरली बजानेवाले मनमोहन प्रभो ! मुझ पर दया करो, इस प्रकार करुण विलाप करनेवाला मैं प्रत्येक दिन कातर हृदय से प्रतिपल जीवन व्यतीत कर रहा हूँ ।

पुरखों की थाती

कः कालः कानि मित्राणि को देशः को व्ययागमोः।
कस्याहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः।।७६७।।

– मेरा समय कैसा चल रहा है? मेरे मित्र कौन-कौन हैं? यह स्थान कैसा है? मेरी आमदनी तथा खर्च कैसा चल रहा है? मैं किसका हूँ और मेरी क्या शक्ति है? – इन बातों पर बारम्बार विचार करना चाहिए।

कामक्रोधादि संसर्गादशुद्धं जायते मनः।
अशुद्धे मनसि ब्रह्मज्ञानं तच्च विनश्यति।।७६८।।

– काम-क्रोध आदि के संसर्ग से व्यक्ति का मन अपवित्र हो जाता है। मन के अपवित्र हो जाने पर उसका ब्रह्मज्ञान भी नष्ट हो जाता है।

कामधेनुगुणा विद्या ह्ययकाले फलदायिनी।
प्रवासे मातृसदृशा विद्या गुप्तं धनं स्मृतम्।।७६९।।

(चाणक्य)

– विद्या कामधेनु के समान गुणवाली है, बुरे समय में यह इच्छित फल देनेवाली है और परदेश में माता के समान हितकारिणी है; इसीलिए विद्या को गुप्त-धन कहा गया है।

भारतीय स्वतन्त्रता के प्रति स्वामी विवेकानन्द का उद्घोष

आगामी पचास वर्ष के लिए यह जननी जन्मभूमि भारतमाता ही मानो आराध्य देवी बन जाये। तब तक के लिए हमारे मस्तिष्क के व्यर्थ के देवी-देवताओं के हट जाने में कुछ भी हानि नहीं है। अपना सारा ध्यान इसी एक ईश्वर पर लगाओ, हमारा देश ही हमारा जाग्रत देवता है। (विवेकानन्द साहित्य ३/१९३)

एक नवीन भारत निकल पड़े। निकले हल पकड़कर, किसानों की कुटी भेदकर, जाली, माली, मोची, मेहतरों की झोपड़ियों से। निकल पड़े बनियों की दुकानों से, भुजवा के भाड़ के पास से, कारखाने से, हाट से, बाजार से। निकले झाड़ियों, जंगलों, पहाड़ों, पर्वतों से। इन लोगों ने सहस्र-सहस्र वर्षों तक नीरव अत्याचार सहन किया है, उससे पायी है अपूर्व सहिष्णुता। सनातन दुख उठाया, जिससे पायी है अटल जीवनी शक्ति। ये लोग मुट्ठीभर सत्तू खाकर संसार को उलट दे सकेंगे। आधी रोटी मिली, तो तीनों लोक में इनका तेज न अटेगा? ये रक्तबीज के प्राणों से युक्त हैं और पाया है सदाचार-बल, जो तीनों लोक में नहीं है। इतनी शान्ति, इतनी प्रीति, इतना प्रेम, मौन रहकर दिन-रात इतना खटना और काम के समय सिंह का विक्रम ! अतीत के कंकाल-समूह ! यही है तुम्हारे सामने तुम्हारा उत्तराधिकारी भावी भारत ! वे तुम्हारी रत्नपेटिकाएँ, तुम्हारी मणि की अँगूठियाँ, फेंक दो इनके बीच, जितना शीघ्र फेंक सको, फेंक दो, और तुम हवा में विलीन हो जाओ, अदृश्य हो जाओ, मात्र कान खड़े रखो। तुम ज्योंही विलीन होगे, उसी समय सुनोगे, कोटिजीमूतस्यन्दिनी, त्रैलोक्य-कम्पनकारिणी भावी भारत की उद्बोधन ध्वनि 'वाह गुरु की फतह !'(८/१६७-१६८)

याद रखो कि राष्ट्र झोपड़ी में बसा हुआ है, परन्तु हाय ! उन लोगों के लिए कभी किसी ने कुछ किया नहीं। ... परन्तु राष्ट्र की भावी उन्नति ... 'सामान्य जनता की अवस्था' पर निर्भर रहती है। क्या तुम जनता की उन्नति कर सकते हो? क्या उनका खोया हुआ व्यक्तित्व बिना उसकी स्वाभाविक आध्यात्मिक वृत्ति को नष्ट किये, उन्हें वापस दिला सकते हो? क्या समता, स्वतन्त्रता, कार्य-कौशल, पौरुष में तुम पाश्चात्यों के भी गुरु बन सकते हो? क्या तुम उसी के साथ-साथ स्वाभाविक आध्यात्मिक अन्तःप्रेरणा व आध्यात्मिक-साधनाओं में एक कट्टर सनातनी हिन्दू हो सकते हो? यह काम करना है और हम इसे करेंगे ही। तुम सबने इसी के लिए जन्म लिया है।

अपने आप पर विश्वास रखो। दृढ़ धारणाएँ महान कार्यों की जननी हैं। हमेशा बढ़ते चलो। मरते दम तक गरीबों और पददलितों के लिए सहानुभूति, यही हमारा मन्त्र है। (२/३२१-२२)

देशभक्त बनो – जिस जाति ने अतीत में हमारे लिए इतने बड़े-बड़े काम किये हैं, उसे प्राणों से भी अधिक प्यारी समझो। हे स्वदेशवासियो ! मैं संसार के अन्यान्य राष्ट्रों के साथ-साथ अपने राष्ट्र की जितनी ही अधिक तुलना करता हूँ, उतना ही अधिक तुम लोगों के प्रति मेरा प्यार बढ़ता जाता है। तुम लोग शुद्ध, शान्त और सत्स्वभाव हो और तुम्हीं लोग सदा अत्याचारों से पीड़ित रहते आये हो, इस मायामय जड़ जगत् की पहेली ही कुछ ऐसी है। जो हो, तुम इसकी परवाह मत करो! अन्त में आत्मा की ही जय अवश्य होगी। इस बीच आओ, हम काम में संलग्न हो जायें। केवल देश की निन्दा करने से काम नहीं चलने का। हमारी इस परम पवित्र मातृभूमि के काल जर्जर कर्मजीर्ण आचारों और प्रथाओं की निन्दा मत करो। (५/९५)

सम्पादकीय

आजादी का अमृत महोत्सव : आत्ममन्थन और समीक्षा

इस वर्ष सम्पूर्ण भारतवर्ष आजादी का अमृत महोत्सव बड़े उत्साह से मना रहा है। यद्यपि वैश्विक परिवेश अशान्त है। रूस-युक्रेन युद्ध चल रहा है, जो आर्थिक और पर्यावरण के रूप में सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित कर रहा है। कोरोना के कारण दो वर्षों में पूरे विश्व में क्रन्दन छाया रहा और विश्व की आर्थिक स्थितियाँ बहुत खराब हो गईं। कई देशों में स्थिति अभी भी बहुत खराब है। वहाँ सामग्रियाँ बहुत मँहगी हैं और अनुपलब्ध भी। लोगों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इस विषम वैश्विक परिस्थिति में भी भारत सरकार अपने राष्ट्र की सीमाओं और प्रजा के रक्षार्थ संकल्पित, कटिबद्ध और प्रयासरत है तथा सफल है। सम्माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 'आजादी का अमृत महोत्सव' सम्पूर्ण राष्ट्र में व्यापक रूप से मनाने का संकल्प लिया है और इस महोत्सव के आयोजन हेतु पदाधिकारियों और जनता को निर्देश, परामर्श दिया है।

आजादी की प्राप्ति हेतु हमारे पूर्वजों द्वारा चुकाए गये मूल्य का ध्यान रखें

वास्तव में 'आजादी का अमृत महोत्सव' हमें हमारे वीर स्वतन्त्रता संग्राम-सेनानियों, राजनेताओं और शहीद क्रान्तिकारियों के जीवन की संघर्ष-गाथा का स्मरण दिलाता है, जिससे हम उनके त्याग, बलिदान और राष्ट्र के प्रति समर्पण से प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन में राष्ट्रभक्ति और राष्ट्र-सेवा की भावना को वर्धित कर सकें। इस स्वतन्त्रता हेतु असंख्य माताओं ने अपने एकलौते पुत्र को स्वतन्त्रता संग्राम में बलि चढ़ा दिया। असंख्य बहनों ने अपने भाई और पति को राष्ट्र की बलिवेदी पर समर्पित कर दिया। असंख्य बहनों ने स्वयं अपने हाथों में तलवार लेकर युद्धभूमि में लड़ते-लड़ते अपने जीवन समर्पित कर दिया। इन सबके अमूल्य जीवन के बलिदान को स्मरण कर हमारे देशवासी अपने राष्ट्र से प्रेम करें। इतने प्राणों के बलिदान से प्राप्त राष्ट्र की स्वतन्त्रता को जाति-धर्म और महत्त्वाकांक्षा की विमूढ़ता पर बलि न चढ़ावें। अंग्रेजों द्वारा जनता पर हुए अत्याचार से दुखित होकर हमारे स्वातन्त्र्य योद्धाओं ने हमें उस अत्याचार की विभीषिका से बचाने हेतु स्वयं जेल की कठिन यातनाएँ सहते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। हम विरासत में प्राप्त आजादी के महत्त्व को समझें, इसका सम्मान करें और जो जिस स्थिति में है, जिस स्तर पर है, यथासम्भव देशवासियों की सहायता करे, हम देश में एक अनुशासित नागरिक की तरह रहकर शासन-व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने में सहायता करें।

आजादी का अमृत महोत्सव : गौरव महोत्सव

आजादी का अमृत महोत्सव हमारे लिये गौरव का महोत्सव है। इस महोत्सव के उपलक्ष्य में पहले हमें आत्मसमीक्षा करनी चाहिये। हम आत्मसमीक्षा करें कि १९४७ में हम क्या थे और अभी क्या हैं? इससे हमें अपने चतुर्दिक विकास के गौरव-स्वर्ण-स्तम्भ दृष्टिगोचर होंगे, जिससे हमारा गौरव, आत्मसम्मान बढ़ेगा और हम पुन: अत्यन्त ऊर्जा के साथ इस राष्ट्र-सेवा के महान कार्य में संलग्न होंगे।

दूसरा हमें निष्पक्ष होकर आत्ममन्थन करना चाहिये कि हमने तत्कालीन परिस्थितियों से लेकर अब तक ऐसा कौन-सा कार्य नहीं किया है, जो देशहित में आवश्यक था, जिधर हमारी दृष्टि नहीं गयी या विभिन्न परिस्थितिवश हम

जिसे नहीं कर सके। समुद्र-मन्थन में अमृत के साथ विष भी निकला था। निष्पक्ष मन्थन में अच्छे-बुरे दोनों कार्य हमारे समक्ष आयेंगे, जिसे हमें स्वीकार कर अच्छे कार्यों पर गर्व करना होगा और लोकहित में उपेक्षित कार्यों को पूरा करने का दृढ़ संकल्प लेकर यथाशीघ्र उसे पूर्ण करने के लिये प्रयत्नशील होना होगा।

तब १९४७ और अब २०२२

आइये ! हम आपको कुछ महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में १९४७ में देश की क्या स्थिति थी और अब २०२२ में क्या स्थिति है, एक झलक दिखाते हैं, जिससे हमारे समस्त भारतवासी की छाती गर्व से चौड़ी हो जायेगी। जिन्होंने अपने दादा-परदादा से सुना है या जो लोग इतिहास का अध्ययन करते हैं, वे अंग्रेज-शासकों द्वारा भारतीयों पर किये जानेवाले अत्याचार से अवगत हैं। देश में गरीबी, भूखमरी की पराकाष्ठा थी। अकाल तो पड़ते रहता था। स्वास्थ्य की कोई सुविधा नहीं। विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ, महामारियाँ होती ही रहती थीं। अशिक्षा बहुत थी। पेट के लिये दिनभर जमींदारों के यहाँ श्रम करना, इस पर भी अंग्रेजों और उनके प्रतिनिधि राजाओं, जमींदारों द्वारा जनता का शोषण और उन पर अत्याचार था। लेकिन जब हम आज के परिप्रेक्ष्य में भारत को देखते हैं, तो पर्याप्त भिन्न अवस्था में पाते हैं। आज हमने सभी क्षेत्रों में पर्याप्त उन्नति की है। आज सरकार द्वारा गरीबों के खाने-पीने, दवाई, यहाँ तक कि कुछ सीमा तक बिजली की भी नि:शुल्क व्यवस्था की गई है। आरक्षण के द्वारा सरकारी नौकरियों में उन्हें आश्रय देकर उनकी आर्थिक स्थिति ठीक करने का प्रयास किया जा रहा है। उच्च शिक्षा हेतु सहयोग, प्रोत्साहन राशि के अतिरिक्त बिना व्याज ऋण की व्यवस्था की जा रही है। कौशल विकास हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा है। स्वास्थ्य हेतु आयुष्मान कार्ड, स्मार्ट कार्ड के द्वारा गरीब जनता की सेवा का प्रकल्प है। हमारी सैन्य शक्ति बहुत सबल है और हम पूरे विश्व में स्वाभिमान से जी रहे हैं। भारत की गरिमा और इसका महत्त्व वैश्विक स्तर पर बढ़ा है। हम अन्तरिक्ष में जा रहे हैं। मंगल-ग्रह और चन्द्रमा पर उपग्रह भेज रहे हैं। अन्य कई देशों की तुलना में भारत में शान्ति और सुरक्षा है, ऐसा जो लोग सोशल मीडिया से जुड़कर वैश्विक परिस्थिति से अवगत हैं, वे लोग अनुभव कर रहे हैं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय और वर्तमान में विभिन्न क्षेत्रों में हमारी प्रगति का विवरण इस चार्ट से अनुमान लगाया जा सकता है –

क्र.स.	विवरण	स्वतन्त्रता के समय	स्वतन्त्रता के बाद
१.	सैनिक	५,७३,००० (१९१८)	५१,३७,५०० (२०२२)
२.	साक्षरता दर	१२% (१९४७)	७४.०४% (२०११)
३.	शिक्षकों की संख्या	१.८८ लाख (१९४७)	९.४ मिलियन्स (२०१८-१९)
४.	स्वास्थ्य दर	३२ वर्ष के नीचे (१९५०)	६९.६६ वर्ष (२०१९)
५.	इंजीनियरिंग कॉलेज	३६ (१९४७)	७१००० (२०२१)
६.	डॉक्टर	४७,५२४ (१९५०-५१)	१.२ मिलियन (२०२०)
७.	स्कूल	२,३१,००० (१९५०-५१)	१.६ मिलियन (२०१८-१९)
८.	कॉलेज	४९८ (१९५०-५१)	४२,३४३ (२०२०)
९.	विश्वविद्यालय	२७ (१९५०-५१)	१०४३ (२०२०)
१०	चिकित्सालय	७००० (१९४७)	६९,२६४ (२०१६)

हमारी भावी योजना

स्वामी विवेकानन्द ने भारत के गरीबों, दीनों, पीड़ितों के उत्थान के लिये परामर्श दिया था और रामकृष्ण मिशन के द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल विकास और नैतिक शिक्षा प्रदान करने का प्रयास किया था, जो अभी भी अनवरत जारी है। स्वामी विवेकानन्द जिनका हृदय गरीबों के लिये रोता था, जिनके हृदय में गरीबों के लिये पीड़ा थी, बड़े दुख का विषय है कि आज भी देश में भले ही बहुत कम मात्रा में हो, लेकिन गरीबी है। लोग गम्भीर बीमारियों के लिये पैसे के अभाव में, सही चिकित्सा के अभाव में असमय काल-कवलित हो जाते हैं। जनहित में संचालित उपकारी योजनाएँ भी ठीक ढंग से सामान्य जनता तक नहीं पहुँच पातीं। ठगी, डकैती, हत्या, अत्याचार, भ्रष्टाचार प्रतिदिन हो रहे हैं। प्रतिदिन अखबार के पन्ने इनसे भरे रहते हैं। इस पर अंकुश लगाने के लिये प्रशासन और प्रबुद्ध नागरिक दोनों को सामने आना पड़ेगा। जब तक इन पर अंकुश नहीं लगाया जाता, तब तक पूर्णरूप से स्वतन्त्रता का संकल्प पूरा नहीं होगा।

इतिहास साक्षी है कि योग्य सन्तान नहीं होने पर वंशानुगत प्राप्त राज, सम्पत्ति और कुल-गौरव सब नष्ट हो जाते हैं। हमारे पुरखों ने अपने बलिदान से हमें स्वतन्त्रता प्रदान की। इस स्वतन्त्रता की रक्षा हमें एक प्रबुद्ध नागरिक बनकर, एक सच्चे देशभक्त बनकर, एक सच्चे जनसेवक बनकर करनी है।

अत: आइये ! हम सभी भारतवासी यह दृढ़ संकल्प लें कि हम भारत से समस्त अल्पमात्र शेष गरीबी, अशिक्षा, अस्वास्थ्य, कुशासन, भ्रष्टाचार, अत्याचार को मिटा देंगे और अपने जीवन के अन्तिम साँस तक एक सदाचारी, सर्वश्रेष्ठ, सबल विश्वगुरु भारत के निर्माण में सतत प्रयत्नशील रहेंगे। ○○○

स्वतन्त्रता संग्राम के बलिदानी

अरुण चूड़ीवाल, कोलकाता

भाई बालमुकुंद

जोधपुर के महाराज को अपने राजकुमारों को पढ़ाने के लिये एक गृह शिक्षक की आवश्यकता थी। इसके लिए एक विज्ञापन उन्होंने समाचारपत्र में छपवाया और ढेर सारे आवेदन पत्र उनके पास पहुँच गए। उन सब में से उन्होंने जिसको चुना, वह एक सौम्य प्रकृति का नवयुवक था। साक्षात्कार के समय जब उस युवक से उसका नाम पूछा गया, तो उसने अपना नाम भाई बालमुकुंद बताया। जोधपुर महाराज की जिज्ञासा बढ़ी और उन्होंने पूछ डाला – 'आप अपने नाम के साथ 'भाई' शब्द क्यों लगाते हैं?' युवक बालमुकुंद ने इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार दिया – ''हमारे पुरखों में एक श्री मतिरामजी थे। सम्राट औरंगजेब ने उन्हें गिरफ्तार किया और इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए कहा। वे सहमत नहीं हुए। परिणाम यह हुआ कि सम्राट के आदेश से उन्हें आरे से चीरकर मार डाला गया। उनकी दृढ़ता और उनके बलिदान को सम्मानित करने के लिए उन्हें 'भाई मतिराम' कहा जाने लगा। तभी से उनके वंशजों के सभी लोगों के नाम के साथ सम्मान सूचक शब्द 'भाई' जोड़ा जाने लगा है। मुझे गर्व है कि मैं भी भाई मतिराम का वंशज

भाई बालमुकुंद

हूँ और इसीलिए लोग मुझे भाई बालमुकुंद कहकर पुकारते हैं।'' इस उत्तर को सुनकर जोधपुर महाराज भी प्रभावित हुए और उन्होंने भाई बालमुकुंद को अपने राजकुमारों के गृह शिक्षक के रूप में नियुक्त कर दिया।

भाई बालमुकुंद ने अपने प्रभाव से ही रासबिहारी बोस के भेजे हुए क्रान्तिकारी बसन्त कुमार विश्वास को एक प्राइवेट अस्पताल में कंपाउंडर की नौकरी दिलवाई थी। वे स्वयं भी बम बनाने और उसके विस्फोट करने की कला में निष्णात हो चुके थे।

वायसराय लार्ड हॉर्डिंग्ज एक बार जोधपुर पहुँचे। वायसराय के जोधपुर आगमन पर वहाँ के महाराजा द्वारा एक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। उस सम्मान समारोह में भाई बालमुकुंद को भी जाने की अनुमति मिली और वे अपने साथ एक बम भी ले गए, पर प्रहार करने की सुविधा उन्हें नहीं मिली। वायसराय महोदय के पास ही जोधपुर नरेश बैठे थे। इसी कारण भाई बालमुकुंद ने बम-प्रहार नहीं किया।

जब ब्रिटिश सरकार ने क्रान्तिकारियों की धर-पकड़ प्रारम्भ की, तो दीनानाथ नामक एक सदस्य ने विवश होकर दल के सभी सदस्यों के नाम-धाम बता दिए। उसी के द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर भाई बालमुकुंद को जोधपुर से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तारी के समय उनके मकान से दो जीवित बम बरामद किए गए और कुछ शासन विरोधी साहित्य भी पाया गया। सभी साथियों के साथ अंबाला जेल में ११ मई, १९१५ को भाई बालमुकुंद को भी फाँसी पर झूला दिया गया। उन्हें इस बात का गर्व था कि उनके पूर्वज मतिरामजी धर्म पर बलिदान हुए थे, तो उन्हें देश पर बलिदान होने का सौभाग्य मिला।

महाराज नन्दकुमार

भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड वारेन हेस्टिंग्ज उस दिन बहुत चिन्तित और तनावपूर्ण मुद्रा में अपने कमरे में तेजी से घूम रहे थे। उनके तनाव का कारण यह था कि महाराज नन्दकुमार ने कौंसिल में रिश्वत का आरोप लगाकर उनकी शिकायत की थी और ईस्ट इंडिया कंपनी की ओर से उन पर सुप्रीम कोर्ट में दावा दायर करने की बात पक्की हो गई थी। कंपनी के सॉलिसिटर ने जो राय दी थी। अपनी चिन्ता और तनाव से मुक्ति पाने के उद्देश्य से वारेन हेस्टिंग्ज ने अपनी खुशामदी दीवान मुंशी नवकृष्ण को बुलवाकर उससे परामर्श लेने लगे। ''मुंशीजी, महाराज नन्दकुमार तो पहले हमारे समर्थक थे, पर अब उन्हें क्या हो गया है कि वे एकदम हमारे विरुद्ध हो गए हैं और कंपनी सरकार से हमारी शिकायत भी कर दी है?'' दीवान नवकृष्ण कुछ सोचने का अभिनय करने के उद्देश्य से अपना सिर खुजलाते हुए धीरे-धीरे कहने लगे – ''बात यह है हुजूर कि महाराज नन्दकुमार को पूना के पेशवा ने भड़काया है। पेशवा के दूत और महाराज नन्दकुमार के दूत जगमोहन दत्त ने चंदननगर में मिलकर कोई गोपनीय मंत्रणा की है और उसी के अनुसार महाराज नन्दकुमार अपनी चाल चल रहे हैं।''

वारेन हेस्टिंग्ज ने कहा – ''मुंशीजी, यह रिपोर्ट तो तुम मुझको पहले ही दे चुके हो, लेकिन मैं तो अब यह जानना चाहता हूँ कि सुप्रीम कोर्ट में मेरे विरुद्ध जो नालिश की जा रही है, उसमें हार और अपमान से कैसे बचा जाए?''

महाराज नन्दकुमार

मुंशी नवकृष्ण ने चुटकी बजाते हुए कहा – 'हुजूर! इसका तो बड़ा आसान उपाय है और वह यह कि आप खुद सुप्रीम कोर्ट में महाराज नन्दकुमार पर जालसाजी का मुकदमा कर दें, और रही बात झूठे गवाह जुटाने की, तो यह कार्य आपका यह सेवक नवकृष्ण कर देगा। मुझे भरोसा है कि सुप्रीम कोर्ट के जज इंपे साहब को तो आप अपने पक्ष में कर ही लेंगे।'' यह सुनकर वारेन हेस्टिंगज का तनाव बहुत कुछ कम हो गया और अपने चेहरे पर खुशी का भाव लाते हुए बोला – ''मुंशीजी, तुम बहुत काम के आदमी हो, तभी तो संकट के समय तुरुप के इक्के की भाँति तुम्हें दाँव पर लगाता हूँ। लेकिन यह तो बताओ कि महाराज नन्दकुमार के विरुद्ध वह जालसाजी का मुकदमा क्या हो?''

मुंशी नवकृष्ण ने अपनी सारी योग्यता बघारते हुए कहा - 'हुजूर, मुकदमा तो बिलकुल तैयार है। हम सबको मालूम है कि महाराज नन्दकुमार ने अमानत के तौर पर अपने मित्र महाजन बुलाकीदास के पास कुछ गहने रखे थे, जो मुर्शिदाबाद में रहते थे। मुर्शिदाबाद की लूट के समय महाराज बुलाकीदास की निजी सम्पत्ति के साथ वे गहने भी लूट लिये गए, जो महाराज नन्दकुमार ने अमानत के रूप पर रखे थे। हमें यह भी मालूम है कि धर्मात्मा स्वभाव के होने के कारण सेठ बुलाकीदास ने महाराज की अमानत के बदले में अड़तालीस हजार इक्कीस रुपए का ऋणपत्र लिख दिया था। सेठ बुलाकीदास तो मर चुके हैं और हम यह सिद्ध कर देंगे कि वह ऋणपत्र जाली है तथा यह जालसाजी महाराज नन्दकुमार ने की है।' यह बात सुनकर वारेन हेस्टिंग्ज ने मुंशीजी की पीठ थपथपाते हुए कहा – ''मुंशीजी, तुम्हारी मनचाही तरक्की निश्चित है। तुम सेठ बुलाकीदास के घर से वह ऋणपत्र प्राप्त करके गवाह तैयार करो और मैं सुप्रीम कोर्ट के जज इंपे साहब को साधता हूँ।''

हेस्टिंग्ज साहब को चीफ जस्टिस इंपे साहब को साधने में अधिक प्रयत्न नहीं करने पड़े। इंपे साहब को आर्थिक लाभ भी होना था और अपने एक अंग्रेज साथी का भला करने का गौरव भी उन्हें प्राप्त करना था। मोहन प्रसाद नामक व्यक्ति ने सुप्रीम कोर्ट में शपथपूर्वक बयान देकर महाराज नन्दकुमार पर यह अभियोग लगा दिया कि उन्होंने जाली दस्तावेज बनाकर स्वर्गीय बुलाकीदास की जायदाद से रुपए वसूल किए हैं। ३ जून, १७७५ को महाराज नन्दकुमार को अदालत के कठघरे में खड़ा किया गया। दुभाषिए विलियम चैम्बर को जानबूझकर अनुपस्थित कर दिया गया और उनके स्थान पर हेस्टिंग्ज के कृपापात्र मि. इलियट को दुभाषिए के रूप में प्रस्तुत किया गया। बारह ज्यूरियों की भी नियुक्ति की गई। सभी हेस्टिंग्ज पक्ष के थे।

वादी पक्ष की ओर से पहली गवाही कमालुद्दीन खाँ की हुई। उसने बयान दिया – ''महाराज नन्दकुमार ने आज से

चौदह वर्ष पूर्व मेरे नाम की मुहर माँगी थी, जो उन्होंने आज तक मुझे वापस नहीं की।'' जज महोदय ने जब दस्तावेज पर वह मुहर लगी हुई दिखाई, तो गवाह ने स्वीकार किया कि वह मुहर उसी की है। इस गवाह के बयान पर महाराज नन्दकुमार के बैरिस्टर फरार साहब ने आपत्ति करते हुए जिरह की 'तुम्हारा नाम तो कमालुद्दीन खाँ है और मुहर अब्दुल कमालुद्दीन के नाम की लगी है, इससे सिद्ध होता है कि तुम स्वयं एक जाली गवाह हो।''

''धर्मावतार! मैं झूठ नहीं बोलूँगा। मैं दिन में पाँच बार नमाज पढ़ता हूँ। मेरा नाम पहले अब्दुल कमालुद्दीन ही था, पर जब से मेरी हैसियत बढ़ गई है, मैंने अपने नाम के आगे का टुकड़ा छोड़कर पीछे लगा लिया है।'' जज महोदय ने गवाह के नाम का परिवर्तन स्वीकार कर लिया।

आखिर वादी पक्ष की ओर से आजिम अली नाम के एक ऐसे गवाह को पेश किया गया, जो पेशेवर गवाह था और जो कैसी भी जिरह के सामने दृढ़ता के साथ टिक सकता था। आजिम अली एक अंग्रेज का खानसामा था और आवश्यकता पड़ने पर उसे सरकारी गवाह बनाया जाता था, क्योंकि उन दिनों सरकारी वकील नहीं हुआ करता था। १२ जून को आजिम अली को गवाह के कठघरे में खड़ा किया गया। उसे देखते ही प्रतिवादी पक्ष में खलबली मच गई, क्योंकि सभी जानते थे कि आजिम अली एक सिद्धहस्त गवाह है।

महाराज नन्दकुमार के गुमाश्ता बाबू चैतन्य नाथ दर्शकों में इस प्रकार खड़े हुए थे कि वे आजिम अली के बहुत निकट पड़ते थे। उनके हाथ में एक डायरी थी, जिसमें वे कभी-कभी कुछ लिख लिया करते थे। आजिम अली ने महाराज नन्दकुमार के विरुद्ध बयान देना प्रारम्भ किया, तो उसे फोड़ने के लिये चैतन्य बाबू ने दो सौ, चार सौ और आठ सौ रुपए के आँकड़े लिखकर उसे दिखाए, पर इस रिश्वत के प्रलोभन में न आते हुए उसने हलफिया बयान जारी रखा। वह कह रहा था –

'मैं महाराज नन्दकुमार का मकान जानता हूँ। एक बार सन् १७६९ में जब मैं चैतन्य बाबू से मिलने महाराज नन्दकुमार के घर गया, तो मैंने चैतन्य बाबू को बहुत व्यस्त पाया। मुझे टालने की दृष्टि से उन्होंने कहा कि इस समय महाराज एक जाली दस्तावेज बना रहे हैं और इस काम में मैं महाराज की सहायता कर रहा हूँ, अत: मैं तुमसे मिलने के लिए समय नहीं दे सकता। मैंने स्वयं देखा कि महाराज अपनी नाक पर चश्मा चढ़ाए हुए बुलाकीदास के विरुद्ध दस्तावेज तैयार कर रहे थे। उन्होंने एक मुहर को कमालुद्दीन की कहकर उसे चैतन्य बाबू को दिखाया भी था। हुजूर, इसके बाद ऋणपत्र की शक्ल के कागज पर वह मुहर छाप दी गई।''

आजिम अली के बयान से घबरा कर चैतन्य बाबू ने अपनी डायरी पर रिश्वत के रूप में एक हजार रुपए का आँकड़ा लिखकर उसे दिखाया। इस आँकड़े को देखकर आजिम अली के चेहरे पर प्रसन्नता दिखाई दी और उसने अपना हाथ नीचा करके चैतन्य बाबू को धैर्य रखने का इशारा किया। चीफ जस्टिस महोदय ने आजिम अली से प्रश्न किया 'मुहर छाप देने के बाद फिर क्या हुआ?'' आजिम अली ने बयान जारी रखते हुए कहा ''हुजूर, इसके बाद मेरे घर के मुरगे ने बाँग दी और मेरी नींद खुल गई। मेरी छोटी पत्नी ने भी आवाज देकर कहा कि मियाँ, क्या आज बिस्तर छोड़ने का इरादा नहीं है।'' यह बयान सुनकर दुभाषिए एक मि. इलियट के चेहरे का रंग बदल गया और उनके चेहरे पर परेशानी के भाव नजर आए। इंपे साहब बयान का मतलब नहीं समझ सके और उन्होंने आजिम अली को बयान जारी रखने का फिर हुक्म दिया।

आजिम अली ने फिर कहना प्रारम्भ किया ''हुजूर, इसके बाद मैंने अपनी छोटी पत्नी से कहा कि मैंने स्वप्न में देखा है कि मैं महाराज नन्दकुमार के मकान पर गया हूँ और वे बुलाकीदास के नाम से एक दस्तावेज बना रहे हैं।'' जब दुभाषिए मि. इलियट ने आजिम अली के बयान को इंपे साहब और ज्यूरी के सदस्यों को समझाया, तो सभी के चेहरे फीके हो गए। आजिम अली ने जज महोदय के आदेश की प्रतीक्षा न करते हुए स्वयं ही अपना बयान जारी रखते हुए कहा – 'धर्मावतार, मेरी बात सुनकर मेरी छोटी पत्नी ने कहा कि तुम हमेशा राजा-महाराजाओं के पास जाते-आते रहते हो, इसलिये तुमको उनके ही स्वप्न दिखते हैं।'

आजिम अली का बयान सुनकर ज्यूरी के सभी सदस्यों ने दुभाषिए से कहा कि गवाह से यह पूछो कि इसने हमारे सामने अभी जो कुछ कहा है, क्या ये सब स्वप्न की ही बातें हैं? दुभाषिए मि. इलियट ने जब आजिम अली से इस विषय में प्रश्न किया तो उसका उत्तर था – 'हुजूर, स्वप्न में मैंने जो कुछ देखा, वही सच-सच बयान किया है। तीन-

चार दिन की बात है, इस स्वप्न की बात मैंने मोहनप्रसाद बाबू से कही थी। उन्होंने चट कहा कि तुम्हें गवाही भी देनी पड़ेगी। मैंने उनसे कहा कि जो कुछ मैंने देखा है, वह कह देने में क्या हर्जा है!''

महाराज नन्दकुमार के बैरिस्टर फरार साहब ने आजिम अली के बयान पर मुकदमा खारिज करने और महाराज को निर्दोष करार देने की पुरजोर अपील की, लेकिन उनकी एक नहीं सुनी गई। चीफ जस्टिस मि. इंपे का तर्क था – ''इस गरम मुल्क में पूरी नींद शायद ही किसी को आती हो प्रायः लोग अर्द्ध-जाग्रत अवस्था में सोते हैं। ऐसी दशा में यदि कोई मनुष्य आँख-कान आदि इंद्रियों द्वारा कोई विषय ग्रहण करे, तो उसके कथन को साक्षी रूप से ग्रहण किए जाने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।'' चीफ जस्टिस महोदय के इस कथन ने ज्यूरी के सदस्यों को प्रभावित किया। वे दूसरे कमरे में गए। आधा घंटा पश्चात् लौटकर उन्होंने कहा ''महाराज नन्दकुमार अपराधी हैं।''

यह सुनते ही महामति इंपे साहब ने महाराज नन्दकुमार को फाँसी का दंड सुना दिया। इसके पश्चात महाराज को फिर जेल भेज दिया गया। उन्होंने जनरल क्लीवरिंग के पास इस आशय का पत्र भेजा कि इंग्लैड के सम्राट के पास भेजी गई उनकी याचिका के उत्तर आने तक उनकी फाँसी स्थगित रखी जाए। उनकी इस प्रार्थना को नहीं माना गया।

५ अगस्त, सन् १७७५ को जनता-जनार्दन की उपस्थिति में महाराज नन्दकुमार को फाँसी दे दी गई। फाँसी के समय महाराज पूर्ण आत्मविश्वास की मुद्रा में थे और वे बिल्कुल भी उद्विग्न नहीं हुए। ज्यों ही उनके गले में फाँसी का फंदा डालकर तख्ता खींचा गया, त्यों ही लोग चीखें मार-मारकर भागने लगे। वे भागते जाते थे और कहते जाते थे – ''बह्महत्या होइलो ! कलिकाता अपवित्र होइलो ! देश पापे परिपूर्ण होइलो ! फिरिंगेर धर्माधर्म ज्ञान नाई।''– ब्रह्म हत्या हुई, कोलकाता अपवित्र हुआ, देश पापमय हुआ, अंग्रेजों को धर्म-अधर्म का बोध नहीं हैं – महाराज नन्दकुमार को फाँसी-दंड दिए जाने पर भारत और इंग्लैंड में जोरदार प्रतिक्रियाएँ हुईं।

प्रसिद्ध इतिहास लेखक मार्शमैने ने लिखा – 'महाराज को फाँसी की आज्ञा, इंग्लैंड के उस समय के जघन्य कानून के अनुसार होने पर भी, सब प्रसार से न्याय के विरुद्ध थी। जिस कानून के अनुसार फाँसी दी गई थी, वह इस घटना के कितने ही वर्षों बाद प्रचलित किया गया था।' लॉर्ड मैकाले की प्रतिक्रिया थी – 'कोई भी विचारवान् मनुष्य इस बात में संदेह नहीं कर सकता कि इंपे साहब ने यह नीच कृत्य गवर्नर जनरल को खुश करने के लिये ही किया था।'

राजा महेन्द्रप्रताप

प्रथम विश्वयुद्ध के दिनों में भारत की आजादी के इस स्वप्नद्रष्टा का नाम राजा महेन्द्रप्रताप था। राजा महेन्द्रप्रताप वृन्दावन के राजा थे। युद्ध की स्थिति का भारत के पक्ष में पूरा लाभ उठाने के लिए उन्होंने एक दिन भी व्यर्थ खोना उचित नहीं समझा। अपनी निजी सम्पत्ति में से जो कुछ वे बेच सकते थे, वह बेचकर थोड़ा धन जमा किया और बम्बई पहुँचकर जहाज द्वारा यूरोप के लिए प्रस्थान कर दिया। वे फ्रांस और स्विटजरलैंड होते हुए फरवरी, १९१५ में जर्मनी पहुँच गए।

राजा महेन्द्रप्रताप यह समझते थे कि जर्मनी की सीधी सहायता से भारत को अधिक लाभ होने वाला नहीं है, क्योंकि जर्मनी जो भी सहायता देगा, उसके बदले में भारत से कुछ हिस्सा भी माँगेगा। राजा महेन्द्रप्रताप ने जर्मनी के सम्राट कैसर के सामने यह प्रस्ताव रखा कि जर्मनी अफगानिस्तान के ऊपर अपने प्रभाव का उपयोग करके उसे राजी करे कि वहाँ आजाद हिन्द सरकार की स्थापना की जाए, जो भारत की आजादी के लिए सक्रिय कार्य करे। भारत और अफगानिस्तान की सीमाएँ मिली होने के कारण अफगानिस्तान का उपयोग भारत में छलाँग लगाने के लिए किया जा सकता था। कैसर राजा महेन्द्रप्रताप के इस प्रस्ताव से पूर्ण रूप से सहमत हो गया और परिणामस्वरूप अफगानिस्तान के अमीर के पास भेजे जाने के लिए एक 'इंडो-जर्मन मिशन' का निर्माण हुआ, जिसमें भारतीयों के अतिरिक्त जर्मन सदस्य भी थे। कैसर ने राजा महेन्द प्रताप को अफगानिस्तान के अमीर के नाम पत्र

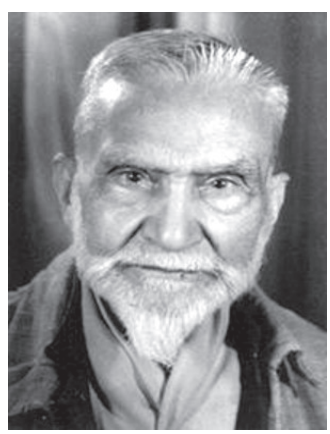

राजा महेन्द्रप्रताप

तथा कुछ नक्शे आदि दिए। खर्च के लिए काफी धनराशि भी राजा महेन्द्रप्रताप को दी गई। इंडो-जर्मन मिशन में सदस्यों की संख्या काफी हो गई थी, इसलिए राजा महेन्द्रप्रताप ने अलग-अलग समूहों को भिन्न-भिन्न मार्गों से अफगानिस्तान पहुँचने के लिए प्रेरित किया।

राजा महेन्द्रप्रताप ने दूसरी दूरदर्शिता यह की थी कि जो पत्र और नक्शे आदि उनको दिए गए थे, उनकी फोटोकॉपियाँ भी उन्होंने करा ली थीं। कैसर ने कुछ भारतीय नरेशों के नाम से भी पत्र दिए थे। तुर्की में राजा महेन्द्र प्रताप का अच्छा आदर-सत्कार हुआ और कुस्तुनतुनिया में उन्होंने वहाँ के सभी बड़े-बड़े राजनीतिक एवं धार्मिक नेताओं से भेंट की। सबने उन्हें भारत की आजादी के अभियान में सहयोग देने का वचन दिया।

सितम्बर, १९१५ के प्रारम्भ में ही राजा महेन्द्रप्रताप अफगान सीमा में प्रविष्ट हो गए। ६ सितम्बर को पराह के अफगानों ने उनका भव्य स्वागत किया। हिरात के गवर्नर की ओर से भी उनका स्वागत किया गया। अन्ततोगत्वा अफगानिस्तान की राजधानी काबुल पहुँचकर उन्होंने वहाँ के अमीर हबीबुल्ला खाँ से भेंट की और अपनी सारी योजना उसके सामने रखी। वह अफगानिस्तान में 'अस्थायी आजाद हिन्द सरकार' की स्थापना के लिये सहमत हो गया।

भारत की पहली स्वाधीन सरकार की स्थापना अफगानिस्तान में २९ अक्तूबर, १९१५ को हुई। इस अस्थायी आजाद हिन्द सरकार के प्रथम राष्ट्रपति राजा महेन्द्रप्रताप और प्रथम प्रधानमंत्री मौलाना मोहम्मद बरकतुल्ला थे। मौलाना ओबीदुल्ला सिंधी को गृहमन्त्री बनाया गया। विदेशमंत्री बनाए गए डॉ. चंपक रमन पिल्लई। प्रथम 'आजाद हिन्द फौज' का भी गठन किया, जिसकी संख्या लगभग छह हजार तक पहुँच गई थी।

अमीर हबीबुल्ला खाँ दोहरी चाल चल रहा था। इधर तो उसने आजाद हिंद सरकार की स्थापना करा दी थी और उधर अंग्रेजों से मिला हुआ था। वह राजा महेंद्रप्रताप एवं उनकी सरकार की गतिविधियों की सूचनाएँ अंग्रेजों के पास भेजता रहता था। हबीबुल्ला खाँ का पुत्र राजकुमार अमानुल्ला खाँ भारतीय क्रान्तिकारियों का अच्छा मित्र था। अफगानिस्तान स्थित 'अस्थायी आजाद हिंद सरकार' एक ओर तुर्की से भारत की आजादी का प्रयास करती रही और दूसरी ओर वह रूस से भी सम्बन्ध जोड़ने का प्रयत्न की।

जार के नाम भेजा गया पत्र सोने की ठोस चादर के ऊपर अंकित था। उनके द्वारा बनाई गई आजाद हिंद फौज ने कबाइली क्षेत्र में प्रवेश कर भारत के अंग्रेजी प्रशासन पर आक्रमण कर दिया, पर उसके सौभाग्य से उसी समय यूरोप के मोर्चे पर जर्मनी की पराजय होने लगी। इसका परिणाम यह हुआ कि अंग्रेजों के हौसले बढ़ गए और अपने मित्र देश जर्मनी की पराजय के कारण अस्थायी आजाद हिन्द सरकार के हाथ विफलता ही लगी।

सन् १९१९ में अफगानिस्तान में सत्ता परिवर्तन हुआ। वहाँ के अमीर हबीबुल्ला खाँ की हत्या कर दी गई और उसका पुत्र अमानुल्ला खाँ अफगानिस्तान का अमीर बना। अमानुल्ला खाँ राजा महेंद्रप्रताप का मित्र था। उसके अमीर बनते ही राजा महेंद्रप्रताप फिर अफगानिस्तान पहुँच गए। वहाँ उन्हें नागरिक अधिकार प्रदान किए गए। जो बात अमीर हबीबुल्ला खाँ के शासनकाल में सम्भव नहीं हो सकती थी, वह अमानुल्ला खाँ के शासनकाल में सम्भव हो गई। राजा महेंद्रप्रताप और तुर्क नेताओं की प्रेरणा से अफगान सेना ने भारत पर आक्रमण कर दिया। अफगान सेनाओं का नेतृत्व जनरल नादिर खाँ कर रहे थे। अंग्रेजों ने इस समय कूटनीति से काम लिया। उन्होंने युद्ध करने के बजाय अफगानिस्तान के साथ सन्धि कर ली। आक्रमण २९ मई, १९१९ को किया गया और ८ अगस्त, १९१९ को सन्धि हो गई। राजा महेन्द्रप्रताप का यह प्रयत्न भी निष्फल हो गया। अब राजा महेन्द्रप्रताप ने अफगानिस्तान छोड़ दिया और वे हिंदचीन होते हुए चीन पहुँच गए। वे 'प्रेम-धर्म' का तो प्रचार कर ही रहे थे, 'विश्व संगठन' की कल्पना भी उनके मस्तिष्क में थी।

सन् १९२५ में जापान के कोब नामक स्थान पर भारत के क्रान्तिकारी आनन्दमोहन सहाय से उन्होंने भारत की आजादी की समस्याओं पर गहरा विचार-विमर्श किया। जापान के नागासाकी नगर में सन् १९२६ में 'एशियाई युवक अधिवेशन' का आयोजन किया गया। इस अधिवेशन में भारत के श्री के.आर. सब्बरवाल और विद्याधर बख्शी भी सम्मिलित हुए। राजा महेंद्रप्रताप उस समय मंचूरिया में थे। अधिवेशन का निमन्त्रण पाकर वे भी एक जहाज द्वारा नागासाकी के लिए चल पड़े। राजा महेन्द्रप्रताप को जब नागासाकी में नहीं उतरने दिया गया, तो वे उसी जहाज से

शेष भाग पृष्ठ ३६६ पर

अपने पुत्र की बलि देनेवाले शिवभक्त : सिरुतोंडर नयनार

श्रीधर कृष्ण, चेन्नई

ईआरपी कंसल्टेंट, चेन्नई, तमिलनाडु

तत्कालीन पल्लव साम्राज्य और तिरुचेंकट्टांगुडी (वर्तमान में तमिलनाडु) में परंजोति नामक एक शिव भक्त रहते थे। उनका जन्म एक सैनिक परिवार में हुआ था। वे स्वयं पल्लव राजा नरसिंह वर्मन-१ के सेनाध्यक्ष थे। उन्होंने अनुभव किया कि भगवान शिव के चरणों की भक्ति ही संसार (जन्म-मृत्य के चक्र) से मुक्ति पाने का साधन है और इस पथ पर चलते हुए उन्होंने मुक्ति प्राप्त की।

एक बार अपने राजा के कहने पर परंजोति ने बादामी के चालुक्य शासक पुलकेशिन-२ के साथ युद्ध किया। वे युद्ध में चालुक्य राजा को परास्त करके उस राज्य की बहुत सारी धन-सम्पत्ति लेकर लौटे। बादामी के किले की दीवार पर भगवान गणपति की एक मूर्ति थी, जिसे वे अपने साथ ले आये। तिरुचेंकट्टांगुडी के उत्तिरपशुपतीश्वर स्वामी नामक एक भक्त ने भगवान शिव के मन्दिर-परिसर में उस गणपति की मूर्ति के लिए एक मन्दिर का निर्माण किया। (श्री मुथुस्वामी दीक्षितर की एक प्रसिद्ध कर्नाटक रचना जिसका नाम 'वातापी गणपतिम भजेहम' है, इसी गणपति की स्तुति में लिखी गई है।)

युद्ध में विजय हुई यह सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुए। राजा को सूचित करते हुए मन्त्री ने कहा कि परंजोति भगवान शिव के एक अनन्य भक्त हैं। उनकी उत्कट भक्ति के कारण ही हमलोग विजय प्राप्त करने में सक्षम हुए।

राजा नरसिंह वर्मन स्वयं एक शिव भक्त थे। परंजोति भी भगवान शिव के परम भक्त हैं, यह सुनकर उनको बहुत आश्चर्य हुआ तथा इसके साथ-ही-साथ उनको बहुत दुख भी हुआ कि एक अन्य शिव भक्त को युद्ध में भेजकर उन्हें रक्तपात हेतु विवश किया।

इसीलिए राजा ने परंजोति को बुलावा भेजा। उन्हें युद्ध में भेजने के लिए क्षमा माँगी और बहुत-सा उपहार देकर उन्हें अपने गाँव वापस भेज दिया। राजा ने उनसे अनुरोध किया कि उन्हें अब अपना पूरा समय शिव पूजा में ही व्यतीत करना चाहिए। परंजोति अपने गाँव वापस लौट आए और उसी समय से वे भगवान शिव की पूजा और शिव-भक्तों की सेवा में लग गये। उनका नियम था कि वे किसी शिव भक्त को भोजन कराए बिना भोजन नहीं करते थे। वे स्वयं को भगवान शिव तथा अन्य शिव भक्तों का एक छोटा-सा सेवक मानते थे। इसीलिए उनका नाम सिरुतोंडर पड़ा। (तमिल भाषा में सिरुतोंडर का अर्थ छोटा नौकर होता है।)

भगवान शिव इस महान संत की महिमा को सबके सामने प्रकट करना चाहते थे। इसीलिए एक दिन भगवान शिव एक 'वैरावर' (शिव योगियों का एक विशेष वर्ग) के रूप में सिरुतोंडर के घर के सामने आये।

भगवान ने सिरुतोंडर की दासी संदाना नंगैयार से पूछा ''क्या तुम्हारा मालिक घर पर है?

दासी ने उत्तर दिया, ''नहीं, वह एक शिव भक्त को खोजने गये हैं। शिव भक्त को खिलाए बिना मेरे मालिक सिरुतोंडर स्वयं भोजन नहीं करते हैं।''

दासी ने सोचा कि एक शिव भक्त आ गये हैं, उनको बैठाने पर सिरुतोंडर आकर इन्हें भोजन करायेंगे। इसीलिए दासी ने वैरावर को घर के अन्दर आकर बैठने के लिए कहा। क्योंकि उसे भय हुआ कि कहीं यह वैरावर चले न जायें। वैरावर ने उत्तर दिया, ''मैं उस घर में प्रवेश नहीं करूँगा, जिसमें महिला अकेली हो।''

सिरुतोंडर की पत्नी तिरुवेंगट्टू नंगैयार वैरावर के इन शब्दों को सुनकर जल्दी से बाहर आ गई और वैरावर से पति के वापस घर आने तक प्रतीक्षा करने की प्रार्थना की।

वैरावर ने पुन: कहा, ''जब वह वापस आए, तो उससे

कहना कि मैं मन्दिर के पास पेड़ के नीचे बैठा हूँ।'' यह कहकर वैरावर चले गए।

इस घटना के तुरन्त बाद सिरुतोंडर वापस आये। उनकी पत्नी ने उनकी अनुपस्थिति में घटित घटना को बताया। यह सुनकर सिरुतोंडर बहुत खुश हुए क्योंकि उस दिन खोजने पर उन्हें कोई शिव भक्त नहीं मिला था।

अविलम्ब सिरुतोंडर दौड़ते हुए मन्दिर गये। वैरावर के चरणों में गिरकर उन्हें अपने घर में भिक्षा के लिए आमन्त्रित किया।

वैरावर ने नैराश्य के साथ कहा, ''मुझे संदेह है कि तुम मेरी भिक्षा के कठोर शर्तों को पूरा कर पाओगे। इसीलिए तुम मुझे अकेला छोड़ दो।''

सिरुतोंडर को बहुत दुख हुआ। उन्होंने सोचा कि भगवान ने इस वैरावर को विशेष रूप से भेजा, ताकि वह अपनी प्रतिदिन की नियमावली का पालन करके कम-से-कम एक शिव भक्त को खिला सके। सिरुतोंडर ने वैरावर से कहा कि वे उनकी कोई भी कठिन-से-कठिन शर्त पूरी करने के लिए तैयार हैं। वे केवल भिक्षा के लिए सहमत हो जाये।

वैरावर ने तब अपनी शर्त बतायी ''हे भक्त ! छह महीने में एक बार एक पशु का ताजा मांस खाने की मेरी आदत है। वह समय अब आ गया है। मुझे संदेह है कि तुम मुझे संतुष्ट कर पाओगे।''

तमिल भाषा में पशु के दो अर्थ होते हैं, एक मनुष्य और दूसरा जानवर। सिरुतोंडर ने सोचा कि वैरावर का मतलब केवल जानवरों के मांस से है और वह तुरन्त सहमत हो गये। लेकिन सिरुतोंडर को तब आश्चर्य हुआ, जब वैरावर ने पशु का अर्थ मानव मांस कहा।

उन्होंने यह भी कहा, ''अरे भक्त ! वह मानव मांस एक बच्चे का होना चाहिए और इसके साथ-ही-साथ उस बच्चे की उम्र पाँच वर्ष से कम हो, वह स्वस्थ हो तथा वह अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र हो। उस बच्चे को उसकी माँ पकड़ी हुई हो और उसका पिता उस बच्चे को काटकर उसके टुकड़े-टुकड़े कर दे तथा वह मांस अच्छी तरह पकाकर मुझे दे, तब मैं प्रसाद ग्रहण करूँगा।'' बिना किसी हिचकिचाहट के सिरुतोंडर ने शर्त को स्वीकार कर लिया और वैरावर को घर ले आये।

''वैरावर के इच्छानुसार उस तरह के बच्चे को कहाँ ढूँढ़ा जाये?'' सिरुतोंडर सोचने लगे। सहसा उनको अपने पुत्र का स्मरण हुआ, जो वैरावर के शर्तानुसार पूरी तरह से उपयुक्त था। उनकी पत्नी तिरुवेंगट्टू नंगैयार भी इस बात से सहमत हो गई। तिरुवेंगट्टू ने सिरुतोंडर को अपने पुत्र को विद्यालय से लाने के लिए कहा। विद्यालय से आते ही पुत्र को उसकी माँ ने गोद में उठा लिया। माँ की गोद में मासूम बच्चा हँस रहा था, तभी सिरुतोंडर ने एक झटके से उसका गला काट दिया।

आमतौर पर सिर पकाने और भगवान को चढ़ाने के लिए उपयुक्त नहीं होता। इसीलिए उन्होंने उसे दासी को दे दिया और शेष मांस पकाने लगे। अतिथि वैरावर की पूजा करने के बाद सिरुतोंडर पकाये हुए मांस को परोसने की तैयारी कर रहे थे। वैरावर ने मांस पकाने की विधि का पता लगाया और सिरुतोंडर ने सब कुछ बता दिया। (केवल इस एक बात को छोड़कर कि यह उनके अपने पुत्र का मांस है।)

वैरावर ने कहा कि वह सिर भी खायेंगे। दासी ने इसका पूर्वानुमान लगाकर सिर को पकाकर तैयार रखा था।

सिरुतोंडर ने वैरावर से भोजन करने का अनुरोध किया। वैरावर यह चाहते थे कि उनके साथ एक और शिव भक्त

भोजन करे। स्वयं सिरुतोंडर के अलावा वहाँ और कोई नहीं था। वैरावर को खुश करने के लिए अपने पुत्र का ही मांस खाने वे उनके साथ बैठ गये।

वैरावर अभी भी प्रसाद नहीं खा रहे थे। उन्होंने एक और शर्त सामने रखी। वैरावर ने कहा कि जब तक यजमान का पुत्र उनके साथ नहीं भोजन नहीं करता, तब तक वे प्रसाद

शेष भाग पृष्ठ ३८३ पर

यह मेरी पवित्र मातृभूमि है

स्वामी गुणदानन्द, रामकृष्ण मठ, नागपुर

एक बार की बात है सन् १७९२ ई. में ईस्ट-इंडिया कम्पनी भारत में राजाओं से कर भुगतान के द्वारा अपना वर्चस्व बढ़ाना चाह रही थी। कम्पनी राजाओं पर अत्यधिक दबाव और अत्याचारों से धन की वसूली करने लगी। कई राजाओं ने इस प्रकार की प्रताड़नाओं से कम्पनी के सामने घुटने टेक दिये। परन्तु एक साहसिक और निडर राजा ने कम्पनी के दबाव में न आकर निर्भीकता से उत्तर दिया, 'हम दूसरे राजाओं से वार्षिक कर वसूल करते हैं। ईस्ट-इंडिया कम्पनी को हम कर क्यों अदा करें? उत्तर देने वाले यह निर्भीक पुरुष थे, कट्टबोम्मन वीरपांड्य !

कट्टबोम्मु का जन्म ३ जनवरी, १७६० में हुआ। वे तमिलनाडु के रामनाथपुरम् जिले के पांचलमकुरुच्चि नगर में रहते थे, कट्टबोम्मु के पिता का नाम जगवीर कट्टबोम्मन और माता का नाम आरमुगत्तम्मल था। उनके दो भाई थे, कुमारस्वामी तथा दोरे सिंह। कुमारस्वामी गूंगे तथा बहरे थे। वे उमैदोरे के नाम से जाने जाते थे।

वीरपांड्य बचपन से साहसी और निडर थे। वे राजा जगवीर की सेना के सेनापति थे। राजा को उन पर अटूट विश्वास था और अन्त समय में उन्होंने राज्य सम्भालने का उत्तरदायित्व बोम्मु को सौंप दिया।

मैक्सवेल नामक एक अंग्रेज अधिकारी पांचलमकुरुच्चि में कार्यरत था। इस अधिकारी ने एट्टयापुरम् के राजा एट्टप्पा को बोम्मु से कर वसूलने का अधिकार दे दिया। मैक्सवेल ने बोम्मु के लिए एक पत्र में लिखा कि कर का भुगतान करें या आक्रमण के लिए तैयार रहे। ६ वर्ष तक वे कर वसूली के लिए बोम्मु से जूझते रहे, परन्तु उसे झुका नहीं सके। बोम्मु कहता कि अंग्रेज लोग व्यापार के द्वारा हमारे देश को लूट रहे हैं। क्या इन व्यापारियों के हम दास बनें? यह कभी नहीं होगा।'

एलन नाम के एक अन्य अधिकारी को बोम्मु से कर वसूली के लिए नियुक्त किया गया। उस अधिकारी ने बोम्मु से कहा कि यदि तुम कर का भुगतान नहीं करोगे, तो दूसरे राजा भी कर देना स्वीकार नहीं करेंगे। बोम्मु ने कहा, 'यदि अन्य राजा कायर बन गये हैं, तुम्हें ऐसा लगता है कि मैं झुक जाऊँगा?'

अंग्रेज सरकार ने बोम्मु के विरुद्ध षड्यंत्र की योजना बनाने के लिए जैकसन की नियुक्ति की। जैकसन ने बोम्मु को अकेले ही मिलने के लिए कहा था। परन्तु उसने बोम्मु को धोखा दिया और स्वयं उस स्थान में न आकर रामलिंगविलास के प्रासाद में नशे में धूत होकर पड़ा था। बोम्मु जैकसन के सामने गया, उसे देखकर उसका नशा टूट गया। बोम्मु ने खूब डाँटते हुए कहा, 'तुमने मुझे यहाँ क्यों बुलाया है?' जैकसन ने कहा, कर वसूली के लिए।

बोम्मु ने कहा, 'नीच ! मैं कर चुकाऊँगा? यह क्या कह रहे हो? ध्यान से सुनो, यह मेरी पवित्र मातृभूमि है। इसका कण-कण मेरा है, तुम्हारा इस पर कोई अधिकार नहीं है। तुरन्त यहाँ से निकल जाओ।' बोम्मु ने कहा, यदि रुपये चाहिए, तो भीख माँग लो। धर्म के नाम पर तुम्हें दे दूँगा। जैकसन ने सेक्रेटरी क्लार्क से बोम्मु को बन्दी बनाने को कहा। बोम्मु ने सैनिकों पर तलवार से आक्रमण किया। क्लार्क का धड़ कटकर जमीन पर गिर गया। बोम्मु वहाँ से सुरक्षित पांचलमकुरुच्चि लौट आये। इस प्रकार जैकसन का षड्यंत्र विफल रहा।

केवल पांचलमकुरुच्चि ही स्वतन्त्र राज्य था। अंग्रेजों ने पांचलमकुरुच्चि पर आक्रमण किया। पुदुकोट्टे के राजा

शेष भाग पृष्ठ ३५४ पर

आध्यात्मिक जिज्ञासा (८०)

स्वामी भूतेशानन्द

प्रश्न – मुम्बई से यातायात करने में सुविधा होती थी क्या?

महाराज – मुम्बई से यातायात के सम्बन्ध में सुविधा-असुविधा की कोई बात नहीं थी। मुम्बई तो हमलोगों को जाना ही पड़ता था। वह तो हमलोग का द्वार है। इसीलिए वहाँ तो जाना ही पड़ेगा।

– उस समय रेलगाड़ी से ही यातायात करते थे या हवाई जहाज से भी किए हैं?

महाराज – उस समय हवाई जहाज हमलोगों की क्षमता के बाहर था। रेलगाड़ी से ही और वह भी रेलगाड़ी की तृतीय श्रेणी में। उस समय प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी, इन्टर क्लास और तृतीय श्रेणी, ये ही चार श्रेणियाँ थीं। उनमें सबसे निम्न श्रेणी में हमलोग यात्रा करते थे।

– कोई कभी टिकट कटाकर नहीं देता था। इतने सब सेठ थे?

महाराज – सेठ क्या हमको अपने समकक्ष मानते थे? वे सेठ हैं और हमलोग भिखारी हैं।

– एक बार तो प्लेन में गये थे।

महाराज – एक बार क्यों, दो बार गया हूँ और एक बार हवाई जहाज में आया हूँ। शरीर अस्वस्थ था। आवश्यक काम था, इसलिए अस्वस्थ शरीर में ही हवाई जहाज से आया था।

– मठ में आये थे?

महाराज – हाँ।

– एक बार आप अस्वस्थ थे, तब क्या ऑपरेशन हुआ था?

महाराज – हाँ, दो मास था लगता है। नहीं, एक मास था। नहीं, दो मास था।

– क्या ऑपरेशन हुआ था महाराज?

महाराज – गल-ब्लाडर ऑपरेशन।

– महाराज ! चन्दा-संग्रह करने की कोई घटना बताइये।

महाराज – चन्दा माँगते समय कई प्रकार का कष्ट भोगा हूँ।

– यह क्या महाराज? किसको साथ में ले गये थे?

महाराज – एक सेठ थे। जहाँ जाता, वही साथ में जाते। उनको देखकर लोग कहते – आप आये हैं। इसीलिए तो कुछ-न-कुछ देना ही पड़ेगा। स्वामीजी के आने से एक पैसा भी नहीं दिया जाता। एक दूसरी जगह गया। वहाँ का सेठ कह रहा है – स्वामीजी को तो आप जानते हैं। स्वामीजी छात्रावास में अछूत को भी रखते हैं। जो सेठ हमको लेकर गये थे, उन्होंने घबड़ाकर कहा – हाँ, स्वामीजी? मैंने कहा – हाँ, अवश्य रखेंगे। यदि कोई अछूत आये, तो अवश्य रखूँगा। यद्यपि दुर्भाग्य से अभी कोई नहीं है। किन्तु आने पर मैं अवश्य रखूँगा।

– तब, क्या उन सेठ ने चन्दा दिया?

महाराज – नहीं।

– अछूत किसे कहते थे?

महाराज – हमलोगों के यहाँ जो हाँडी, मोची आदि जैसे हैं। एक मेहतर था। मेहतर का बच्चा था। दूसरे जो अस्पृश्य थे, वे कहते थे, तुमलोगों ने क्या किया है! मेहतर के लड़के को रखे हो? (हँसी) मेहतर और उसके लिए भी अस्पृश्य !

प्रश्न – महाराज आपने जामनगर के महाराज की बात एक दिन बताई थी। अन्य कुछ याद आ रहा है क्या?

महाराज – हाँ, उनके यहाँ गया हूँ। एक बार एक कार्यक्रम में जामनगर के महाराज को देखा। उनकी पत्नी महारानी भी थीं, उनका नाम गुलाबकुँअर बा था। शरीर का रंग गुलाबी जैसा था। मैंने कहा – अरे बाबा। ये तो सार्थक नाम है। उसके बाद दूसरी बार उनको उनके राजभवन में देखा। सजी हुई नहीं थीं। रंग-टंग नहीं था। ये तो सेविका जैसी थीं !

प्रश्न – उस समय जूनागढ़ के दीवान के साथ भेंट हुई थी क्या?

महाराज – नहीं, जूनागढ़ के दीवान के साथ नहीं मिल सका। अन्त में जूनागढ़ के दीवान नवाब को तथा जितना रुपया-पैसा था, सब लेकर पाकिस्तान चले गये।

– उस समय पाकिस्तान के शासक कौन थे?

– भुट्टो, जुल्फीकार अली भुट्टो।

– हरिदास बिहारीदास देसाई, तो जूनागढ़ के दीवान थे।

महाराज – हाँ, किन्तु मैं जिस स्थान पर था, उसी स्थान पर देखा था। स्वामीजी के समय का भवन तो अब नहीं है। दूसरा भवन वहाँ बना है।

– जूनागढ़ के दीवान का सब पुराना कागज-पत्र उनके नाती या लड़के के पास से लाया गया है?

महाराज – दीवान तो वास्तव में जूनागढ़ के नहीं हैं। जूनागढ़ में नौकरी करते थे। वहाँ के महाराजा सरल थे। महाराजा होने पर भी महाराजा जैसा स्वभाव नहीं था। बाद में एक बार भेंट होने पर उन्होंने मुझसे कहा था – इसके बाद अब आइयेगा, तो अतिथि होकर मेरे राजभवन में रहियेगा।

– क्या वहाँ जाना हुआ था, महाराज?

महाराज – नहीं, उसके बाद तो उनका स्वर्गवास हो गया। एक बार मैं महाराजा की गाड़ी से जा रहा हूँ, देख रहा हूँ कि रास्ते के दोनों ओर लोग प्रणाम कर रहे हैं। सोचा, अचानक इतनी भक्ति हो गयी ! पहले तो दिग्भ्रमित होकर चारों ओर भ्रमण किया हूँ। उस समय तो कोई पूछा ही नहीं। अभी मेरा इतना सम्मान कर रहे हैं ! बाद में समझा, प्रणाम मुझे नहीं, गाड़ी को कर रहे हैं। (हँसी)

एक बार असम के तेजपुर में गया हूँ। भिखारी के समान कहीं कोई नहीं पूछता था। उसके बाद एक दिन सीविल सर्जन का अतिथि होकर उनकी गाड़ी से जा रहा हूँ। सभी देख रहे हैं और कह रहे हैं, सिविल सर्जन के गुरु जा रहे हैं। रुपया-संग्रह हेतु गया था। किन्तु इतना सम्मान हुआ। तब मैं रुपया कैसे माँगूँ? मेरा स्टेटस, मान-सम्मान इतना बढ़ गया। सिविल सर्जन का अतिथि हूँ। तब क्या लोगों से कुछ माँग सकता हूँ? जब तक नहीं माँगते हैं, तब तक सम्मान मिलता है।

प्रश्न – शास्त्र में कहा गया है – 'ब्रह्म सत्यं, जगत् मिथ्या'। अच्छा महाराज, ब्रह्म क्या जगत-रूप में सत्य है?

महाराज – नहीं, ब्रह्म जगत-रूप में सत्य नहीं है?

– जगत ब्रह्म रूप में सत्य है, उसका क्या अर्थ है? क्या ब्रह्म ही जगत के रूप में व्यक्त है?

महाराज – ठीक, यही वास्तविक बात है।

– तब जगत रूप में अलग कुछ नहीं है, यही तो सार बात है?

महाराज – हाँ। जगत ब्रह्म के अतिरिक्त और कुछ नहीं है, यही सत्य है। केवल जगत नहीं है, ऐसा कहने से वास्तविकता को स्पष्ट कहना नहीं हुआ। जगत जगत के रूप में नहीं, ब्रह्म के रूप में है। अनुभूति चाहिए। अनुभूति से भिन्न कभी विचार होता है क्या?

– अनुभूति के बिना तत्त्व का अनुसन्धान करना बड़ा कठिन है।

महाराज – तुमलोग तो कठिन को सरल करने के लिए जन्म लिये हो। **(क्रमशः)**

पृष्ठ ३५२ का शेष भाग

तोडैमान तथा उसके मित्र मुत्तुवैरव ने वीरपांड्य के साथ विश्वासघात किया। बैनरमैन नामक एक अंग्रेज अधिकारी को सूचना देकर उसे बन्दी बना लिया। बोम्मु ने बैनरमैन से कहा कि अन्य राजाओं ने विलासिता के लिए स्वयं को तुम्हारे अधीन कर दिया है। क्या तुम्हें लगता है, सभी ऐसे ही स्वाभिमानरहित है? आत्मसम्मान, पराक्रम और देशप्रेम मेरे जीवन के अभिन्न अंग हैं। मैं तुमसे कभी भी क्षमा नहीं माँगूँगा। बैनरमैन ने सोचा कि बोम्मु से बातचीत करना व्यर्थ है। उसने तुरन्त ही बोम्मु के लिए फाँसी की सजा सुनाई। १६ अक्तूबर, १७९९ में कायात्तारू में फाँसी देने के लिए आगे आये अंग्रेज सैनिक को बोम्मु ने वापस भेजा दिया। बोम्मु ने स्वयं को इमली के वृक्ष की शाखा में फाँसी के फंदे पर लटकाया।

अद्भुत पराक्रम, स्वाभिमान, वीरता तथा देशभक्ति का अनूठा परिचय देते हुए वीरपांड्य कट्टबोम्मन ने मातृभूमि के लिए अपना जीवन न्योछावर कर दिया। वे किसी के सामने झुके नहीं। तमिलनाडु की माताएँ आज भी अपने बच्चों को दुध में पांचलकुरूच्चि की मिट्टी मिलाकर पिलाती हैं, जिससे उनके पुत्र भी बोम्मु के समान पराक्रमी, वीर और महान् देशभक्त बनें। कट्टबोम्मन वीरपांड्य हम सब के लिए सदैव ही प्रेरणा के स्रोत हैं। ○○○

वीर सेनानियों की धरती : उत्तरप्रदेश

नम्रता वर्मा

छात्रा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, हिन्दी पत्रकारिता, वाराणसी

हमारा देश असंख्य बलिदानों के बाद स्वतन्त्र हुआ है। स्वतन्त्रता सेनानियों ने अपने हृदय-रक्त से भारत माता का अभिषेक किया और उन्हें परतन्त्रता की बेड़ियों से मुक्त किया। स्वातन्त्र्य समर के महायज्ञ में देश के प्रत्येक भाग से विभूतियों ने अपना योगदान दिया। भारत के सबसे बड़े राज्य उत्तरप्रदेश से स्वतन्त्रता की जो चिंगारी उपजी थी, कालान्तर में वही विराट ज्वाला सदृश हो गई। आइये ! उत्तरप्रदेश के ऐसे ही महनीय विभूतियों के कृतित्व का दर्शन करते हैं।

१८५७ की क्रान्ति के अग्रदूत : मंगल पाण्डे

उत्तरप्रदेश के बलिया जिले के नगवा गाँव में जन्मे मंगल पाण्डे ने ही स्वतन्त्रता आन्दोलन का बिगुल फूँका था। बाइस वर्ष की आयु में वे ब्रिटिश फौज में भर्ती हुए थे। अंग्रेज अधिकारियों द्वारा जब उन्हें चर्बी मिले कारतूस के प्रयोग का आदेश मिला, तो उन्होंने इसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया। यहीं से क्रान्ति की रूपरेखा तैयार हो गई। वास्तव में मंगल पाण्डे के हृदय में भारत को स्वतन्त्र करवाने की प्रबल इच्छा थी। कारतूस वाली घटना ने विद्रोह की आधारभूमि तैयार की। ब्रिटिश सैन्य अफसरों के दुर्व्यवहार और इसी तरह अन्य घटनाओं को लेकर मंगल पाण्डे के नेतृत्व में सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। उनकी गिरफ्तारी हुई और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध राजद्रोह के आरोप में उन्हें फाँसी की सजा सुनाई गई। उल्लेखनीय है कि ब्रिटिश सरकार मंगल पांडे को लेकर इतनी आशंकित थी कि उन्हें समय पूर्व ही फाँसी दे दी गई। मंगल पाण्डे के बलिदान की दृढ़ आधारशिला पर ही स्वतन्त्रता का विशाल दुर्ग निर्मित हुआ है।

मंगल पाण्डे

राष्ट्र की सुप्त प्राण चेतना को जगानेवाली : लक्ष्मी बाई

काशी में जन्मी रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों को स्पष्ट शब्दों में बता दिया था कि वह स्वराज्य से समझौता नहीं करेंगी। यह रानी लक्ष्मीबाई के कोरे वचन नहीं थे, बल्कि एक प्रतिज्ञा थी। अन्तिम साँस तक रानी ने अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध किया। घटनाक्रम देखें, तो ज्ञात होता है कि उस समय अंग्रेज, राजाओं के दत्तक पुत्रों की स्वीकृति नहीं दे रहे थे। ऐसे राज्य, जहाँ किसी राजा ने सन्तान गोद लेकर, उसे अपना उत्तराधिकारी घोषित किया है, वहाँ राजा की मृत्यु के बाद समस्त राज्य संचालन और प्रबन्धन अंग्रेजों के हाथों में आ जाता था। रानी लक्ष्मीबाई झाँसी की रानी थी। ब्रिटिश शासन ने झाँसी को ब्रिटिश साम्राज्य में विलय का आदेश दिया और रानी को पेंशन देने का आश्वासन दिया। रानी लक्ष्मीबाई इस अनुबन्ध के लिए किसी भी तरह से तैयार नहीं हुईं। उनकी एक ही प्रतिज्ञा थी – झाँसी की स्वतन्त्रता की रक्षा। रानी लक्ष्मीबाई ने सात दिन तक वीरतापूर्वक झाँसी की सुरक्षा की। अद्भुत वीरता का परिचय देते हुए रानी अकेले ही अपनी पीठ पर अपने पुत्र को बाँधकर अंग्रेजों से युद्ध करती रहीं और झाँसी की स्वतन्त्रता की रक्षा में अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दीं।

लक्ष्मी बाई

राष्ट्र के लिए सर्वस्व न्योछावर करने वाले बिस्मिल

उत्तरप्रदेश के शाहजहाँपुर में जन्मे रामप्रसाद बिस्मिल ने स्वतन्त्रता के महत् लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सर्वस्व

शेष भाग पृष्ठ ३७७ पर

प्रश्नोपनिषद् (२७)

श्रीशंकराचार्य

(सनातन वैदिक धर्म के ज्ञानकाण्ड को उपनिषद् कहते हैं। हजारों वर्ष पूर्व भारत में जीव-जगत् तथा उससे सम्बद्ध गम्भीर विषयों पर प्रश्न उठाकर उनकी जो मीमांसा की गयी थी, ये उन्हीं के संकलन हैं। वैदिक धर्म की पुन: स्थापना हेतु आचार्य ने इन पर सहज-सरस भाष्य लिखकर अपने सिद्धान्त को प्रतिपादित किया था। प्रश्नोपनिषद् पर लिखे उनके भाष्य का हिन्दी अनुवाद 'विवेक-ज्योति' के पूर्व-सम्पादक स्वामी विदेहात्मानन्द जी द्वारा किया गया है, जिसे 'विवेक-ज्योति' के पाठकों हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है। –सं.)

चतुर्थ प्रश्न – सुषुप्ति अवस्था

अथ हैनं सौर्यायणी गार्ग्यः पप्रच्छ। भगवन्नेतस्मिन्पुरुषे कानि स्वपन्ति कान्यस्मिञ्जाग्रति कतर एष देवः स्वप्नान्पश्यति कस्यैतत्सुखं भवति कस्मिन्नु सर्वे सम्प्रतिष्ठिता भवन्तीति।।१।। (४२)

अन्वयार्थ – अथ (पिछले प्रश्न के समाधान के बाद), गार्ग्यः (गर्गगोत्रीय) सौर्यायणी (सौर्यायणी ने) ह (प्रसिद्ध) एनम् (उन – महर्षि पिप्पलाद से) पप्रच्छ (पूछा) – भगवन् (महाराज), एतस्मिन् (इस) पुरुषे (देहधारी पुरुष में) कानि (कौन-कौन) स्वपन्ति (सोते हैं?), अस्मिन् (इसमें) कानि (कौन-कौन) जाग्रति (जागते हैं?) एषः (यह) देवः (देव) – कतर (देह तथा इन्द्रिय) – इन दोनों में कौन स्वप्नान् (सपनों को) पश्यति (देखता है?) कस्य (किसको) एतत् (यह) (सुषुप्ति का) सुखम् (सुख) भवति (होता है?) नु (निश्चित रूप से) कस्मिन् (किसमें) सर्वे (सब कुछ) सम्प्रतिष्ठिता (अवस्थित) भवन्ति (होता है?) इति।।१।।

भावार्थ – पिछले प्रश्न के समाधान के बाद गर्गगोत्रीय सौर्यायणी ने, प्रसिद्ध उन महर्षि पिप्पलाद से पूछा – महाराज, इस देहधारी पुरुष में कौन-कौन सोते हैं? इसमें कौन-कौन जागते हैं? (देह तथा इन्द्रिय) – इन दोनों में कौन वह देव है, जो सपनों को देखता है? किसको इस सुषुप्ति का सुख होता है? निश्चित रूप से किसमें सब कुछ अवस्थित होता है।।१।।

भाष्य – अथ हैनं सौर्यायणी गार्ग्यः पप्रच्छ। प्रश्न-त्रयेण अपर-विद्या-गोचरम् सर्वम् परिसमाप्य संसारम् व्याकृत-विषयम् साध्य-साधन-लक्षणम् अनित्यम्;

भाष्यार्थ – अब सूर्य के पौत्र तथा गर्ग के पुत्र – गार्ग्य ने (अगला) प्रश्न किया। (पिछले) तीन प्रश्नों के द्वारा – जो कुछ भी अपर (जागतिक) विद्या के गोचर, व्यक्त संसार के विषय, (स्वर्ग आदि) साध्य तथा (हवन आदि) साधन रूप और अनित्य हैं, उन्हें समाप्त कर लेने के बाद –

भाष्य – अथ इदानीम् असाध्य-साधन-लक्षणम् अप्राणम्-अमनो-गोचरम् अतीन्द्रिय-विषयम् शिवम् शान्तम् अविकृतम् अक्षरम् सत्यम् पराविद्या-गम्यम् पुरुष-आख्यम् स-बाह्य-अभ्यन्तरम् अजम् वक्तव्यम् इति उत्तरम् प्रश्न-त्रयम् आरभ्यते।

भाष्यार्थ – अब (जो आत्मा) असाध्य तथा असाधन रूप है, प्राण (जीवन) आदि से रहित तथा मन का अविषय है, इन्द्रियों के परे की वस्तु है, जो मंगलमय, शान्त, अविकारी, क्षरणरहित, (त्रिकालों में) सत्य, पुरुष नामवाला, बाहर-भीतर ओतप्रोत, अजन्मा और पराविद्या के द्वारा जानने-योग्य है; उसके विषय में बताना है, अतः अगले तीन प्रश्न आरम्भ किये जाते हैं।

भाष्य – तत्र सुदीप्ताद् इव अग्नेः यस्मात् परात् अक्षरात् सर्वे भावाः विस्फुलिङ्गाः इव जायन्ते, तत्र च एव अपियन्ति– इति उक्तम् द्वितीये मुण्डके; के ते सर्वे भावाः अक्षरात् विभज्यन्ते? कथम् वा विभक्ताः सन्तः तत्र एव अपियन्ति? किम् लक्षणम् वा तत् अक्षरम् इति? एतद् विवक्षय अधुना प्रश्नान् उद्भावयति -

भाष्यार्थ – द्वितीय मुण्डक (२.१.१) में कहा गया है कि जैसे भलीभाँति प्रज्वल्यमान अग्नि से चिनगारियाँ उत्पन्न होती हैं, वैसे ही जिस परम अक्षर से सारे पदार्थ निकलते हैं और वहीं लौट जाते हैं। वे कौन-से पदार्थ हैं, जो अक्षर में से विभक्त (अभिव्यक्त) होते हैं? अभिव्यक्त होने के बाद कैसे वे उसी (ब्रह्म) में लीन हो जाते हैं? या फिर, वह अक्षर कौन-से लक्षण वाला है? इसी को बताने हेतु अब इन प्रश्नों को उठाया जाता है – **(क्रमशः)**

देश के लिए सुहागन क्रान्तिकारिणी ननीबाला देवी

रीता घोष, बैंगलुरू

मानव के जीवन में स्वतन्त्रता एवं स्वदेश के प्रति प्रेम से बढ़कर दूसरा कुछ भी नहीं होता। स्वामी विवेकानन्द ने अपनी भावपूर्ण वाणी में कहा है – ''सभी देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना छोड़ो, केवल देशमाता की आराधना करो।'' वाल्मीकि रामायण में श्रीराम कहते हैं –

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।

– हे लक्ष्मण ! यह स्वर्णमयी लंका भी मुझे अच्छी नहीं लगती है, क्योंकि जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान हैं।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से पराधीन भारत में एक नव जागरण का युग आरम्भ हुआ, अंग्रेजी शासन के विरुद्ध क्रान्तिकारी आन्दोलन की चिनगारियाँ भारत के विभिन्न प्रान्तों में फूटने लगीं, विशेषकर बंगाल की भूमि क्रान्ति की अग्नि से ज्वलन्त अग्निकुंड बनकर धधकने लगी, सम्पूर्ण बंगाल क्रान्तिकारी क्रिया-कलापों से उद्वेलित होने लगा, क्रान्तिकारी विचार-धारावाले नवयुवकों का एक संघ बन गया था, जिसमें प्रमथनाथ मित्र, सतीशचन्द्र बसु, अरविन्द घोष, भगिनी निवेदिता, सरला देवी (जो रवीन्द्रनाथ ठाकुर की भांजी थी), सुरेन्द्रनाथ ठाकुर आदि लोग थे। बंकिमचन्द्र चटर्जी के द्वारा रचित 'आनन्द मठ' उपन्यास तथा वन्दे मातरम् का देशभक्ति गीत उन्नीसवीं सदी से ही राष्ट्रवाद की बौद्धिक एवं प्रेरणामूलक नींव को सुदृढ़ता से तैयार कर चुकी थी। साथ ही स्वामी विवेकानन्द द्वारा विदेश में दिए गए व्याख्यानों ने भी भारतीय जन-मानस को भारतीय दर्शन एवं आध्यात्मिक परम्पराओं के प्रति जागरुक कर दिया था।

इस समय के चरमपंथी नेताओं के लिये आध्यात्मिकता ही भारतीय आन्दोलन का मूल आधार थी। भारत का प्राचीन इतिहास, गीता, वेद, उपनिषद आदि उनके प्रेरणा के मूल स्रोत थे। राष्ट्रवाद को उनलोगों ने धर्म के साथ जोड़ा था, क्रान्तिकारी नेताओं के हृदय में युगावतार श्रीरामकृष्ण देव गम्भीर श्रद्धा का स्थान ले चुके थे। क्रान्तिकारियों के संघ और समितियों में श्रीरामकृष्ण-विवेकानन्द के चित्र की पूजा होती थी और वे लोग उनके बताए मार्ग पर चलने के लिए सतत प्रयत्नशील रहते थे, स्वामीजी का युवा देशवासियों के प्रति

आह्वान और उनकी रचनाएँ भारतीय युवाओं के अनुप्रेरणा की प्रधान स्रोत थीं। स्वामीजी ने देश के पुनर्जागरण के लिये स्वदेश मंत्र की रचना की थी, जिसमें उन्होंने देशवासियों को सम्बोधित करते हुए कहा – ''हे वीर, साहस का आश्रय लो, गर्व से कहो कि मैं भारतवासी हूँ और प्रत्येक भारतवासी मेरा भाई है। कहो कि अज्ञानी भारतवासी, दरिद्र भारतवासी, ब्राह्मण भारतवासी, चाण्डाल भारतवासी, सब मेरे भाई हैं, भारतवासी मेरे प्राण हैं, भारत की देव-देवियाँ मेरे ईश्वर हैं, भारत का समाज मेरे बचपन का झूला, जवानी की फुलवारी और मेरे बुढ़ापे की काशी है, भारत के कल्याण में मेरा कल्याण है।''

स्वामीजी के इन्हीं शब्दों से प्रेरित होकर बंगाल के न केवल नवयुवक बल्कि नवयुवतियाँ भी देश के लिए आत्मत्याग के पथ पर अग्रसर होने लगीं। भगिनी निवेदिता अपने १९०९ ई. की २२ जुलाई एवं ४ अगस्त के पत्रों में इसका उल्लेख करते हुए लिखती हैं – 'सभी स्वदेशी दल एकजुट होकर कह रहे हैं कि हमें श्रीरामकृष्ण एवं स्वामी विवेकानन्द के विचारों से प्रेरणा मिल रही है।'

श्रीमाँ सारदा का क्रान्तिकारियों के प्रति प्रेम

स्वदेश प्रेम की भावना में बहते हुए इन युवा विद्रोहियों को अंग्रेज सरकार के विरुद्ध आवाज उठाने तथा अन्य क्रिया-कलापों के कारण प्राय: कारागार में बन्दी बनाकर रखा जाता

था, पर कारागार से छूटते ही ये देशभक्त संतान माँ सारदा देवी के दर्शन एवं उन्हें प्रणाम करने के लिए उनके पास पहुँच जाते थे। माँ सारदा उन दिनों बागबाजार के उद्बोधन भवन में निवास कर रही थीं। माँ के सेवक स्वामी सारदानन्द जी इन भक्तों को रोकते नहीं थे। माँ सारदा कहतीं – "ये लड़के कितने निर्भीक हैं। देश में कितना परिवर्तन आया है। सभी कहते हैं कि हम स्वामी विवेकानन्द के शिष्य हैं।" माँ के एक मन्त्र-शिष्य रामचन्द्र मजुमदार भी प्राय: माँ के दर्शन हेतु बागबाजार माँ के निवास पर आया करते थे। रामचन्द्र का सम्पर्क स्वदेशी क्रान्तिकारियों से था।

इन्हीं दिनों बंगाल की धरती पर स्वयं को बलिदान चढ़ानेवाले युवक-युवतियों में एक थी – ननीबाला देवी। ये क्रान्तिकारी अमरेन्द्र चटर्जी से स्वदेश-मंत्र में दीक्षा लेकर देश के लिए जीवन-समर्पण हेतु अग्रसर हुईं। ननीबाला देवी सम्बन्ध में अमरेन्द्र की बुआ लगती थीं। उस समय उनकी उम्र मात्र २४ वर्ष थी। ननीबाला देवी का जन्म १८८८ ई., में हावड़ा के बाली जिले में हुआ था। उनके पिता का नाम सूर्यकान्त बन्द्योपाध्याय एवं माता का नाम गिरिबाला देवी था। बचपन से ही ननीबाला अत्यन्त साहसी, धैर्यवती एवं अति बुद्धिमती थीं। मात्र ११ वर्ष की आयु में उनका विवाह हुआ था एवं १६ वर्ष की आयु में ही वे विधवा हो गईं थी। इसके बाद वे अपने पिता के घर वापस आ गई थीं।

क्रान्तिकारियों से जुड़ने के बाद ननीबाला देवी ने सम्पूर्ण रूप से समर्पित होकर संघर्ष और संग्राम को अपना जीवन बना लिया। अत्यन्त निर्भीक स्वभाव के होने के कारण वे विभिन्न प्रकार के खतरनाक एवं गोपनीय कार्यों का दायित्व लेती थीं और उन कार्यों को अत्यन्त कुशलता के साथ सम्पन्न भी करती थीं। उनके अनेक आत्मीयजनों को भी यह पता नहीं चल पाता था कि वे क्रान्तिकारी संगठन से जुड़ी हुई हैं। विभिन्न आवश्यक सूचनाएँ अथवा अस्त्र-शस्त्र एक जगह से दूसरे जगह पहुँचाना आदि कार्य वे विशेष दक्षता के साथ कर लेती थीं।

देश के लिए लोकप्रथा का त्याग

१९१४ ई. में प्रथम विश्वयुद्ध के समय भारत के 'युगान्तर' नामक क्रान्तिकारी विद्रोहियों ने जर्मनी के साथ मिलकर ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध सम्पूर्ण भारतवर्ष में आन्दोलन करने का षड्यन्त्र रचाया था, पर १९१५ ई. में अंग्रेज सरकार को इस षड्यन्त्र का पता चलने पर वह घायल शेर की तरह बौखला उठी एवं भारतवासियों पर निर्मम निष्ठुर अत्याचार करने लगी। स्थान-स्थान पर छापा मारकर पुलिस लोगों को बंदी बनाने लगी। फाँसी चढ़ाना, कालापानी भेजना, पुलिस-अत्याचार से लोगों को पागल बना देना आदि बीभत्स उत्पीड़न किये जाने लगे। कलकत्ते की 'श्रमजीवी समवाय' नामक प्रतिष्ठान पर छापा मारकर तलाशी ली गयी, तो अमर चटर्जी भाग गये, किन्तु रामचन्द्र मजुमदार पकड़े गए। रामचन्द्र मजूमदार को ३ न. रेगुलेशन एक्ट के अन्तर्गत षड्यन्त्र के लिये 'स्टेट प्रिजनर' बनाकर बन्दी बना लिया गया और उन्हें प्रेसिडेन्सी जेल में भेज दिया गया। रामचन्द्र मजुमदार के पास एक विशेष प्रकार का पिस्तौल था, जिसका नाम था 'माऊजर'। उन्हें बंदी बना लेने के पश्चात् इस पिस्तौल को कहाँ छिपा कर रखा गया, इसकी जानकारी उनके दल के किसी भी विप्लवी सदस्य को नहीं थी। यह एक बड़ी समस्या आ गई कि इस पिस्तौल को छिपाए जाने की जानकारी कैसे प्राप्त हो? क्योंकि इस अस्त्र की उस समय अत्यन्त आवश्यकता थी। जब सभी इस बात से बहुत चिन्तित थे, तब ननीबाला देवी इसमें सहयोग देने के लिये आगे आई। ननीबाला देवी ने रामचन्द्र से मिलकर इस पिस्तौल के बारे में पता करने का निश्चय किया, उन्होंने इसके लिए एक योजना बनाई। जेल में रामचन्द्र से मिलना असम्भव कार्य था। अत: सभी सामाजिक संस्कारों, लोकनिन्दा आदि किसी भी बातों की परवाह न करते हुए ननीबाला ने रामचन्द्र की पत्नी बनकर जेल में उनसे मिलने का निश्चय किया। उस समय की सामाजिक परिस्थिति में एक विधवा स्त्री के लिये ऐसा करना कल्पना से बाहर की बात थी, पर ननीबाला ने इस योजना को कार्य में परिणत करके दिखाया। उस चौबीस वर्षीय विधवा युवती ने अपनी माँग में सिन्दूर भरा, सुहागिन की तरह वेशभूषा बनाई

ननीबाला देवी

एवं रामचन्द्र की पत्नी बनकर उनसे मिलने जेल में पहुँच गई। ननीबाला को देखकर किसी को भी तनिकमात्र संशय नहीं हुआ। इस प्रकार ननीबाला को रामचन्द्र से मिलने की अनुमति प्राप्त हो गई और वह उस माऊजर पिस्तौल के बारे में पता लगाने में सफल रही।

इस प्रकार के खतरनाक कार्यों के अलावा ननीबाला देवी ने कई राजद्रोही विप्लवी युवकों को रिषड़ा नामक स्थान में करीब दो महीने तक छिपाए रखा। राजद्रोही युवकों को विभिन्न स्थानों में छिपाए रखने का कार्य वे बहुत दिनों तक करती रहीं। अन्त में १९१७ में अंग्रेजी-पुलिस को उनकी सच्चाई के बारे में पता चल गया। पुलिस से बचने के लिए बाध्य होकर ननीबाला को मित्रों की सहायता से पेशावर में भागकर छिपना पड़ा। वहाँ वे बीमार पड़ गईं। उन्हें पेचिश की बीमारी हो गई। इसी बीच पुलिस पेशावर पहुँच गई और उन्हें वहाँ बन्दी बना लिया गया। अस्वस्थ अवस्था में ही उन्हें पेशावर से काशी के जेल में भेज दिया गया। थोड़ा स्वस्थ होने के पश्चात् काशी के डिप्टी पुलिस सुपरिटेन्डेन्ट उनसे कई प्रकार से तर्क करने लगा। जब उनसे कोई स्वीकरोक्ति प्राप्त नहीं हुई, तो उन पर अकथनीय अत्याचार किया। इसके बावजूद भी उनके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। फिर उन्हें पनिशमेन्ट सेल (अंधेरी कोठी) में रखा गया, जहाँ न तो हवा थी, न ही रोशनी थी। उन्हें लगातार तीन दिनों तक बंद रखा गया, पर दृढ़ मानसिक शक्ति की अधिकारिणी ननीबाला पुलिस के सामने थोड़ी-सी भी विचलित नहीं हुईं। उन्हें पुनः उसी कोठरी में कुछ समय के लिये बन्द कर दिया गया। जब कोठरी का दरवाजा खोला गया, तो वे अर्द्धमृत अवस्था में पड़ी मिलीं। हार मानकर पुलिस ने उन्हें काशी से कलकत्ता के प्रेसिडेन्सी जेल में भेज दिया।

कलकत्ता के जेल में लाए जाने के पश्चात् ननीबाला देवी अन्न का त्याग कर निराहार उपवास करने लगीं। अनेक प्रयत्नों के बाद भी उन्होंने कुछ भी ग्रहण नहीं किया। इस प्रकार लगातर २० दिनों तक वे निराहार रहीं। पुलिस के उच्च से उच्च आधिकारियों के समझाने, मनाने से भी वे एक न मानीं। तब कलकत्ते के जासूस पुलिस स्पेशल सुपरिटेन्डेन्ट गोल्डी ने ननीबाला देवी को आश्वस्त करते हुए कहा कि यदि वह अन्न ग्रहण करेगी, तो उसकी कोई भी मनोकामना पूर्ण की जायेगी। इस बात पर विश्वास करते हुए ननीबाला देवी ने कहा – ''मुझे बागबाजार में श्रीरामकृष्ण देव की पत्नी सारदा देवी के पास पहुँचा दिया जाए, तो मैं अन्न-जल ग्रहण करूँगी।'' सुपरिटेन्डेन्ट ने कहा – ''ठीक है, पर तुमको आवेदन पत्र लिखकर देना पड़ेगा।'' ननीबाला देवी ने आवेदन लिखा और उसे गोल्डी को दिया। परन्तु गोल्डी ने उस आवेदन को हाथ में लेकर उसे फाड़कर फेंक दिया। इस घटना पर अपमानित ननीबाला ने घालय सिंहनी जैसी क्रोध में दहाड़ती हुई गोल्डी के मुँह पर थप्पड़ लगा दिया। उन्हें दोबारा वैसे ही मारने के लिए उद्यत देखकर उपस्थित कर्मचारियों ने उन्हें रोक लिया। ननीबाला देवी ने क्रोधित स्वर में कहा – ''यदि उसे आवेदन फाड़ना ही था, तो लिखने के लिए मुझसे क्यों कहा? क्या हमारे देश के लोग मनुष्य नहीं हैं?''

ऐसे ही प्रचण्ड मनोबल की धनी थीं ननीबाला देवी। १९१७ ई. में ३ न. रेगुलेशन एक्ट के अन्तर्गत पकड़ी गई देश की एकमात्र प्रथम महिला स्टेट प्रिजनर थीं 'ननीबाला'। उनकी दृढ़ता के आगे ब्रिटिश शासन को भी झुकना पड़ा। दो वर्षों के बाद १९१९ ई. को उन्हें जेल से मुक्त किया गया।

जेल से निकलने के पश्चात् ननीबाला देवी का जीवन अत्यन्त दुखमय एवं संघर्षपूर्ण रहा। जिस महिला ने अपना सर्वस्व जीवन देश के लिए दाँव पर लगाया, उन्हें समाज ने ग्रहण करने से अस्वीकार कर दिया। उन्हें रहने के लिए कोई स्थाई स्थान नहीं मिला। पुलिस के भय से सगे-सम्बन्धी-मित्रों आदि किसी ने भी उनका साथ नहीं दिया। न रहने के लिए स्थान, न खाने-पीने का साधन, वे इधर-उधर भटकती रहीं। कठिनाइयाँ, दरिद्रता एवं निराशा से अब वह टूटने लगीं। जीवन के अन्तिम दिनों में स्वाधीनता संग्रामी के रूप में उन्हें कुछ पेन्शन राशि मिलती थी, पर उनका स्वास्थ्य अब भग्न हो चुका था। १९६७ में उनका देहान्त हो गया।

देश के नाम पर इस समर्पित जीवन को भारत के इतिहास में कोई स्थान नहीं मिला। उनको भुला दिया गया। उनके आत्मत्याग की कहानी का कहीं उल्लेख नहीं मिलता, पर अब समय आ गया है कि ननीबाला जैसी कठोर दृढ़ मानसिकता की नारी के बारे में भारत की नई पीढ़ी को जानकारी हो। क्योंकि ननीबाला ने यह सिद्ध कर दिया कि भारतीय नारी केवल अबला, कोमल ही नहीं, बल्कि समयानुसार वह वज्र के समान कठोर भी हो सकती है। ○○○

रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द विश्वविद्यालय, हावड़ा

(रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द शिक्षण एवं अनुसन्धान संस्थान, बेलूड़, हावड़ा)

स्वामी तन्निष्ठानन्द, रामकृष्ण मठ, नागपुर

(गतांक से आगे)

विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम

वर्तमान (सन् २०२१) में 'विश्वविद्यालय अनुदान आयोग' तथा भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अनुमोदन से इस विश्वविद्यालय के विभिन्न केन्द्रों में विविध पाठ्यक्रम संचालित हैं। इस विश्वविद्यालय के प्रत्येक केन्द्र ने अपने-अपने क्षेत्र में विशेष प्रवीणता प्राप्त कर विशेष पाठ्यक्रम बनाये हैं। वे इस प्रकार हैं –

बेलूड़, पश्चिम बंगाल मुख्य विश्वविद्यालय, परिसर

१. गणितीय विज्ञान (मैथेमेटिकल साइंसेस) –

१. गणित २. भौतिकशास्त्र ३. संगणकशास्त्र तथा आँकड़ा विज्ञान (डेटा साइंस)

२. भारतीय धरोहर (परम्परा) –

१. संस्कृत २.भारतीय आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तथा वैज्ञानिक धरोहर (इंडियन स्पिरिच्युल कल्चरल एण्ड साइन्टिफिक हेरिटेज) ३. योग-अभ्यास तथा अनुसंधान ४. ध्रुपद ५. शास्त्रीय संगीत ६. खेल विज्ञान (स्पोर्ट्स साइंस)

२. कोयम्बतूर केन्द्र :

१. दिव्यांग प्रबन्धन तथा विशेष शिक्षा (डिसेबिलिटी मैनेजमेंट एण्ड स्पेशल एजुकेशन) २. सामान्य तथा अनुकूलित शारीरिक शिक्षा तथा योग (जनरल एण्ड एडाप्टेड फिजिकल एजुकेशन एण्ड योगा) ३. कृषि अनुसंधान तथा ग्रामीण विकास (एग्रिकल्चरल रिसर्च एण्ड रूरल डेवलपमेंट) ४. संगणकशास्त्र तथा उसका प्रयोग (कम्प्यूटर साइंस एण्ड एप्लिकेशन्स) ५. आँकड़ा विज्ञान (डेटा साइंस) ६. व्यापारिक विश्लेषण (बिजनेस एनालेटिक्स)

३. राँची (मोराबादी), झारखण्ड केन्द्र :

१. एकीकृत ग्रामीण एवं आदिवासी विकास तथा प्रबन्धन (इंटिग्रेटेड रूरल एण्ड ट्राइबल डेवलपमेंट एण्ड मैनेजमेंट) २. कृषि जैव प्रौद्योगिकी (एग्रिकल्चरल बायोटेक्नोलॉजी) ३.कृषि विज्ञान (एग्रिकल्चरल साइंस)

४. नरेन्द्रपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल केन्द्र :

१. कृषि तथा ग्रामीण विकास (एग्रिकल्चरल एण्ड रूरल डेवलपमेंट) २. एकीकृत ग्रामीण एवं आदिवासी विकास तथा प्रबन्धन (इंटिग्रेटेड रूरल एण्ड ट्राइबल डेवलपमेंट एण्ड मैनेजमेंट) ३. कृषि जैव प्रौद्योगिकी (एग्रिकल्चरल बायोटेक्नोलॉजी) ४. चिकित्सा जैव प्रौद्योगिकी (मेडिकल बायोटेक्नोलॉजी) (रामकृष्ण मिशन सेवा प्रतिष्ठान अस्पताल के सहयोग से) ५. आणविक जीव विज्ञान (मॉलिक्युलर बायोलॉजी) ६. जड़ी-बूटियों का अध्ययन (पादप तथा अन्य प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त औषधि) (फार्माकोग्नोसी) ७. पर्यावरण विज्ञान तथा आपदा प्रबन्धन (एनवायरमेन्ट एण्ड डिजास्टर मैनेजमेंट)

इस विश्वविद्यालय में विशेष विभागों द्वारा विविध शैक्षणिक कार्यक्रम भी चलाये जाते हैं।

१. पुनर्वासन तथा खेल विज्ञान विभाग (स्कूल ऑफ रिहेबिलिटेशन एण्ड स्पोर्ट्स साइंसेस):

क. दिव्यांग व्यवस्थापन तथा विशेष शिक्षा (कोयम्बतूर) ख. सामान्य तथा अनुकूलित शारीरिक शिक्षा तथा योग (कोयम्बतूर) ग. खेल विज्ञान (बेलूड़) उपर्युक्त विभाग डिप्लोमा, उच्च श्रेणी डिप्लोमा, बी.एड., एम.एड., एम. फिल तथा पी.एच.डी की उपाधियाँ प्रदान करते हैं।

२. कृषि तथा ग्रामीण विकास विभाग (स्कूल ऑफ एग्रिकल्चरल एण्ड रूरल डेवलपमेंट)

क. एकीकृत ग्रामीण एवं आदिवासी विकास तथा प्रबन्धन (नरेन्द्रपुर, राँची) ख. कृषि जैव प्रौद्योगिकी (नरेन्द्रपुर, राँची) ग. कृषि अनुसंधान तथा ग्रामीण विकास (कोयम्बतूर) उपर्युक्त विभाग बी.एस.सी, एम.एस.सी, पी.एच.डी की उपाधियाँ प्रदान करते हैं।

३. भारतीय धरोहर विभाग (स्कूल ऑफ इंडियन हेरिटेज)

क. संस्कृत भाषा-अभ्यास तथा अनुसंधान (बेलूड़) **ख.** भारतीय आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तथा वैज्ञानिक धरोहर (बेलूड़) **ग.** योग-अभ्यास तथा अनुसंधान (बेलूड़) **घ.** शास्त्रीय संगीत विशेषकर ध्रुपद शैली (बेलूड़) **च.** मूल्य शिक्षा (वेल्यू एजुकेशन) (बेलूड़) **छ.** बंगाली भाषा-अभ्यास तथा अनुसंधान (बेलूड़) **ज.** दर्शन शास्त्र अभ्यास (पौर्वात्य तथा पाश्चात्य दर्शन-रामकृष्ण-विवेकानन्द दर्शन के परिप्रेक्ष्य में) (बेलूड़)

उपर्युक्त विभाग डिप्लोमा, इन्टिग्रेटेड ५ वर्षीय एम.ए., एम.फिल, पी.एच.डी की उपाधियाँ प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त इस विभाग में उपनिषद्, श्रीमद्भगवद्गीता, श्रीमद्भागवत, रामायण आदि प्राचीन संस्कृत धर्मशास्त्र के विशेष पाठ्यक्रम तथा कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। इस विभाग में संस्कृत भाषा का इन्टिग्रेटेड ५ वर्षीय एम.ए. पूर्णतः संस्कृत माध्यम में पढ़ाया जाता है। यहाँ व्याकरण तथा वेदान्त के परिप्रेक्ष्य में संस्कृत भाषा में पी.एच.डी., रामकृष्ण-विवेकानन्द दर्शन के परिप्रेक्ष्य में दर्शनशास्त्र तथा बंगाली भाषा के कुछ चयनित क्षेत्रों में पी.एच.डी. प्रदान की जाती है।

४. गणितीय विज्ञान विभाग विद्यालय (स्कूल ऑफ मैथेमेटिकल साइंसेस)

क. गणित (बेलूड़) **ख.** संगणकशास्त्र, उसका अनुप्रयोग तथा आँकड़ा विज्ञान (बेलुड़ कोयम्बतूर) **ग.** भौतिकशास्त्र (बेलूड़)

उपर्युक्त विभाग एम.एस.सी., एम.फिल तथा पी.एच.डी की उपाधियाँ प्रदान करते हैं।

५. पर्यावरण तथा आपदा प्रबंधन विभाग (स्कूल ऑफ एनवायरमेन्ट एण्ड डिजास्टर मैनेजमेंट)

क. पर्यावरण विज्ञान तथा आपदा प्रबन्धन (जलवायु परिवर्तन तथा मानवी स्वास्थ्य की समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में) (नरेन्द्रपुर)

उपर्युक्त विभाग एम.एस.सी. तथा पी.एच.डी की उपाधियाँ प्रदान करते हैं। यह कार्यक्रम 'यूरोपीय आयोग' के सहयोग से चलाया जाता है। इस महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के कार्यक्रमों को सबल तथा सुदृढ़ बनाने के लिए पश्चिम बंगाल सरकार ने पर्यावरण तथा आपदा प्रबन्धन के लिए 'स्वामी विवेकानन्द पीठ' (चेयर) का निर्माण किया है।

६. जीव विज्ञान विभाग (स्कूल ऑफ बायोलॉजिकल साइंसेस)

क. चिकित्सा जैव प्रौद्योगिकी (नरेन्द्रपुर) **ख.** प्रतिरक्षा

विज्ञान (इम्यूनोलॉजी) (नरेन्द्रपुर) **ग.** सूक्ष्म जीव विज्ञान (मायक्रोबायोलॉजी) (नरेन्द्रपुर) (ये सभी रामकृष्ण मिशन सेवाप्रतिष्ठान अस्पताल, कोलकाता के सहयोग से कार्य कर रहे हैं।)

उपर्युक्त विभाग एम.एस.सी. तथा पी.एच.डी की उपाधियाँ प्रदान करते हैं। स्नातकोत्तर स्तरीय 'चिकित्सकीय प्रयोगशाला तकनीक' (मेडिकल लेबोरेटरी टेक्नोलॉजी) पाठ्यक्रम भी शीघ्र ही आरम्भ होने वाला है। कोविड-१९ वैश्विक महामारी के चलते उपर्युक्त पाठ्यक्रम की आवश्यकता महत्त्वपूर्ण हो गयी है, इसलिए विश्वविद्यालय उस पर विशेष ध्यान दे रहा है। जीव विज्ञान के क्षेत्र में विकसित तथा विशिष्ट विषय जैसे प्रतिरक्षा विज्ञान, विषाणु विज्ञान (वायरोलॉजी), अंकीय जीव विज्ञान (डिजिटल बायोलॉजी), जैव सूचना विज्ञान (बायोइन्फोर्मेटिक्स) तथा चिकित्सकीय क्षेत्र में मेडिकल इमेजिंग आदि विषयों के स्नातकोत्तर तथा शोध स्तरीय पाठ्यक्रम बनाये जा रहे हैं।

स्वामी विवेकानन्द चाहते थे कि भारतीय सनातन ज्ञान, दर्शनशास्त्र, गणितीय ज्ञान के साथ पाश्चात्य जगत का आधुनिक वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी ज्ञान का सामंजस्यपूर्ण समन्वय हो। स्वामीजी के पवित्र नाम का यह विश्वविद्यालय उनके स्वप्नों को साकार करने में प्रयत्नशील है।

उपलब्धियाँ

उपर्युक्त शैक्षणिक कार्यक्रम विश्वविद्यालय के विविध केन्द्रों में चलाये जाते हैं। इस विश्वविद्यालय के दिव्यांग व्यवस्थापन (डिसेबिलिटी मैनेजमेंट) विभाग से मानव संसाधन के रूप में अनेक प्रशिक्षित शिक्षक तैयार हुए हैं। इस कार्य की प्रशंसा करते हुए **यूनेस्को** (संयुक्त राष्ट्र शिक्षा, विज्ञान तथा सांस्कृतिक संगठन) ने इस विश्वविद्यालय के सम्मान में तथा इस विशिष्ट क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए **'सम्मिलित अनुकूलित शारीरिक शिक्षा तथा योग' (इनक्लुजिव एडाप्टेड फिजिकल एजुकेशन एण्ड योगा)** नामक पीठ (चेयर) की स्थापना की है। इस विश्वविद्यालय की सामाजिक प्रतिबद्धता को मान्यता प्रदान करते हुए यूरोप के **ग्लोबल यूनिवर्सिटी नेटवर्क फॉर इनोवेशन (जी.यू.एन.आइ.)** नामक संस्था ने इस विश्वविद्यालय को पूर्ण सदस्यता प्रदान की है। इस विश्वविद्यालय की सराहना करते हुए **राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद** (नेशनल एसेसमेंट एण्ड एक्रेडेशन कौन्सिल **(नैक)**) ने सन् २०१८ में इसे पूरे देश में दूसरा स्थान दिया है। यह गौरव की बात है कि यह विश्वविद्यालय गुणवत्ता में बेंगलुरु स्थित भारत की विश्वप्रसिद्ध संस्था इंडियन इन्स्टिट्युट ऑफ साइंस के लगभग बराबरी में पहुँच चुका है। नैक वह भारतीय संस्था है, जो हमारे शैक्षणिक संस्थाओं की गुणवत्ता जाँचती है।

इसके अतिरिक्त इस विश्वविद्यालय ने भारतीय धरोहर नामक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत निम्नलिखित दो विभाग प्रारम्भ किये हैं।

१. विवेकानन्द-वेदान्त-योग-अध्ययन-अनुसंधान केन्द्र (विवेकानन्द सेंटर फॉर स्टडी एण्ड रिसर्च इन वेदान्त एण्ड योगा) (व्यास) : यह विभाग भारतीय दर्शनशास्त्र का पाश्चात्य दर्शन, योग का मनोविज्ञान तथा दर्शनशास्त्र के उभरते क्षेत्रों (जैसे-सेवा की नैतिकता (केयर एथिक्स), मानवीय नैतिकता (ह्युमेनिटिक्स एथिक्स), पर्यावरणीय नैतिकता (एनवायरोमेन्टल एथिक्स), पृथ्वी को माता का स्थान के साथ अन्यान्य संदर्भ जोड़ते हुए उनके संशोधन तथा प्रकाशन पर जोर देता है।

२. विवेकानन्द-चेतना का अध्ययन तथा अनुसंधान केन्द्र (विवेकानन्द सेंटर फॉर कॉन्सियसनेस स्टडी एण्ड रिसर्च): यह विभाग प्राचीन वेदान्त तथा योग के मूलग्रंथों में चैतन्य का सैद्धान्तिक अभ्यास करता है तथा वैज्ञानिक प्रयोगों के द्वारा इन शास्त्रों में दिये कुछ तथ्यों की यथार्थता प्रतिपादित करता है।

इन दोनों विभागों के क्रिया-कलाप भारत सरकार के सांस्कृतिक मंत्रालय द्वारा इस विश्वविद्यालय में स्थापित 'स्वामी अभेदानन्द पीठ' (चेयर) के अन्तर्गत होते हैं। इसके लिए स्थायी कोश बनाया गया है। यह पीठ विभाग की मुख्य गतिविधियों के साथ ग्रन्थ तथा पत्रिकाओं के प्रकाशन में भी मुख्य भूमिका निभाता है। भारतीय धरोहर नामक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत संस्कृत एवं दर्शनशास्त्र के तत्त्वावधान में 'प्रज्ञालोक' तथा 'प्रतिभालोक' नामक पूर्णत: दो संस्कृत पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं, जिनमें क्रमश: एक शोधकर्ताओं के स्तर की तथा दूसरी स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर की है। विभिन्न विद्यालय तथा विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए 'प्रज्ञानम्' नामक एक अन्य त्रिभाषिक (संस्कृत, बंगाली, अंग्रेजी) पत्रिका प्रकाशित होती है।

'जीव विज्ञान अनुसन्धान केन्द्र' (सेंटर फॉर रिसर्च इन बायोलॉजिकल साइंसेस) (जीवन) : जीव विज्ञान के क्षेत्र में अनुसन्धान को प्रोत्साहित करने के लिये 'जीव विज्ञान अनुसन्धान केन्द्र' (जीवन) नामक एक विभाग रामकृष्ण मिशन सेवाप्रतिष्ठान, कोलकाता स्थित ६०० बिस्तरों के और करीब ९० साल पुराने अस्पताल के सहयोग से प्रारम्भ किया गया है। यह विभाग संगणक वैज्ञानिक और सांख्यिकीविद् के साथ चिकित्सक तथा चिकित्सा क्षेत्र के प्रसिद्ध प्रयोगशालाओं में कार्यरत जैव वैज्ञानिकों को एकत्रित कर उनमें बेहतर समन्वय स्थापित करता है, ताकि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की सहायता से डिजिटल इमेजेस का विश्लेषण कर चिकित्सा क्षेत्र को उच्च स्तर पर ले जाया जा सके। इस विभाग के अन्तर्गत जीव विज्ञान के महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में ५ कार्यकारी दल गठित किये गये हैं। वे अनुसंधान, शिक्षा, प्रशिक्षण तथा अन्य विस्तृत सेवा क्षेत्र के लिए योजना तथा कार्यक्रम बनाते हैं। वे ५ कार्यकारी दल निम्नलिखित हैं –

१. सूक्ष्मजीव-विज्ञान (माइक्रोबायोलॉजी) २. हृदयरोग विज्ञान तथा चयापचयी विकार (कार्डियालॉजी एण्ड मेटाबोलिक डिसऑर्डर) ३. रक्तरोग विज्ञान तथा रक्त कर्करोग विज्ञान (हेमोटोलॉजी एण्ड हेमोटो अंकोलॉजी) ४. स्नायु विज्ञान (न्यूरो साइंस) ५. चिकित्सा सांख्यिकी तथा अंकीय आँकड़ा विश्लेषण (मेडिकल स्टेटिस्टिक एण्ड डिजिटल डेटा एनालेटिक्स)

विश्वविद्यालय का विस्तार और इसकी सेवायें :

१. विवेकदिशा : सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी (इन्फोर्मेशन एण्ड कम्युनिकेशन टेक्नॉलॉजी) (आय.सी.टी) पर आधारित विश्वविद्यालय का सिंगल विन्डो नेटवर्क, माध्यमिक से डिग्री तक, ऑनलाईन पद्धति से शिक्षा प्रदान करता है। इसके अन्तर्गत ऑनलाईन शिक्षकों का प्रशिक्षण, आध्यात्मिक धरोहर कार्यक्रम, शिक्षकों की कार्यशाला तथा अनुसंधान के कार्यक्रम किये जाते हैं। वह अपने संवादात्मक वेबसाईट के माध्यम से विद्यार्थी, शिक्षक तथा शोधकर्ताओं को सहायता प्रदान करता है। सन् २०१९-२०२० में इस विभाग ने करीब २५ दूरस्थ केन्द्रों के माध्यम से १६,००० से अधिक विद्यार्थियों को सप्ताह में ६ दिन ऑनलाईन पद्धति से तथा मल्टिमीडिया की सहायता से शिक्षा प्रदान की है। विश्वविद्यालय के बेलूड़ स्थित विशेषज्ञों द्वारा इस पर निगरानी रखी जाती है।

विवेकदिशा विभाग की वर्तमान गतिविधियाँ

क. ऑनलाईन शिक्षा वर्ग : छठवीं से बारहवीं वर्ग के छात्रों के लिए भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, गणित, जीव विज्ञान, मूल्य शिक्षा तथा व्यावहारिक अंग्रेजी (कम्युनिकेटिव इंग्लिश) के वर्ग ऑनलाईन पद्धति से लिए जाते हैं। प्रयोगशाला या शल्य-चिकित्सा कक्ष के चित्र के साथ जानकारी, ॲनिमेशन तथा चलचित्र के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाती है, ताकि पढ़ाई प्रभावशाली, आनन्ददायी तथा फलदायी हो सके। यह शिक्षा अंग्रेजी तथा बंगला भाषा के माध्यम से दी जाती है। अमेरिका तथा इंग्लैंड के स्नातक स्तर के रसायनशास्त्र तथा अर्थशास्त्र विषयों के विद्यार्थियों के लिए ऑनलाईन वर्गों का आयोजन किया जाता है।

ख. अन्य सुविधाएँ : इस विभाग के द्वारा अन्य पाठशाला, विद्यालय तथा विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों की विविध विषयों के विभिन्न स्तर की अभ्यास परीक्षा (प्रेक्टिस टेस्ट) ली जाती है। इसके लिए अंग्रेजी या अन्य भारतीय भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। इस वेबसाईट पर ऑनलाईन वर्ग के कुछ संपादित चलचित्र तथा साइंस विषयों की परियोजनाएँ (प्रोजैक्ट) उपलब्ध हैं। यहाँ प्रसारण-भवन के माध्यम से आप किसी भी जगह का चारों ओर का (३६० अंश का) मनोरम दृश्य देख सकते हैं। इस वेबसाइट पर ई-ग्रंथालय के द्वारा छात्रों को बहुमूल्य शैक्षणिक पुस्तकें, महत्त्वपूर्ण चित्र, सहायक दस्तावेज, मूल्यवान जानकारी आदि साहित्य उपलब्ध कराया जाता है।

ग. कॉन्टेंट जनरेशन : पाठशाला तथा विद्यालय स्तर के विभिन्न साइंस विषयों के बंगला तथा अंग्रेजी भाषाओं में मल्टिमीडिया प्रस्तुतिकरण तैयार किये जाते हैं, ताकि स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय (बांगलादेश) छात्रों की आवश्यकताएँ पूरी की जा सकें। विविध राज्यों के शिक्षा

मंडल तथा केन्द्रिय शिक्षा मंडल के पाठ्यक्रमों के अनुसार छात्रों के लिए पाठ्यक्रम तैयार किये जाते हैं। विभिन्न विषयों या प्रकरणों को एकीकृत तथा संघटित कर छात्रों की धारणा तैयार करना इसका मूल उद्देश्य है।

घ. अन्तर्राष्ट्रीय श्रोताओं के लिए आध्यात्मिक धरोहर कार्यक्रम : सम्पूर्ण विश्व के भक्तों की आध्यात्मिक तृष्णा मिटाने के लिए श्रीरामकृष्ण-वचनामृत, श्रीमद्भगवद्गीता आदि विषयों पर बंगला तथा अंग्रेजी भाषाओं में नियमित ऑनलाईन प्रवचन आयोजित किये जाते हैं। सऊदी अरब, अमेरिका, इंग्लैंड, कनाडा तथा जर्मनी के भक्त इसका लाभ उठाते हैं।

च. एकीकृत विज्ञान की पाठ्य पुस्तकें प्रकाशित करना : विद्यार्थियों की विज्ञान विषयक मूलभूत धारणा विकसित करने हेतु इस विभाग ने बंगला भाषा में ४ पुस्तकें प्रकाशित की हैं। समकालीन वैज्ञानिक संशोधन तथा शोध पर आधारित पुस्तकों का प्रकाशन भी यहाँ होता है।

छ. मूल्य शिक्षा : विभिन्न आयुवर्ग के विद्यार्थियों के लिए मल्टिमीडिया कार्यक्रम का आयोजन कर उन्हें श्रीरामकृष्ण तथा स्वामी विवेकानन्द के सार्वजनीन उपदेशों पर आधारित नैतिक शिक्षा का पाठ पढ़ाया जाता है, जहाँ विद्यार्थी आपस में चर्चा भी करते हैं।

२. कृषि विज्ञान केन्द्र : यह विभाग भारत सरकार के कृषि मंत्रालय के अन्तर्गत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (इंडियन काउंसिल फॉर एग्रिकल्चरल रिसर्च) की स्वीकृति से चलाया जाता है। इस विभाग के तीन दूरस्थ केन्द्र हैं –

१. सस्य-श्यामला कृषि विज्ञान केन्द्र : यह रामकृष्ण मिशन आश्रम, नरेन्द्रपुर के अन्तर्गत आरापंच, जिला २४ परगना, पश्चिम बंगाल में स्थापित है।

२. धान्यगंगा कृषि विज्ञान केन्द्र : यह रामकृष्ण मिशन आश्रम, सारगाछी, जिला मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल के अन्तर्गत स्थापित है।

३. अमरखनन कृषि विज्ञान केन्द्र : यह रामकृष्ण मिशन आश्रम, रामहरीपुर, जिला बाँकुड़ा, पश्चिम बंगाल के अन्तर्गत स्थापित है।

क. कृषि विज्ञान केन्द्र की संकल्पना : यह विभाग भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा किये गये अनुसंधानों को सम्बन्धित जिलों में किसानों तक पहुँचाता है। इस प्रकार यह विभाग किसान तथा कृषि-वैज्ञानिक इन दोनों की दूरियों को मिटाने का प्रयास करता है। यह विभाग किसानों के स्व-रोजगार का अवसर बढ़ाते हुए उन्हें फसल-उत्पादन, फसल-सुरक्षा, बागवानी, पशु-विज्ञान, मत्स्य-पालन, गृह-विज्ञान तथा कृषि-विस्तार आदि विषयों में प्रशिक्षित करता है तथा उन्हें कृषि सम्बन्धी कौशल तथा ज्ञान प्रदान करते हुए व्यावसायिक प्रशिक्षण भी देता है। इस प्रशिक्षण की विशेषता यह है कि प्रशिक्षणार्थी प्रयोग के द्वारा स्वयं वह कार्य करके सीखता है।

कृषि की उपज बढ़ाने के लिए उनके खेतों की मिट्टी तथा अन्य परीक्षण की व्यवस्था कर कृषि क्षेत्र में कार्यरत कर्मचारियों का प्रशिक्षण भी वह कराता है। किसानों के लिए यह विभाग प्रमुख अनाज, तिलहन तथा फल के उत्पादों का अग्रिम पंक्ति का प्रदर्शन आयोजित करता है। कृषि विज्ञान केन्द्र किसानों के लिए राज्य में एक दीपस्तम्भ की तरह विद्यमान है।

ख. कृषि विज्ञान केन्द्र का उद्देश्य :

१. कृषि विषयक व्यावसायिक प्रशिक्षण देना **२.** खेतों की मिट्टी तथा अन्य परीक्षण की व्यवस्था करना **३.** प्रमुख अनाज, तिलहन तथा फल के उत्पादों का अग्रिम पंक्ति का प्रदर्शन आयोजित करना **४.** कृषि क्षेत्र में कार्यरत कर्मचारियों का प्रशिक्षण।

ग. कृषि विज्ञान केन्द्र का कार्य : भारत का कृषि-विकास १० करोड़ ३० लाख किसान परिवारों के १४ करोड़ हेक्टर की खेती पर निर्भर है। इतने किसानों तक पहुँचना कठिन है, किन्तु कृषि-उत्पादन बढ़ाने के लिए जरूरतमन्द किसानों तक उचित तकनीकी सहायता पहुँचाना अत्यावश्यक है। किसानों के लिए विविध कृषि अनुसंधान संस्थाओं से नवीनतम तकनीकी जानकारी प्राप्त करना कठिन कार्य है। इसे ध्यान में रखते हुये सम्पूर्ण देश में लगभग ७२१ (जनवरी २०२० तक) कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थापना की गयी है, जिनके माध्यम से कृषि-विशेषज्ञों से कृषि विषयक जानकारी किसान एक ही स्थान पर पा सकते हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण देश के लगभग सभी जिलों में यह सुविधा उपलब्ध हुई है।

चयनित गाँवों में सामाजिक-आर्थिक मूल्यांकन का सर्वेक्षण कर यह जाना जाता है कि किसान की पारम्परिक पद्धति और आधुनिक तंत्रज्ञान में कहाँ-कहाँ अन्तर है, उनकी अत्यन्त आवश्यकताएँ क्या हैं? उसके बाद उनके अनुसार

उनकी समस्याओं का समाधान करने हेतु उन्हें प्रशिक्षण दिया जाता है, उन्हें उस विषय का प्रयोग करके दिखाया जाता है। इतना ही नहीं, उनके खेतों में जाकर उन्हें प्रत्यक्ष प्रयोग कर दिखाया जाता है। साथ ही साथ आदर्श खेती के नमूने विकसित किये गये हैं, ताकि किसानों को सुदृढ़ प्रशिक्षण मिल सके तथा वे प्रदर्शनी के द्वारा आधुनिक जानकारी प्राप्त कर सकें। इसके अलावा विभिन्न उन्नत प्रणाली का प्रयोग करते हुए पर्यावरण के अनुकूल किसानों की समस्याओं का समाधान किया जाता है। इस प्रकार पर्यावरण के अनुकूल प्रणालियों के प्रयोग से किसान उत्साहित हुए और किसानों के समूह बनने का मार्ग बन गया। किसानों में बेहतर तालमेल बैठाने के लिए 'स्वयं सहायता समूह' बनाये गये हैं। जिस किसान ने कुछ नवीन अविष्कार किया हो या कुछ नया प्रयोग किया हो, वह अपना अनुभव अन्य किसानों से साझा करता है। आधुनिक तकनीकी आविष्कारों का प्रचार-प्रसार शीघ्र करने हेतु 'किसान महिला समूह' की स्थापना की गयी है। उनके द्वारा वह सूचना किसानों के द्वार तक पहुँचाई जाती है।

आज कृषि-विज्ञान केन्द्रों के पास अपने पर्याप्त संसाधन हैं, जिससे वे न केवल किसानों को, अपितु ग्रामीण युवकों को भी प्रशिक्षित करते हैं। किसानों की वर्तमान आवश्यकताओं तथा समस्याओं के अनुसार प्रशिक्षण का कार्यक्रम बनाया जाता है, जिससे किसानों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सके। यह प्रशिक्षण प्रशिक्षण-केन्द्रों में तथा प्रत्यक्ष खेतों में होता है। इन प्रशिक्षणों को व्यावहारिक रूप देने के लिए तथा किसानों को कृषि-कार्य का अनुभव देने के लिए अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन पाठ्यक्रम बनाएँ जाते हैं। किसानों की माँगें तथा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए 'सूचना इकाइयाँ' बनाई गयी हैं। इनके द्वारा किसानों को न केवल कौशल प्रदान किया जाता है, बल्कि उन्हें उनकी आवश्यकतानुसार महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाती हैं। नये अविष्कारों को कार्यान्वित करने के लिए किसानों की आर्थिक सहायता हेतु राज्य सरकार, केन्द्र सरकार तथा अन्य आर्थिक सहायता देनेवाली संस्थाओं को सहमत किया जाता है।

उपसंहार : भारत को यदि कला, विज्ञान तथा ज्ञान की अन्य शाखाओं में श्रेष्ठता अर्जित करनी हो, तो सारे समाज को विशेषकर युवावर्ग को भारत की गौरवमयी विरासत से अच्छी तरह से परिचित कराना होगा और साथ-साथ उन्हें आधुनिक वैज्ञानिक विचारधारा में भी प्रशिक्षित करना होगा। जैसे बच्चों में हमारे पूर्वजों की गरिमामयी उपलब्धियों के प्रति अभिमान कूट-कूट कर भरना होगा, वैसे ही उनमें भारत के पुनरुत्थान हेतु मानवीय उत्कृष्टता तथा शिक्षा के सभी क्षेत्रों में निपुणता प्राप्त करने के लिए उत्साह जाग्रत करना होगा। उन्हें हमारे जनसाधारण, गरीब तथा उपेक्षित भाइयों के प्रति संवेदनशील बनाकर उनमें उनके प्रति कृतज्ञता का भाव जगाना होगा। इस विश्वविद्यालय की गतिविधियाँ जनसाधारण को ध्यान में रखकर निर्मित की गयी हैं। स्वामीजी के इस सपना को पूर्ण करने के लिए विश्वविद्यालय प्रयासरत है।

विश्वविद्यालय के वर्तमान प्रमुख पदाधिकारी –

कुलाधिपति : स्वामी सुवीरानन्द, महासचिव, रामकृष्ण मठ और मिशन

प्रतिकुलाधिपति : स्वामी आत्मप्रियानन्द

कुलपति : स्वामी सर्वोत्तमानन्द

कुलसचिव : कीर्तिप्रदानन्द

परीक्षाधिकारी : स्वामी कालेशानन्द

सम्पर्क सूत्र –

ई-मेल : rkmveri.deemeduniversity@rkmm.org

❍❍❍

सन्दर्भ ग्रन्थ : १. शिक्षा (हिन्दी) लेखक- स्वामी विवेकानन्द पृष्ठ-६-७, ८, २६ **२.** विवेकानन्द साहित्य खण्ड ५ (हिन्दी) प्रकाशक- अद्वैत आश्रम, कलकत्ता पृष्ठ-५० **३.** विवेकानन्द साहित्य खण्ड-६ (विवेकानन्दजी के संग में लेखक - श्री शरच्चन्द्र चक्रवर्ती) (हिन्दी) प्रकाशक- अद्वैत आश्रम, कलकत्ता पृष्ठ-१२०-१२१ **४.** रेमिनिसेन्सेस ऑफ स्वामी विवेकानन्द (अंग्रजी) प्रकाशक - अद्वैत आश्रम, कलकत्ता पृष्ठ-२४३ **५.** विश्वविद्यालय की वेबसाईट- http://rkmvu.ac.in/ **६.** प्रबुद्ध-भारत अंग्रेजी मासिक पत्रिका अक्तूबर-१९६४ पृष्ठ-४४० **७.** वेदान्त-केसरी अंग्रेजी मासिक पत्रिका सितम्बर-१९६२ पृष्ठ-२४० **८.** यूनिवर्सिटी इयरबुक २००५-२०१०.

भजन एवं कविता

तब समझो शिवरात्रि सफल

डॉ. सत्येन्दु शर्मा

जब सुधि न रहे नश्वर तन की, लीला-चिन्तन हो सदा शिव की।
जो मन में जगे भक्ति अविचल, तब समझो शिवरात्रि सफल ।
जिह्वा पर शिव का नाम सदा, सुख-वैभव हो कि गहन विपदा।
कर दिया समर्पण भाव सकल, तब समझो शिवरात्रि सफल ।
उपवास नहीं केवल तन से, विषयों का सेवन तज मन से ।
निज कर्म करो बिनु चिन्तन-फल, तब समझो शिवरात्रि सफल।
अज्ञान तमस यह निशा काल, फैलाता दुर्गम मोह-जाल ।
जब शिवोपासना चार प्रहर, तब समझो शिवरात्रि सफल ।

कृष्ण प्रभु तुम वंशीधर हो

डॉ. ओमप्रकाश वर्मा

कृष्ण प्रभु तुम वंशीधर हो, तुम हो सकल जगत कल्यान।
अच्युत केशव दामोदर तुम, तुम ही परम पुरुष भगवान ।।
वासुदेव तुम द्रौपदीरक्षक, अधरों पर है चिर मुसकान ।
नील गगन सम श्यामल वपुधर, नेत्र तुम्हारे कमल समान।।
रूप तुम्हारा अनुपम सुन्दर, वचन तुम्हारे वेद-प्रमान।
योगीजन हैं तुम्हें देखते, करके अपने उर में ध्यान ।।
तुम ही हो इस जग के स्वामी, तुम ही हो प्रभु कृपानिधान ।
शरणागत पालक तुम ही हो, अखिल भुवन के तुम अभिमान।।
जिनके नित्य ध्यान से मिलता, उर में अति आनन्द महान ।
ऐसे नटनागर गिरिधारी, तुम ही हो प्रभु मेरे प्रान ।।

प्रगति-गीत

आनन्द तिवारी पौराणिक

राहों की हर बाधा हर । बढ़ें प्रगति-पथ पर ।।
वीरों की हम हैं संतान । मातृभूमि का रखेंगे मान ।।
दृढ़ संकल्प और साहस अपार। मुश्किल में न मानें हार।।
प्राण हथेली पर रखकर । बढ़ें प्रगति-पथ पर ।।
सीखा नहीं शीश झुकाना । मातृभूमि पर बलि हो जाना।।
प्रेम, एकता, शान्ति संदेश । जग को देता भारत देश ।।
उत्साह, उमंग, मन में भर । बढ़ें प्रगति-पथ पर ।।

पृष्ठ ३४९ का शेष भाग

जापान के दूसरे नगर ओसाका चले गए। जहाज का गन्तव्य ओसाका ही था। कुछ जापानी मित्रों के प्रयत्नों से राजाजी को ओसाका नगर में उतरने की अनुमति मिल गई। केवल जहाज के ठहरने के समय तक ही उन्हें ओसाका में ठहरने की अनुमति मिली थी।

कुछ दिन के लिए राजा महेन्द्रप्रताप मौलाना बरकतुल्ला को साथ लेकर अमेरिका के सेनफ्रांसिस्को नगर भी गए, जहाँ गदर पार्टी के लोगों ने इन दोनों का स्वागत किया। राजा महेन्द्रप्रताप के ओजस्वी विचारों से गदर पार्टी के लोग बहुत प्रभावित हुए।

अपना शेष समय राजा महेन्द्रप्रताप ने संसार के विभिन्न देशों में अपनी कल्पना के 'आर्यान्' देश की स्थापना के प्रचार में लगाया। वे आर्य लोगों के सभी एशियाई देशों को मिलाकर 'आर्यान' की कल्पना कर रहे थे।

राजा महेन्द्रप्रताप को भारत में आने की अनुमति सन् १९४६ में मिल सकी, जब अंग्रेजों ने भारत से अपने बोरिए-बिस्तर उठा लेने का निर्णय ले लिया। ○○○

सहनं सर्वदुःखानाम्

स्वामी सत्यरूपानन्द

पूर्व सचिव, रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द आश्रम, रायपुर (छत्तीसगढ़)

जप करने से मन में परिवर्तन होता है। यदि एक बार मन ऊपर उठ गया, तो उसके नीचे नहीं उतरेगा। जीवनभर भगवान का ही विचार करेंगे, तो अन्त में भगवान की ही याद आयेगी। भगवान व्यापारी नहीं हैं, वे तो भावग्राही जनार्दन हैं। हमको भगवान को छोड़ कुछ नहीं चाहिए। हमारे जीवन की एक ही सिद्धि है कि हमारा मन इष्ट के चरणों में लीन हो जाए। जप के साथ में चिन्तन होना चाहिए। आध्यात्मिक जीवन में निराशा के लिए स्थान नहीं है। अनावश्यक वृत्तियाँ तो आयेंगी ही, उनकी ओर ध्यान नहीं देना चाहिए। वे अपने आप चली जायेंगी। जप करने से समय का सदुपयोग होता है और सब विकारों का प्रभाव कम होता है। किसी से भी शत्रुता नहीं करनी चाहिये।

नि:स्वार्थ प्रेम आनन्दस्वरूप होता है, परम आनन्दमय होता है। हम जिनसे प्रेम करते हैं और जो हमसे प्रेम करते हैं, उनका प्रेम बहुत शक्तिशाली होता है। प्रेम में प्रतिदान की इच्छा नहीं होनी चाहिए। प्रेम में स्वार्थ की गन्ध तक नहीं होनी चाहिए। प्रतिदान की इच्छा रखने से प्रेम व्यापार हो जाता है। सच्चा प्रेम व्यापार नहीं होता। सच्चाई यह है कि संसार से व्यवहार करो और भगवान से प्रेम करो। किन्तु संसार से व्यवहार करते समय उससे चिपक नहीं जाना चाहिए। विपत्ति के समय हमेशा भगवान से प्रार्थना करनी चाहिये, क्योंकि वे ही हमारी रक्षा करते हैं। इसलिये हमें ईश्वरपरायण होना चाहिए, सत्तापरायण नहीं। हमारे जीवन का परम लक्ष्य है कि हम ईश्वरपरायण हो जायें। भगवान के प्रसाद से सभी प्रकार के दुख नष्ट हो जाते हैं। हमारे पूर्व जन्म के कर्मानुसार हममें ईश्वर के प्रति विश्वास, ईश्वर के प्रति शरणागति आयेगी।

सांसारिक सुविधायें जीवन की भौतिक उन्नति के लिए हैं। इसमें न फँसकर भगवान का भजन करें। जीवन एक संघर्ष है। शान्ति से रहने के लिये उत्तम उपाय है – सहन करें – **सहनं सर्वदुःखानाम् अप्रतिकारपूर्वकम्। चिन्ताविलापरहितं सा तितिक्षा निगद्यते।।** अपने ऊपर किसी भी बात की तत्काल प्रतिक्रिया नहीं होने देने से हम संघर्ष से बच सकते हैं। हमें सब कुछ अप्रतिकारपूर्वक सह लेना चाहिए। संसार से और संसार में किसी की आशा नहीं करना। सुखी जीवन भगवान के चरणों में ही है।

अपने मन को ठीक रखो। मन कहता है कि ये ठीक नहीं है, तो उसको करना नहीं चाहिए। भगवान का नाम लेकर उनसे प्रार्थना करनी चाहिए। जन कल्याण करने की इच्छा रहने से मुक्ति में बाधा आती है। ईश्वर समर्पित भाव रखकर कर्म करने से भगवान को पा सकते हो। इसलिए मन को निर्वासना होने के लिए भगवान के पास प्रार्थना करनी चाहिए। जब जीवन में कष्ट होता है, तब माँ के बारे में जितनी निकटता का अनुभव करते हैं, वैसे ही भगवान का नाम लेकर निकटता का अनुभव करना चाहिए। जीवन में जो सुख-दुख आता है, वह हमारे पूर्व जन्मों के अच्छे-बुरे कर्मों का फल है।

अपने गुरु से, अपने इष्ट से प्रार्थना करो कि प्रभु हमारी दुर्बलता को दूर करो, कष्ट को कम करो या हमें सहने की शक्ति दो। इसके लिए एक ही उपाय है शरणागति का भाव और प्रार्थना करने से मन हल्का होता है। संसार में अपना कोई नहीं है, भगवान ही केवल अपने हैं। भगवान का संसार ही अपना संसार है। संसार में कोई संतुष्ट नहीं है। संसार के प्रति अपनी वृत्ति बदल लो।

ईश्वर की योजना ही सफल होती है। वही होता है, जो भगवान ने ठीक करके रखा है। संसार शब्द का अर्थ है, जो हमेशा चलता रहता है। सुख-दुख आते-जाते रहते हैं। हमारे भीतर ऐसी शक्ति है, जिसे कोई भी हटा नहीं सकता। उसका अनुभव करने के लिये मन को शान्त और भगवान से प्रार्थना करो। संसार का बड़ा दुख भी भगवान के नाम-जप और प्रार्थना से कम हो जाता है। काल सबको प्रभावित करता है। काल के आगे किसी की नहीं चलती। महाकाल भगवान को पुकारना चाहिए, तभी संसार में सुखी रह सकते हैं। ○○○

रामराज्य का स्वरूप (६/४)

पं. रामकिंकर उपाध्याय

(पं रामकिंकर महाराज श्रीरामचरितमानस के अप्रतिम विलक्षण व्याख्याकार थे। रामचरितमानस में रस है, इसे सभी जानते हैं और कहते हैं, किन्तु रामचरितमानस में रहस्य है, इसके उद्घाटक 'युगतुलसी' की उपाधि से विभूषित श्रीरामकिंकर जी महाराज थे। उन्होंने यह प्रवचन रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द आश्रम, रायपुर के पावन प्रांगण में १९८९ में विवेकानन्द जयन्ती के उपलक्ष्य में दिया था। 'विवेक-ज्योति' हेतु इसका टेप से अनुलेखन स्वर्गीय श्री राजेन्द्र तिवारी जी और सम्पादन स्वामी प्रपत्त्यानन्द जी ने किया है। – सं.)

इसी प्रकार से श्रीभरत ने अनुभव किया कि कैकेयीजी ने जितने अनर्थ किए हैं, वह सब मेरी ममता के कारण ही किए हैं। इनके मन में यह जो तीव्र संस्कार है कि भरत मेरा पुत्र है और अपने पुत्र के लिये ही सब कुछ करना चाहिए, इस ममता ने ही इनको अन्धी बना दिया है। जब तक इनकी ममता को नष्ट नहीं किया जायेगा, इनकी ममता पर चोट नहीं पहुँचेगी, तब तक इनके अन्त:करण में वस्तुत: श्रीराम के प्रति जो सच्चा प्रेम उत्पन्न होना चाहिए, वह नहीं होगा। इसलिए उन्होंने ऐसा कठोर शब्द का प्रयोग किया।

भगवान राम जब चौदह वर्ष बाद लौटकर आए, तो एक दिन कैकेयीजी से कहा कि माँ मैं जानता हूँ कि चौदह वर्ष तुम्हें मेरी याद आती ही रही होगी, पर इन चौदह वर्षों में तुम्हें मेरी सबसे अधिक याद कब आई? तो कैकेयीजी ने यही कहा कि जिस दिन भरत ननिहाल से लौटकर आए और कठोर-से-कठोर शब्दों में मुझे फटाकारा, उस दिन तुम्हारी जैसी याद आई, वैसी याद कभी नहीं आई। क्यों? उन्होंने कहा, मैंने सोचा कि जिसे मैंने दूसरे का बेटा समझकर उसके साथ इतना अनर्थ किया, वह तो वन जाते समय इतना स्तुति करके गया और जिसे मैंने अपना बेटा समझकर उसके लिये इतना बड़ा अनर्थ किया, वह मेरी इतनी भत्सर्ना कर रहा है। तो पहचानने में ही मैंने भूल की, राम जैसा पुत्र तो कोई हो ही नहीं सकता। भरत चाहते भी यही थे। भरत सन्त हैं, सन्त व्यक्ति को अपनी ओर आकृष्ट नहीं करना चाहता, भगवान की ओर प्रेरित करना चाहता है। इसलिए वे चाहते हैं कि मेरे प्रति भले ही व्यक्ति की दोषबुद्धि हो जाये, मेरे प्रति भले ही दूरी उत्पन्न हो जाये, पर उसे श्रीराम के गुणों की स्मृति आवे, श्रीराम के स्वभाव की स्मृति आवे, उनके शील की स्मृति आवे। सचमुच बाल्यावस्था में श्रीभरत की खेल में भी वही वृत्ति थी और आज भी वही वृत्ति है। जब गेंद का खेल प्रारम्भ हुआ और जब गेंद भगवान श्रीराम ने श्रीभरत की ओर फेंकी, तब श्रीभरत ने उस गेंद पर कसकर प्रहार किया, तो देखनेवालों को ऐसा लगा कि श्रीराम जीतने की मुद्रा में नहीं हैं, पर श्रीभरत जीतना चाहते हैं, तभी तो गेंद पर इतना कसकर प्रहार कर रहे हैं। पर श्रीभरत के लिये वह गेंद का खेल गेंद का खेल नहीं था। वह तो मन का खेल था। गेंद मन है। गेंद जैसे कभी इधर कभी उधर उछलती रहती है, उसी तरह कभी इधर जाना, कभी उधर जाना, उछलते रहना, यही मन की प्रकृति है। आज मन के गेंद को लेकर भक्त और भगवान के बीच खेल चल रहा है। गेंद जब श्रीभरत की ओर आई, तो श्रीभरत को लगा कि जो मन प्रभु को छोड़कर संसार की ओर आवे, उसको ऐसा कसकर मारना चाहिए कि लौटने का नाम ही न ले। परिणाम क्या हुआ? वह प्रहार श्रीभरत इसलिए नहीं करते कि जीतना है, बल्कि मन को प्रभु के चरणों में ही पहुँचाना है। जब श्रीभरत गेंद को मारते हैं और वह लौटकर जाती है, तो प्रभु प्रसन्नता से गेंद को स्वीकार कर लेते हैं। किसी ने पूछ दिया, प्रभु यह क्या खेल हुआ? बोले, भरत जैसे सन्त ने जिस मन को भेजा हो, उसे लौटा देना, यह तो भक्तिशास्त्र के विपरीत होगा। इसलिए बड़ी प्रसन्नता है कि भरत जैसे सन्त का स्पर्श पाकर, उसकी प्रेरणा से जो मन शुद्ध हो चुका है, वह मन यदि मेरे चरणों में स्थान नहीं पा सकेगा, तो पाने का अधिकारी कौन है? बाल्यकाल से ही भगवान की ओर लौटाने पर उनका विश्वास है और आज भी माँ पर शब्दों का प्रहार करके उन्होंने वही किया। आगे चलकर स्पष्ट हो गया कि कैकेयी के प्रति उनका द्वेष नहीं था, शुद्ध कल्याण की भावना थी। उनको फटकार दिया।

कैकेयी के मुँह से तो शब्द ही नहीं निकला, उन्होंने अनुभव किया कि उनके मन में जितनी ग्लानि, जितनी पीड़ा, जितना पश्चाताप हुआ और रही सही जो कैकेयी की वृत्ति थी, वह पता चल गया। जब माताएँ सती होने के लिये प्रस्तुत हुईं, तो गुरुवशिष्ठ ने नहीं रोका, लेकिन श्रीभरत से बिदा लेने माताएँ सती होने के लिये चलीं, तो श्रीभरत ने तीनों को रोका।

गहि पद भरत मातु सब राखी। २/१६९-२

भरतजी ने तुरन्त कौशल्या अम्बा के चरणों को प्रणाम करके कहा, आप तो ज्ञानमयी हैं और आप इस अग्नि में सती होने को महत्त्व दें और ज्ञानाग्नि को महत्त्व न दें, इस अग्नि में आप आपने शरीर को अर्पित करें, यह तो आपके स्वरूप के अनुकूल नहीं है। मेरे कारण ही पिताजी ने शरीर का परित्याग किया और आप भी सती हो जाएँगी, तो इतने बड़े अपराध का भागी भरत ही माना जायेगा। आप तो श्रीराम की माँ हैं, करुणामयी हैं, आप ऐसा न कीजिए। कौशल्या अम्बा मान गईं।

भरतजी ने सुमित्रा अम्बा से कहा – माँ, आप तो दिव्य भक्तिमयी हैं, करुणामयी हैं, भक्त तो विरह की अग्नि में जलता है, सांसारिक अग्नि में नहीं जलता। चौदह वर्ष का राम का वियोग ही अग्नि है। उस अग्नि में जलना और उनकी प्रतीक्षा करना, मैं तो समझता हूँ कि जिस माँ ने अपने पुत्र को शरीर धर्म से ऊपर उठने का उपदेश दिया, वह माँ इस शरीर धर्म को महत्व नहीं देंगी, अपितु वे श्रीराम के लौट आने की प्रतीक्षा करेंगी। सुमित्रा अम्बा ने भी स्वीकार कर लिया।

अब सोचें, यदि श्रीभरतजी के मन में कैकेयीजी के प्रति द्वेष होता, तो वे उन्हें नहीं रोकते। वे सोचते कि इन दोनों माताओं को बचा लें, कैकेयी जल जाय, तो ही ठीक है। लेकिन नहीं, उनके मन में द्वेष नहीं था। उनका उद्देश्य कैकेयी का परम कल्याण था। इसलिए कैकेयी की ममता को नष्ट करने के लिए उन्होंने कठोर शब्दों का प्रयोग किया। आज कैकेयी के मन का क्या था? सती होने के पीछे उनकी मनोवृत्ति क्या थी? कैकेयी के प्रति समाज में इतनी घृणा थी और जब बेटे ने भी परित्याग कर दिया, अयोध्यावासी तो कैकेयी का मुँह भी नहीं देखना चाहते थे, तो कैकेयी को बड़ी ग्लानि हुई। उनको लगा सती हो जाने पर हमें इस अपयश से मुक्ति मिल सकती है। सती की बड़ी महिमा गाई जाती है। अगर मैं सती हो जाऊँगी, तो लोग मेरे अपराध को भूलकर सती के रूप में मेरा स्मरण करेंगे, यह वृत्ति लेकर ही वे सती होने की दिशा में बढ़ रही थीं। अपना अपयश और कलंक धोने की वृत्ति थी। श्रीभरत ने जिन मधर शब्दों में कौशल्या और सुमित्राजी को रोका, उन शब्दों में कैकेयीजी को नहीं रोका। उन्होंने कैकेयीजी के मिथ्या अहं को कि मैं सती कहलाऊँ, इस अहम् को नष्ट करने के लिए फिर से बड़े कठोर शब्दों में कैकेयीजी की भर्त्सना की। कैकेयीजी से पूछा, दोनों माताएँ सती होना चाहती हैं, यह तो समझ में आता है, पर आप महारानी, क्यों सती होना चाहती हैं, मैं नहीं समझ पाया। महाराज की मृत्यु हुई, तो उसका कारण तो आप ही बनीं। आपने इतना अनर्थ न किया होता, तो महाराज का शरीर न छूटा होता। शास्त्रों में तो मैंने सुना है कि स्त्रियाँ सती होकर पतिलोक में जाती हैं। तो क्या अभी कुछ बाकी है पिताजी को कष्ट देना, जो आप पति के लोक में भी उनके पास जाना चाहती हैं। आपने तो स्वयं ही उनको इस स्थिति में ला दिया कि वे आपका मुख भी नहीं देखना चाहते थे। अगर आप सती होकर वहाँ पहुँच गईं, तो उन्हें महान कष्ट होगा। इसलिए आप अगर उनके प्रति अपनी कृतज्ञता और प्रीति को प्रगट करना चाहती हैं, तो आपका कल्याण अग्नि में शरीर जला देने में नहीं है। इसीलिए आगे चलकर गोस्वामीजी संकेत करते हैं।

भरतजी ने अहंता और ममता पर प्रहार करके उनको रोक दिया। उसके बाद जब चित्रकूट गये, तब भी द्वेष का अभाव, यह नहीं कि सब माताओं को लेकर जा रहे हैं, तो कैकेयी को नहीं ले जाना है। न ! न ! उन्होंने तो विशेष रूप से कैकेयीजी से यह कहा कि मैं तो यह चाहता हूँ कि आप भी चलें। आपको तो अवश्य चलना चाहिए और पिताजी ने जो संकल्प अधूरा छोड़ा है, उसे पूरा करने में सहायक बनना चाहिये, तभी आपका पश्चाताप की अग्नि में जलना सार्थक है। इस तरह क्रिया के द्वारा पतन होने के स्थान पर क्रिया को ही भगवान की ओर मोड़ देना, यह श्रीभरत की विशेषता है। यही रामराज्य की भूमिका में उसका श्रीगणेश है। इसके बाद की चर्चा कल करेंगे अब बस इतना ही।

बोलिए सियावर रामचन्द्र की जय। **(क्रमशः)**

स्वतन्त्रता संग्राम में छत्तीसगढ़ की मिट्टी के सपूत

डॉ. जया सिंह

प्राध्यापक, आई. सी. एफ. आई विश्वविद्यालय, रायपुर

हमें अपने देश की आजादी एक कठिन पथ से गुजरते हुये बहुत-से बलिदान देने के बाद प्राप्त हुई। इस आजादी की कीमत हमने अपने शहीदों के खून और देशभक्तों के बलिदान से चुकाई है। इतिहास आज भी साक्षी है उनके देश-प्रेम और कर्त्तव्यनिष्ठा की पराकाष्ठा का, उनके बलिदान का। अपनी संघर्षशील यात्रा के बीच स्वयं को हँसते-हँसते देश के लिये समर्पित कर देना, इतना सहज नहीं है। जब हम इतिहास के पन्ने पलटते हैं, तो उन सभी की स्मृतियाँ ताजी हो जाती हैं। इसी क्रम में सबसे पहले हम बात करते हैं राज्य के प्रथम स्वतन्त्रता सेनानी, एक सच्चे देशभक्त और गरीबों के मसीहा के रूप में प्रसिद्ध **वीर नारायण सिंह** की। सोनाखान अर्थात् जहाँ सोने का भंडार धरती के गर्भ में भरा पड़ा है, इस राज्य की नींव बिंझवार गोड़ राजाओं ने १७वीं सदी में की थी। शहीद वीर नारायण सिंह ने अकाल से पीड़ित प्रजा को अनाज पहुँचाया, जब वे दाने-दाने को तरस रहे थे। इसके लिये उन्हें अंग्रेजों से युद्ध भी करना पड़ा था। उन्होंने अपने प्राणों की चिन्ता नहीं की।

१७९५ को सोनाखान में जन्मे वीरनारायण सिंह के पिता का नाम राम राय था। ये यहाँ के जमींदार थे। सन् १८५६ में सोनाखान (जिसका प्राचीन नाम सिंहगढ़ था) में भीषण अकाल पड़ गया, ऐसे समय वीरनारायण सिंह ने अकाल से पीड़ित लोगों की सहायता के लिये गोदाम के मालिक माखन बनिया से बहुत विनती की, किन्तु उसने अनाज नहीं दिया। तब वीरनारायण सिंह से लोगों की पीड़ा नहीं देखी गई। उन्होंने हजारों किसानों को साथ लेकर बनिया के गोदाम में अनाज लूटा और सबमें बाट दिया। इस घटना की शिकायत करते ही वीरनारायण सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया। बड़ी कठिनाई से इन्हें १८५६ में सम्बलपुर में गिरफ्तार कर रायपुर जेल में बन्द कर दिया गया। १८५७ की क्रान्ति में अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह किया। लोगों ने जेल में रह रहे वीर नारायण सिंह को अपना नेता माना और क्रान्ति में शामिल हो गए। अगस्त १८५७ में अपने कुछ साथियों और सैनिकों की सहायता से वीर नारायण सिंह अपने ३ मित्रों के साथ जेल से भाग गए और अपने गाँव सोनाखान पहुँचकर ५०० बंदूकधारियों की सेना तैयार की और अंग्रेजी सैनिकों से भीड़ गए। इस विरोध से अंग्रेजी सरकार ने अपने अत्याचार जनता पर और बढ़ा दिए। अपने लोगों की रक्षा के लिए वीरनारायण सिंह ने आत्मसमर्पण कर दिया। इसके बाद इन्हें मौत की सजा सुना दी गई। १० दिसम्बर, १८५७ को अंग्रेजी सरकार ने उन्हें रायपुर के जयस्तम्भ चौक पर फाँसी पर लटका दिया और उनके मृत शरीर को तोप से उड़ा दिया गया।

हम बात कर रहे हैं देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर देनेवाले अमर वीर सपूतों की जिन्होंने आजादी में अनूठा योगदान दिया, जिसे इतिहास कभी विस्मृत नहीं कर सकता। ऐसे ही एक वीर सपूत क्रान्तिकारी थे **शहीद गुंडाधुर**। बस्तर के छोटे से गाँव में उनका पालन-पोषण हुआ। इनका अपने देश और लोगों के प्रति प्रेम और समर्पण बहुत अधिक था। इन्होंने अंग्रेजों को इतना त्रस्त किया कि वे कुछ समय गुफाओं में छिप गए। इन्होंने अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिए थे। इन्हें तीरंदाजी के लिये उत्कृष्ट पुरस्कार दिया गया। आज भी शहीद गुंडाधुर बस्तर के लोगों के मानस में जीवित हैं। इतिहास के पन्ने हमारे अमर शहीदों की वीरगाथा से भरे

पड़े हैं। परतन्त्रता की जंजीरों में जकड़े गुण्डाधुर स्वतन्त्र जीवन जीना चाहते थे, लेकिन कुछ आवाजें गुंडाधुर के साथ मिलकर अंग्रेजी शासन को खदेड़ना चाहती थीं। इन लोगों ने अंग्रेजों से लोहा लिया और १९१० में अंग्रेजी सत्ता को

शहीद गुंडाधुर

उखाड़ फेंकने का निश्चय कर लिया। सन् १८५७ की क्रान्ति में इन्होंने बस्तर के ब्रिटिश सरकार की नींव हिला दी थी। गाँव-गाँव तक लाल मिर्च, मिट्टी का धनुष बाण और आम की टहनियाँ लोगों के घर में इसलिए दिया, ताकि लोग सचेत हो जाएँ। अपने बस्तर की अस्मिता को बचाने के लिए आगे आएँ। इस संकल्प से लगभग २५,००० लोगों को अपने प्राणों के बलिदान करने पड़े। आज भी उनकी गाथा बस्तर के लोक गीतों में गायी जाती है। आज भी उस क्रान्ति की पीड़ा वहाँ के लोगों को व्यथित कर देती है।

शहीद गुंडाधुर को विद्रोहियों का सर्वमान्य नेता माना जाता था। एक सामान्य परिवार में जन्मे गुंडाधुर ने कभी स्कूल का मुख नहीं देखा था, न ही बाह्य जगत की ओर पैर बढ़ाये। ३५ वर्ष की आयु में उन्होंने अंग्रेजों से लोहा लिया। परिस्थिति ऐसी हो गई थी कि अंग्रेजों को उनसे छिपने के लिये जंगल में बने गुफाओं पर आश्रित होना पड़ा था।

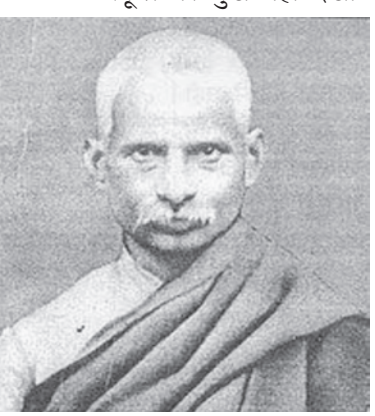

पंडित माधवराव सप्रे

पंडित माधवराव सप्रे का जन्म १९ जून, १८७१ में पथरिया, दमोह (मध्यप्रदेश) में हुआ। इन्होंने एक साहित्यकार के रूप में हिन्दी की पहली लघु कथा 'एक टोकरी भर मिट्टी' लिखी। बिलासपुर से इन्होंने मीडिल स्कूल तक पढ़ाई की। १८८७ में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद हाई स्कूल रायपुर से किया। इसके आगे उच्च शिक्षा के लिए ये जबलपुर आ गए। १८८९ में इनका विवाह हो गया। सन् १८९८ में स्नातक की परीक्षा उर्त्तीण की। १८९९ से ये अध्ययनकार्य में संलग्न हो गए, लेकिन मन पत्रकारिता में रमा था, इसलिए १९०० ई. में इन्होंने 'छत्तीसगढ़ मित्र' नामक मासिक पत्र आरम्भ किया। इन्होंने इसका प्रकाशन छत्तीसगढ़ में हिन्दी और शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए अपने मित्र के साथ मिलकर किया। यह तीन वर्ष तक चलता रहा। किन्तु कई आर्थिक कठिनाइयों के कारण इसे बन्द कर दिया गया। पंडित माधवराव सप्रे राष्ट्रभाषा हिन्दी के उन्नायक, प्रखर चिन्तक, विज्ञ सम्पादक एवं स्वन्त्रता संग्राम सेनानी होने के साथ-साथ सार्वजनिक कार्यों के लिये पूरे समर्पण के साथ कार्यकर्ताओं की शृंखला तैयार करनेवाले प्रेरणाशील एवं मार्गदर्शक थे। जीवन-संघर्ष, साहित्य-साधना और हिन्दी में विकास के योगदान हेतु माधव राव सप्रे का योगदान अत्यन्त अनूठा है।

भारत के एक सफल स्वन्त्रता सेनानी थे **हनुमान सिंह**, जिन्हें छत्तीसगढ़ का मंगल पाण्डे कहा जाता है। उनका जन्म १८२२ में हुआ था। उन्होंने रायपुर के तृतीय रेजीमेंट के एक फौजी अफसर सार्जेण्ट मेजर सिडबेल की हत्या कर दी थी। वास्तव में उस समय रायपुर में फौजी छावनी थी, जिसका नाम था तृतीय रेगुलर रेजीमेण्ट। ठाकुर हनुमान सिंह इसमें मैग्जीन लश्कर पद पर आसीन थे। उनके मन में अंग्रेजी शासन के प्रति घृणा और क्रोध हो गया था। सन् १८५७ में अपनी ३५ वर्ष की आयु में उन्होंने सिडबैल पर घातक प्रहार किया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। यह बात पूरी छावनी में आग की तरह फैल गई। ६ घण्टों तक हनुमान सिंह अंग्रेजों से लोहा लेते रहे। किन्तु धीरे-धीरे इनके कारतूस समाप्त हो गए। अवसर मिलते ही हनुमान सिंह फरार हो गए। किन्तु उनके बहुत से साथियों को अंग्रेजों ने बन्दी कर लिया। इसके बाद हनुमान सिंह कभी अंग्रेजों की पकड़ में नहीं आए। १८५८ को उनके सभी क्रान्तिकारी साथियों को फाँसी दे दी गई, हालाँकि हनुमान सिंह को खोजने का प्रयास ब्रिटिश सरकार ने बहुत किया, किन्तु अन्ततः कोई सूचना उनके बारे में नहीं मिली। ○○○

गीतातत्त्व-चिन्तन (५)

ग्यारहवाँ अध्याय

स्वामी आत्मानन्द

(ब्रह्मलीन स्वामी आत्मानन्द जी महाराज रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द आश्रम, रायपुर के संस्थापक सचिव थे। उनका 'गीतातत्त्व-चिन्तन' भाग-१ और २, अध्याय १ से ६वें तक पुस्तकाकार प्रकाशित हो चुका है और लोकप्रिय है। ८वाँ अध्याय 'विवेक ज्योति' के सितम्बर, २०१६ से नवम्बर, २०१७ अंक तक प्रकाशित हुआ था। अब प्रस्तुत है ११वाँ अध्याय, जिसका सम्पादन ब्रह्मलीन स्वामी निखिलात्मानन्द जी ने किया है। – सं.)

धृतराष्ट्र के मन में कृष्ण के प्रति उतनी श्रद्धा नहीं है, जितनी वे दिखाते हैं। उनके मन में भगवान के प्रति विद्रोह का ही भाव रहता है। कौरव-सभा में जब भगवान ने अपना विराटरूप दिखाया था, तब दुर्योधन ने भी उसको देखा था। भीष्म पितामह ने दुर्योधन को बताया था कि श्रीकृष्ण एक दिव्य पुरुष हैं और ये दिव्यपुरुष साक्षात् भगवान जब पाण्डवों के साथ हैं और उनकी ओर से सन्धि का प्रस्ताव लेकर भी आए हैं, तब इनके कहने पर तुम्हें पाण्डवों से सन्धि कर लेनी चाहिए। उसी में दोनों पक्षों का कल्याण है। दुर्योधन ने उत्तर दिया – मैंने ऐसे बहुत बाजीगर देखे हैं। कृष्ण को वह भगवान नहीं, बाजीगर ही मानता है, जो चाहें, जब चाहें, जैसा रूप बना सकते हैं। तात्पर्य यह है कि जिसके मन में उनके प्रति श्रद्धा है, उसको तो विराटरूप में भगवान के दर्शन हो जाते हैं। जो उपयुक्त पात्र है, वह तो उनके उस रूप के दर्शन का लाभ करता है और जो उपयुक्त पात्र नहीं है, वह उससे लाभ नहीं उठा सकता, वह दर्शन तो पाता ही नहीं, अपितु उसकी उनके प्रति विपरीत धारणा भी बन जाती है। दुर्योधन ने लाभ नहीं उठाया पर अर्जुन और संजय उस दृश्य को देखकर कृतकृत्य होते हैं। उनके ऐश्वर्यमय रूप के लिए परम शब्द का प्रयोग करने का अर्थ है कि वह रूप बाजीगरी का रूप नहीं था। वह तो बाजीगरी से ऊपर, समस्त माया से भी ऊपर था। उस रूप को देखने के अधिकारी सभी नहीं थे। वह रूप केवल दिव्य चक्षुओं से ही देखा जा सकता था। इसीलिए अर्जुन और संजय उस रूप को देख सके। बाजीगर का रूप भी ऐश्वर्यमण्डित होता है और भगवान का रूप भी ऐश्वर्यमण्डित होता है, पर भगवान के ऐश्वर्यरूप का विशेषण है – परमं। इसका अर्थ यह हुआ कि वह सम्मोहन द्वारा दिखाया गया बाजीगरी का रूप नहीं बल्कि यथार्थ में भगवान जैसे हैं; उनका जो विराट स्वरूप है, वह यह है कि जिस स्वरूप को चर्मचक्षुओं द्वारा देखा नहीं जा सकता, जिसे देखने के लिए दिव्य नेत्रों की आवश्यकता है, सूक्ष्म दृष्टि की आवश्यकता है और ऐसी दृष्टि जब भगवान की कृपा से प्राप्त होती है, तब जीव उनका रूप देखने में समर्थ होता है।

विश्वतोमुखम् : भगवान समस्त विश्व में व्याप्त

अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम्।
अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम्।।१०।।
दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम्।
सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम्।।११।।

अनेकवक्त्रनयनम् अनेकाद्भुतदर्शनम् (अनेक मुख और नेत्रों से युक्त, अनेक अद्भुत दर्शनोंवाले) अनेकदिव्याभरणम् दिव्यानेकोद्यतायुधम् (दिव्य आभूषणों से युक्त, दिव्य शस्त्रों को हाथ में उठाए) दिव्यमाल्याम्बरधरम् दिव्यगन्धानुलेपनम् (दिव्य वस्त्र और मालाधारी, दिव्य गन्ध लेपित) सर्वाश्चर्यमयम् अनन्तम् (आश्चर्यमय, सीमारहित) विश्वतोमुखम् देवम् (सर्वत्रमुखवाले परमेश्वर को अर्जुन ने देखा)।

''अनेक मुख और नेत्रों से युक्त, अनेक अद्भुत दर्शनोंवाले, दिव्य आभूषणों से युक्त, दिव्य शस्त्रों को हाथ में उठाए।''

''दिव्य वस्त्र और मालाधारी, दिव्य गन्धलेपित, आश्चर्यमय, सीमारहित, सर्वत्रमुखवाले परमेश्वर को अर्जुन ने देखा।''

भगवान का वह रूप कैसा था? उनके अनेक मुँह थे। अनेक उनकी आँखें थीं। ऐसे अद्भुत दर्शन अनेक थे। जब हम कुछ देखते हैं और उसका ठीक-ठीक वर्णन करने में असमर्थ होते हैं, क्योंकि वह हमारे इन्द्रिय-ज्ञान की सीमा से बाहर होता है। तब उसके लिए कह देते हैं – अद्भुत। अनेक कहने का अर्थ यह है कि गिन तो सकते नहीं, पर हैं बहुत-से। इसलिए अनेक कह दिया। अनेक दिव्याभरण थे, अनेक उद्यत – उठे हुए दिव्य शस्त्र थे। दिव्य माला पहने हुये थे। दिव्य वस्त्र धारण किये हुए थे। दिव्यगंध का अनुलेप लगाया हुआ था। वे अनन्त आश्चर्यमय देव हैं, जिनके लिए विश्व के सारे मुख उनके अपने मुख हैं। ऐसे भगवान को वे देखते हैं।

गीता में भगवान के दिव्यरूप का जो वर्णन दिया गया है, वह बड़ा ही सुललित वर्णन है। कहते हैं – अनन्तरूप हैं। वे सब अगणित चेहरे एक-दूसरे से मिलते भी नहीं थे, एक समान नहीं थे। एक बार चेहरा कह देने से नयन तो उसके साथ रहेंगे, पर यहाँ नयन का अलग से उल्लेख करने का अर्थ यही है कि जैसे चेहरे भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं – वराह का, मीन का, कच्छप का, नृसिंह का इत्यादि, वैसे ही नयन भी भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं। आश्चर्य की बात यह है कि अर्जुन भगवान के दिव्य स्वरूप में अनन्त प्रकार की विभिन्न आकृतियों को देख रहा है, तब भी यह जान रहा है कि वह भगवान को ही देख रहा है। उसी ईश्वर को देख रहा है, जिसे वह अपना सखा मानता रहा है, कृष्ण कहकर पुकारता रहा है। अब उसे अपनी धृष्टता पर ग्लानि हो रही है कि इतने दिनों उस दिव्य विभूति को न पहचानकर भगवान को वह अपने समकक्ष मानता रहा। इतने विभिन्न रूप और आकृतियाँ देखते हुए भी अर्जुन की प्रतीति बनी हुई है कि वह भगवान को ही देख रहा है। वही एक भगवान उन समस्त रूपों में ओत-प्रोत होकर व्याप्त हैं, यही व्यापक रूप दर्शन विराट दर्शन है। विराट दर्शन का अर्थ यही है कि हम अनन्त विभेद देखें, पर इस अनन्त विभेद में उस एक को भी देखें। ज्ञान की चरम स्थिति यही है कि जब हम अनेकता में एकता को देखें।

अर्जुन को जो दर्शन मिला, वही दर्शन संजय को भी मिला। उस विराटरूप के विषय में धृतराष्ट्र को बताते हुए संजय भगवान के दिव्य आभरणों का भी वर्णन करता है। इन आभरणों का ध्यान में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। हम भी भगवान के अर्चा-विग्रह को आभूषणों से सजाते हैं, उसका तात्पर्य यह है कि हमारा मन जाकर भगवान में रम जाए। बाहरी विषयों के आकर्षण से छूटकर भगवान के इस दिव्य सौन्दर्य में उलझ जाए। मनुष्य का मन स्वाभाविक रूप से ही सौन्दर्य का पुजारी होता है। जिधर सौन्दर्य देखता है, उधर ही झुकता है। संजय ने कहा – **विश्वतोमुखम्।** अर्थात् वे सब जगह व्याप्त हैं। सारे मुख मानो भगवान के ही मुख हैं।

ईश्वर-कृपा से आत्मज्योति का प्रकाश

दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता।
यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः।।१२।
तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा।
अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा।।१३।।
ततः स विस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनञ्जयः।
प्रणम्य शिरसा देवं कृताञ्जलिरभाषत।।१४।।

दिवि सूर्यसहस्रस्य युगपत् (आकाश में हजारों सूर्यों के एक साथ) उत्थिता भा भवेत् (उदित होने से जो प्रकाश हो) सा तस्य महात्मनः (वह उस परमात्मा की) भासः सदृशी (आभा के सदृश) यदि स्यात् (कदाचित् ही हो) तदा पाण्डव (उस समय अर्जुन ने) अनेकधा (अनेक आकृतियोंवाले) कृत्स्नम् जगत् देवदेवस्य (सम्पूर्ण जगत को भगवान के) तत्र शरीरे एकस्थम् अपश्यत् (शरीर में) प्रविभक्तम् अपश्यत् (कई भागों में बँटा देखा) ततः सः धनंजयः विस्मयाविष्टः (तब अर्जुन आश्चर्यचकित) हृष्टरोमा (और पुलकित हो) देवम् शिरसा प्रणम्य (भगवान को सिर नवाकर) कृतांजलिः अभाषत (दोनों हाथ जोड़कर बोला)।

''आकाश में हजारों सूर्यों के एक साथ उदित होने से जो प्रकाश हो, वह उस परमात्मा की आभा के सदृश कदाचित् ही हो।''

''उस समय अर्जुन ने अनेक आकृतियोंवाले सम्पूर्ण जगत को भगवान के शरीर में कई भागों में बँटा देखा।''

''तब अर्जुन आश्चर्यचकित और पुलकित हो भगवान को सिर झुकाकर दोनों हाथ जोड़कर बोला।''

भगवान का रूप ऐसा है कि यदि सैकड़ों, हजारों सूर्य एक साथ आकाश में उग जाएँ, तो जैसी प्रभा होगी, वैसी ही प्रभा भगवान के रूप से बिखरी। अर्जुन को दिव्यचक्षु प्राप्त हैं, इसीलिए ऐसी अनन्त प्रभा से भी उसकी आँखें चौंधियाती

शेष भाग पृष्ठ ३८० पर

स्वातन्त्र्य योद्धा : सुभाषचन्द्र बोस

अवधेश प्रधान, पूर्व प्रा. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का जन्म २३ जनवरी, १८९७ को कटक (उड़ीसा) में हुआ था। उनकी आरम्भिक शिक्षा कटक में और कॉलेज स्तर की शिक्षा कलकत्ता में हुई थी। १५ वर्ष की आयु में उन पर श्रीरामकृष्ण और स्वामी विवेकानन्द का प्रभाव पड़ा और आजीवन बना रहा। आध्यात्मिक रुचि के साथ-साथ उनका झुकाव स्वतन्त्रता संग्राम की ओर हुआ और देशभक्ति की भावना उनके मन में गहरी होती गई। वे अरविन्द की पत्रिका 'आर्य' नियमित रूप से पढ़ते थे। समाज-सेवा की गतिविधियों में भी छात्रावस्था से ही भाग लेने लगे थे। १९१४ में उन्होंने आध्यात्मिक गुरु की खोज में ऋषिकेश, हरिद्वार, मथुरा, वृन्दावन, वाराणसी, गया आदि की यात्रा की। १९१९ में कलकत्ता विश्वविद्यालय से उन्होंने दर्शन (ऑनर्स) विषय के साथ प्रथम श्रेणी बी.ए. किया। १९२० में इंग्लैंड से आई.सी.एस. की प्रतियोगिता में चौथा स्थान प्राप्त किया। फिर आई.सी.एस. की प्रतिष्ठित नौकरी से त्यागपत्र देकर भारत चले आए और देशबन्धु चितरंजन दास के नेतृत्व में स्वतन्त्रता संग्राम के एक अनुशासित सैनिक के रूप में काम करने लगे। उस समय देश में असहयोग आन्दोलन चल रहा था। विदेशी वस्त्रों की होली जलाई जा रही थी। विधानसभा, अदालतों और शिक्षा संस्थाओं से, सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देने का सिलसिला जारी था। सुभाष ने इस आन्दोलन में योग देने के साथ-साथ प्रिंस ऑफ वेल्स के आगमन का विरोध किया। १० दिसम्बर, १९२१ को वे पहली बार गिरफ्तार हुए और तब से कुल ग्यारह बार जेल गये।

जब मोतीलाल नेहरू और चितरंजन दास ने 'स्वराज पार्टी' बनाई और विधानसभाओं और नगर पालिकाओं में प्रवेश का नारा दिया, तब कलकत्ता नगर निगम में पार्टी की शानदार जीत हुई। चितरंजन दास महापौर बने और सुभाषचन्द्र उनके अधीन मुख्य कार्यकारी अधिकारी। तब उनकी उम्र केवल २७ वर्ष थी। १९२५ में गिरफ्तार करके उन्हें मांडले (बर्मा) जेल में रखा गया था।

दो वर्षों बाद स्वास्थ्य कारणों से मई, १९२७ में उनकी रिहाई हुई। पूरे बंगाल में छात्रों और युवकों को संगठित होने की उन्होंने प्रेरणा दी। ३० वर्ष की उम्र में वे बंगाल, प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष हुए और ३३ वर्ष की उम्र में कलकत्ता नगर के महापौर। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में जवाहर लाल नेहरू और शोएब कुरेशी के साथ वे महासचिव हुए और अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन काँग्रेस के अध्यक्ष भी। १९३८ में काँग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने गए, लेकिन १९३९ में गाँधीजी द्वारा घोषित प्रत्याशी पट्टाभि सीता रमैया के विरुद्ध चुनाव लड़ गए, जिसमें उनकी जीत हुई और सीता रमैया हार गए। पुरानी कार्यकारिणी के स्थान पर सुभाषबाबू नई कार्यकारिणी न बना सके और उन्हें अध्यक्ष पद से अलग होना पड़ा। उन्होंने फारवर्ड ब्लॉक की स्थापना की, वामपंथी शक्तियों का नेतृत्व किया और स्वामी सहजानन्द के साथ मिलकर दूसरे महायुद्ध में समझौता विरोधी नीति के अनुसार अंग्रेजों को 'न एक पाई न एक भाई' का नारा बुलन्द किया। इस आन्दोलन के दौरान जो गिरफ्तारी हुई, उसमें उन्होंने आमरण अनशन की धमकी देकर दिसम्बर, १९४० में जेल से मुक्ति पाई।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

१७ जनवरी, १९४१ को कलकत्ते

से उन्होंने नाटकीय ढंग से पलायन किया और दस सप्ताह के बाद बर्लिन पहुँचे। अब उनकी नीति थी – भारत के बाहर से अंग्रेजी राज के विरूद्ध आजादी की लड़ाई को तेज करना। इसी उद्देश्य से बाहर दो वर्ष जर्मनी में रहने के बाद १९४३ में वे जापान पहुँचे और वहाँ से आश्वासन प्राप्त करके उन्होंने द.पू. एशिया के देशों में रहनेवाले भारतीयों की सहायता से आजाद हिंद फौज को संगठित किया और १८ मार्च, १९४४ को बर्मा के रास्ते सीमा पार करके मणिपुर तक पहुँच गए। जुलाई में घनघोर वर्षा और बाढ़ के कारण परिस्थितियाँ अत्यन्त प्रतिकूल हो गईं। नेताजी का दिल्ली चलो अभियान विफल हो गया। पहले जर्मनी की हार हुई, फिर जापान की। अगस्त, १९४५ में महायुद्ध समाप्त हो गया। १७ अगस्त, १९४५ को सैगोन से जापान जाते समय हवाई जहाज दुर्घटना में नेताजी की मृत्यु हो गई। लेकिन बहुत लोगों ने इस दुर्घटना में उनकी मृत्यु पर विश्वास नहीं किया। ... बोस का आयोग ने व्यापक जाँच-पड़ताल के बाद जो रपट दी, उसने भी इस दुर्घटना में उनकी मृत्यु को सच प्रमाणित किया। फिर भी इस दुर्घटना से उनके बच निकलने और कभी यहाँ तो कभी वहाँ, साधु-वेश में गुप्तवास की रहस्यमय और चामत्कारिक किंवदन्तियाँ चलती ही रहीं।

आमतौर पर सुभाष बाबू के बारे में, आजादी की लड़ाई में उनके योगदान के बारे में जो बातें लिखी और कही जाती हैं, उनमें अक्सर भावुकता का अंश अधिक रहता है और किंवदन्तियाँ भी उनकी वास्तविक छवि को आच्छादित या भ्रमित करती हैं। कोरे भावोच्छ्वास या रहस्य, रोमांच के बजाय आवश्यकता है उनके विचारों और कार्यों के वस्तुनिष्ठ और विवेकपरक अध्ययन और विवेचन की, ताकि आज की परिस्थिति में उन प्रासंगिक पहलुओं की पहचान कर सकें, जो हमारे राष्ट्रीय जीवन की उन्नति के लिए आवश्यक है।

सबसे पहले तो उनकी देशभक्ति, नि:स्वार्थ आत्मत्याग और स्वतन्त्रता के लक्ष्य के प्रति उनकी समर्पण की भावना अतुलनीय है। उनके पत्रों और भाषणों का एक-एक शब्द इसकी गवाही देता है। १६ फरवरी, १९२१ और २ मार्च १९२१ को कैम्ब्रिज से देशबन्धु चितरंजन दास के नाम पत्र लिखकर उन्होंने कांग्रेस में रहकर देशसेवा का अवसर प्रदान करने के लिये निवेदन किया और उसी समय अपने पिता और भाई को भी पत्र द्वारा अपने निश्चय की जानकारी दी। तब से लेकर आखिरी साँस तक देश की स्वतन्त्रता ही उनकी आराध्या बनी रही। दिल्ली चलो अभियान की असफलता और जर्मनी-जापान की हार के बाद भी १५ अगस्त, १९४५ को आजाद हिन्दफौज के सिपाहियों से उन्होंने कहा था, ''दिल्ली पहुँचने के अनेक रास्ते हैं और दिल्ली अभी भी हमारा अन्तिम लक्ष्य है ... भारत आजाद होगा और जल्दी ही आजाद होगा।''

दूसरे, वे राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिये सभी धर्मों के अनुयायियों के बीच प्रेम-सद्भावना के समर्थक थे। उन्होंने श्रीरामकृष्ण और स्वामी विवेकानन्द का उल्लेख करते हुए २१ जुलाई, १९२९ को हुगली जिला छात्र-सम्मेलन के सभापति पद से कहा था, ''रामकृष्ण परमहंस ने अपनी साधना के द्वारा जो सर्वधर्म-समन्वय कर दिखाया था, वही स्वामीजी के जीवन का मूलमन्त्र बना और वही भविष्य के भारत के मूलमन्त्र का भी आधार हुआ। इस धर्म समन्वय और सभी मतों में सहिष्णुता के बिना हमारे विविधतापूर्ण इस देश में राष्ट्रीय सौंध स्थापित नहीं हो सका।[१] इससे स्पष्ट है कि सर्वधर्म समन्वय उनके लिए अंग्रेजी राज के विरुद्ध आजादी की लड़ाई के दौरान अपनाई जानेवाली कोई कोरी नीति नहीं, बल्कि 'भविष्य के भारत के मूलमंत्र का भी आधार' था। उसी भाषण में उन्होंने आगे कहा कि ''स्वामी विवेकानन्द ने सर्वधर्म समन्वय प्रचार के द्वारा भारतीय राष्ट्रीयता की आधारशिला स्थापित की।''[२] यह भी स्पष्ट है कि सर्वधर्म समन्वय की आधारशिला पर स्थापित भारतीय राष्ट्रीयता, सुभाष बोस के लिये 'हिन्दू राष्ट्रीयता' नहीं हो सकती थी, वह भविष्य का भारत 'हिन्दू राष्ट्र'।

तीसरे, उन्होंने 'सम्पूर्ण और सर्वांगीण स्वतन्त्रता' के सगुण-साकार रूप को सामने रखा। उन्होंने गाँधीजी द्वारा जनसाधारण को आन्दोलन में खींच लाने की प्रंशसा करते हुए देशबन्धु चितरंजन दास के लाहौर वाले भाषण की याद दिलाई – स्वराज हम चाहते हैं मुट्ठीभर लोगों के लिए नहीं, सर्वसाधारण के लिए है। रामकृष्ण और विवेकानन्द ने 'एक' और 'अनेक' के बीच समन्वय का जो आदर्श प्रस्तुत किया था, सुभाष बाबू उसी को राष्ट्रीय जीवन में स्थापित करना चाहते थे। यह वह दृष्टि है, जो विविधता में एकता के सूत्र खोज लेती है, लेकिन विविधता को खोकर एकता स्थापित करने के बजाय विविधता को पूरा अवसर और अवकाश देते हुए, एकतंत्र के बजाय लोकतंत्र के आधार पर व्यापक राष्ट्रीयता एकता स्थापित करने का लक्ष्य सामने रखती है। उनके लिये स्वाधीनता का अर्थ केवल राजनीतिक मुक्ति नहीं, वरन् सामाजिक और आर्थिक मुक्ति भी थी। उन्होंने

लक्ष्य किया कि देश के तीन वर्ग अब भी निष्क्रिय जैसे पड़े हैं – नारी वर्ग, तथाकथित अनुन्नत वर्ग एवं किसान और मजदूर वर्ग। इन तीनों वर्गों की ओर ध्यान आकृष्ट करके उन्होंने छात्रों से स्वामी विवेकानन्द के-से स्वर में आह्वान किया, 'इनके बीच जाओ और कहो – तुम भी मनुष्य हो, मनुष्यत्व के पूर्ण अधिकारी हो तुम, अतएव उठो, जागो, निष्क्रियता से उबरो, अपना अधिकार छीन लो।[३] वे जाति-पाति के परे सभी के लिये समान अधिकार समान अवसर और समान सुविधावाले स्वाधीन भारत की प्रतिष्ठा करना चाहते थे। उन्होंने अपना यह भाषण समाप्त करते हुए छात्रों को संदेश दिया।

''साम्यवाद और स्वाधीनता के मन्त्र-प्रचार के निमित्त तुम गाँवों में बिखर जाओ। चीन और रूस के छात्रों की भाँति किसान की झोपड़ियों तथा मजदूर की गन्दी बस्तियों में जाओ। उन्हें जगाओ और जाओ मातृ जाति के समीप जो शक्तिस्वरूपा हैं, किन्तु समाज के दबाव से जो 'अबला' हो गई हैं, उन्हें जगाओ।''[४]

१९ अक्तूबर, १९२९ को लाहौर छात्र सम्मेलन के सभापति के आसन से भी उन्होंने स्वाधीनता का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा था ''स्वाधीनता का अर्थ मैं समझता हूँ, समाज और व्यक्ति और नर-नारी, धनी और दरिद्र सबके लिये स्वाधीनता, मात्र राष्ट्रीय बन्धन से मुक्ति नहीं, बल्कि यह है आर्थिक समानता, जातिभेद और समाजिक अभिचार का निराकरण और सांप्रदायिक संकीर्णता एवं रूढ़ित्याग का मंत्र भी।''[५] वे स्वयं व्यक्तिगत जीवन में रामकृष्ण-विवेकानन्द की भावधारा से अनुप्राणित थे और गहरे और सच्चे अर्थों में आध्यात्मिक थे। इसीलिए धर्मान्धता, रूढ़िवाद और साम्प्रदायिकता का हमेशा विरोध किया।

२० फरवरी, १९२६ को मांडले जेल से देशबन्धु की जीवनी के लेखक हेमेन्द्र कुमार दासगुप्त को चितरंजन दास के वचनों को विशेष रूप से याद दिलाया था कि ''वे धर्म से वैष्णव थे, लेकिन उनके हृदय में सभी धर्मों के लोगों के लिए स्थान था'' और वे ''संस्कृति के द्वारा हिन्दू धर्म और इस्लाम के बीच मैत्री स्थापित करने का प्रयत्न करते रहे।''[६] सर्वधर्म समभाव की यह शिक्षा उन्होंने धर्म के क्षेत्र में श्रीरामकृष्ण और स्वामी विवेकानन्द से ग्रहण की थी, तो राजनीति के क्षेत्र में देशबन्धु चितरंजन दास से। ७ जनवरी, १९४२ में उन्होंने जो आजाद हिन्द रेडियो स्थापित किया, उसके २० सहयोगियों में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और पारसी थे। प्रसारण अंग्रेजी, हिन्दुस्तानी, बंगला, फारसी, तमिल, तेलगू और पश्तो भाषाओं में होता था। उन्होंने 'जय हिन्द' का नारा लोकप्रिय बनाया। कुछ और नारे थे जैसे – इन्कलाब जिन्दाबाद और आजाद हिन्दुस्तान जिन्दाबाद। बंगाली होने के कराण तत्सम प्रधान हिन्दी उनके लिये स्वाभाविक होती, लेकिन उन्होंने जनसाधारण का ध्यान रखकर गाँधीजी की तरह 'हिन्दुस्तानी' को अपनाया और अंडमान में अपनी अस्थायी सरकार का तिरंगा झंडा फहराने के बाद हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्रदान किया। आजाद हिन्द फौज में उन्होंने डॉ. लक्ष्मी स्वामी नाथन् के नेतृत्व में झाँसी की रानी रेजिमेन्ट स्थापित की। कुछ ब्रिगेडों के नाम थे – गाँधी ब्रिगेड, नेहरू ब्रिगेड, आजाद ब्रिगेड। फौज की एकता को ध्यान में रखते हुए एक ही साझा किचेन की व्यवस्था की गई। तत्कालीन छुआ-छूत की प्रथा को देखते हुए यह एक क्रान्तिकारी कदम था। उनकी पुकार पर सिंगापुर, थाईलैंड और बर्मा आदि में रहनेवाले सभी धर्मों, जातियों के भारतीयों ने अपार सहयोग प्रदान किया। रंगून के हबीब नामक एक मुस्लिम नागरिक ने अपनी जमीन, मकान और गहने, सारी सम्पत्ति बेचकर एक करोड़ दान किए और स्वयं अपने आप को आजादी की लड़ाई के काम में नेताजी के आगे समर्पित कर दिया। जब पूर्वी एशिया पर इंगलैण्ड और अमेरिका ने अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया, तो उन्होंने आजाद हिन्द फौज के सिपाहियों को बंदी बनाकर भारत भेज दिया। उनमें से २० हजार सैनिकों को लाल किले में रखा गया, कुछ को नई दिल्ली छावनी में। छह सैनिकों को गोली मार दी गई। २० अगस्त, १९४५ को जवाहर लाल नेहरू ने अपना वक्तव्य दिया : ... यदि इन सैनिकों के साथ साधारण बागियों जैसा व्यवहार किया गया, तो एक भयंकर त्रुटि होगी, जिसके परिणाम दूरगामी होंगे। इनको दंडित करने का अर्थ भारत और उसकी समस्त जनता को दंडित करना माना जाएगा और लाखों हृदयों में घाव बन जायेगा।

नेहरूजी ने ठीक कहा था। जब जनरल शाहनवाज, कर्नल सहगल और कर्नल ढिल्लन के विरुद्ध लाल किले में मुकदमा आरम्भ हुआ, तो एक ओर देश के सर्वश्रेष्ठ नामी वकील उनके पक्ष में सहयोग के लिये उठ खड़े हुए, दूसरी ओर समूचे देश में आजाद हिन्द फौज के बंदियों की रिहाई को लेकर जन विक्षोभ उमड़ पड़ा और इसमें देश के तमाम हिन्दू, मुसलमान, सिख जनता की आवाज शामिल थी।

यहाँ यह तथ्य भी ध्यान देने योग्य है कि उन्हें बंगाल की शस्य श्यामला भूमि, यहाँ के जल-थल, आकाश-बातास, भाषा-संस्कृति से सच्चा और गहरा प्रेम था। रवीन्द्रनाथ और उनके 'जनगणमन' का जब-तब विरोध करनेवालों को याद रखना चाहिए कि उनके भाषणों में सबसे अधिक रवीन्द्रनाथ की कविता के उद्धरण मिलते हैं और उनकी प्रेरणा से आजाद हिन्द फौज में 'जनगणमन' को राष्ट्रगान के रूप में गाया जाता था। उस युग के अधिसंख्य प्रगतिशील राष्ट्रीय नेताओं की तरह वे भी 'समाजवादी स्वाधीन राष्ट्र' का सपना देखते थे। २९ दिसम्बर, १९२९ को मेदिनीपुर युवा-सम्मेलन में सभापति के पद से अपने अभिभाषण में इस सपने को समझाते हुए उन्होंने कहा था, ''पूर्ण साम्यवाद के आधार पर नए समाज का निर्माण करना होगा। जाति-भेद के स्थायी ढाँचे को बिल्कुल तोड़ देना होगा। नारी को सभी दृष्टियों से मुक्त कर समाज और राष्ट्र के पुरुषों के साथ अधिकार तथा दायित्व देना होगा। आर्थिक विषमता दूर करनी होगी और वर्णधर्म के भेदभाव को भूलकर प्रत्येक को (चाहे वह पुरुष हो, चाहे नारी) शिक्षा और विकास का समान सुयोग देना होगा। समाजवादी सम्पूर्ण स्वाधीन राष्ट्र जिस प्रकार भी स्थायी हो, उसके लिये सचेष्ट होना होगा।''[७]

आज देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, लेकिन जाति-भेद, लिंग-भेद, आर्थिक विषमता धर्मोन्माद-धर्मांधता और संकुचित साम्प्रदायिकता से मुक्त समाज के

निर्माण का स्वप्न अभी पूरी तरह साकार नहीं हुआ है। यही नेताजी सुभाषचन्द्र की विरासत है, जो हमें वे सौप गए हैं। ○○○

सन्दर्भ सूत्र – १. तरुणाई के सपने पृ.११४ **२.** वही, पृ. ११५ **३.** वही, पृ.११८ **४.** वहीं, पृ.११९ **५.** वही, पृ. १२५ **६.** वही, पृ. ९३-९४ **७.** वहीं, पृ. १५४

पृष्ठ ३५५ का शेष भाग

न्यौछावर कर दिया। आर्य समाज के सदस्य और देशभक्त भाई परमानन्द की गिरफ्तारी और फाँसी की सजा होने की खबर ने रामप्रसाद बिस्मिल को झकझोर दिया। उनके भीतर स्वतन्त्रता की ज्वाला भड़क उठी। यहीं से उनके क्रान्तिकारी जीवन का सूत्रपात हुआ। इसके बाद से ही उन्होंने विदेशी शक्ति को उखाड़ फेंकने का निश्चय कर लिया। मैनपुरी षड्यंत्र केस के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी गेंदालाल दीक्षित से पंडित राम प्रसाद बिस्मिल अत्यधिक प्रभावित हुए। दोनों ने मैनपुरी, इटावा, आगरा व शाहजहाँपुर आदि जिलों में गुप्त रूप से अभियान चलाया और युवकों को देश की आन पर मर मिटने के लिए संगठित किया। इन्हीं दिनों उन्होंने 'देशवासियों के नाम संदेश' नामक एक पत्र प्रकाशित किया। काकोरी षड्यन्त्र केस में भागीदारी के कारण ब्रिटिश सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और न्यायालय ने बिस्मिल को फाँसी की सजा सुनाई। उनके बलिदान की गाथा भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में अमर हो गई है। भारत माता ऐसे ही स्वातन्त्र्य वीरों के कारण वीर-प्रसूता कहलाई।

रामप्रसाद बिस्मिल

वास्तव में स्वतन्त्र भारत अनेकानेक लोगों के अथक प्रयास, दृढ़ संकल्प और बलिदान का प्रतिफल है। ऐसी स्वतन्त्रता का मूल्य समझकर उसका संरक्षण करना नागरिक समाज का उत्तरदायित्व है। स्वातन्त्र्य वीरों की गाथा हमें यही बोध कराती है। ○○○

सारगाछी की स्मृतियाँ (११८)

स्वामी सुहितानन्द

१७-०५-१९६४

एक ब्रह्मचारी एक नवयुवक से किसी काम के बारे में गलती करने के कारण वाद-विवाद कर रहे हैं। यह सुनकर महाराज ने ब्रह्मचारी को बुलाकर कहा – सृष्टि की लीला ऐसी ही है। यदि तीनों गुण (सत्त्व, रज, तम) मिल-जुलकर नहीं रहें, तो उनके साथ रहा नहीं जा सकता। बिल्कुल ही सतोगुणी लोग सुविधावादी होते हैं। किसी भी संकट में वे मेरी सहायता नहीं करेंगे। रजोगुणी लोगों के साथ रहना ही कठिन है। इसीलिए सृष्टि में सब गुण मिला दिए गए हैं।

हमारे समीप ही मेहतर लोग रहते हैं। इनकी बातें प्राय: मन में उठती हैं। ये लोग भी तो ठाकुर की ही सेवा करते हैं। यदि इन्हें यह बात सिखा दी जाए कि जो पूजा करता है उसमें और उनके बीच कोई भेद नहीं है, दोनों की ही समान रूप से आवश्यकता है। बाल-बच्चों को लेकर थोड़ा राम-नाम करो, ठाकुर को पुष्प, धूप अर्पित करो और थोड़ी पढ़ाई-लिखाई करो, रामचरितमानस आदि पढ़ो।

ब्रह्मचारी विष्णुचैतन्य एक विख्यात विद्यालय के प्रधानाध्यापक हैं। वे कुछ दिन प्रेमेश महाराज के पास रहने के लिए आए हैं।

महाराज – विष्णु आ रहा है, सँभलकर रहना होगा। शिक्षा के सम्बन्ध में कुछ बातें कहने की इच्छा होगी। प्रत्येक नवयुवक में उसी अनन्त शक्ति का भण्डार है। उनमें फूँक मारते ही ठीक-ठीक नारायण भाव से उनकी सेवा प्रस्फुटित हो उठेगी। वे लोग स्वयं ही अपना अनुशासन-पालन रखेंगे। शिक्षक केवल उन पर दृष्टि रखेंगे। उन्हें समझा देना होगा कि यदि वे इसकी उपेक्षा करते हैं, तो इसमें उनकी ही हानि है। शिक्षकों को भी समझाना होगा। यदि कोई अनुशासन बनाये नहीं रखता है, तो उन्हें ही उच्छृंखल बच्चों को शान्त करना होगा। बच्चों के भीतर पहले से ही 'रूपं देहि, जयं देहि' भाव (अर्थात् भौतिक उपलब्धि प्राप्त करने के भाव) को प्रविष्ट करा देना होगा। आत्म-विकास की बात को समझा देना होगा। अभी पाँच-छह वर्ष उत्सव, खाना-पीना सब बन्द करके शिक्षा पर धन खर्च करने की आवश्यकता है। योग्य लोगों की अधिक आवश्यकता है।

सेवक पास में ही बैठकर उपनिषद पढ़ रहा था तथा बीच-बीच में महाराज से कुछ-कुछ पूछ रहा था।

महाराज – गीता पाठ के पश्चात् उपनिषद् अलोना, नीरस लगता है। कैसी कठिन भाषा, भाव भी प्रवाहपूर्ण नहीं।

''गीता रस ईख है, जिसे खाने से स्वाद नहीं मिलता। गुरु के पास चूस-चूसकर रसपान करना चाहिए।''

यदि ब्रह्मचारी प्रशिक्षण केन्द्र में तुलनात्मक अध्ययन कर सको, तो देखोगे कि छह वर्ष के गीतापाठ से तुम्हारे जीवन में क्या (अद्भुत परिवर्तन) हुआ है।

१८-०५-१९६४

राजयोग के ध्यान, धारणा, समाधि सूत्र का पाठ हो रहा है।

प्रश्न – आपको समाधि तक हुई है?

महाराज – इतने दिनों से यही सब चर्चा कर रहा हूँ, फिर कुछ नहीं होगा? ध्यान तक कर सकता था। अभी प्रत्याहार कर सकता हूँ।

प्रश्न – क्या आपने माँ को स्वप्न में देखा है?

उत्तर – एक दिन देखा, घर की अनेक महिलाओं के बीच कोई एक पैर मोड़कर बैठी हैं, सम्भवत: माँ रही होंगी।

१९-०५-१९६४

प्रेमेश महाराज ने ध्रुव नारायण साहा के माध्यम से सेवक के लिये 'चाणक्य श्लोक' नामक एक पुस्तक मँगवाई है। इस पुस्तक को देकर उन्होंने कहा – बीच-बीच में इसे पढ़कर देखो, बहुत-सी चीजें पाओगे, व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होगा।

सेवक ने एक श्लोक पढ़ना आरम्भ किया और महाराज से उसका अर्थ पूछा।

महाराज –

अहन्यहनि भूतानि गच्छन्ति यममन्दिरम्।
शेषाः स्थिरत्वमिच्छन्ति किमाश्चर्यमतः परम्।।

यह बात अतिरंजित नहीं है। जीवों की जन्म-मृत्यु के समान आश्चर्यजनक दूसरी कोई बात नहीं है। मृत्यु ने हमारा हाथ पकड़ा हुआ है। ऐसा भी नहीं है कि हम उसकी ओर देखते ही नहीं हैं, फिर भी इस चिरसंगी (मृत्यु) के सम्बन्ध में मोटे तौर पर हम सचेत नहीं हैं। प्रत्येक परिवार में जन्म-मरण का खेल चल रहा है। तीन पीढ़ियों का वास स्थान

क्या जन्म-मरण का चित्र नहीं है? पहले कुलीन घरों में एक वंशावली-विवरण लिखा रहता था। इसका अर्थ तो मरण का इतिहास ही है। क्या किसी ने ऐसा कोई गाँव देखा है, जिसके निकट मृत देह को जलाने या जमीन में दफनाने की कोई व्यवस्था नहीं है? फिर, मृत व्यक्ति की स्मृति में श्मशान में निर्मित उसकी मन्दिराकृति पक्का घर तो हमलोगों ने अनेक स्थानों पर देखा है। मृत्यु के सम्बन्ध में हमलोग एक दृष्टि से पूरी तरह सचेत होते हैं, किन्तु व्यावहारिक जीवन में पूरी तरह इससे अचेत रहते हैं।

कई वर्षों पूर्व एक दिन मैंने देखा था कि एक अति सुन्दर दीर्घकाय सज्जन देवशिशु सदृश एक छोटे बालक का हाथ पकड़कर बेलूड़ मठ के प्रांगण में चलते हुए ठाकुर मन्दिर की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए जा रहे थे। यह दृश्य देखकर सहसा मेरा हृदय इस चिन्ता से काँप उठा था कि यदि यह छोटा बालक मर जाए, तो ये सज्जन इसे किस प्रकार सह पाएँगे? ठाकुर ने कहा है – सन्तान के मर जाने पर स्त्रियाँ बहुत विलाप करती हैं, किन्तु उसके बाद फिर सन्तान प्रसव करती हैं। यह सब क्या मनुष्य की ऐच्छिक दुष्टता है? नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता। यह महामाया की जादूगरी है। संसार चलाने का यही प्रधान कौशल है। मनुष्य यदि जान ले कि मेरे प्रियजन की हर पल मृत्यु की सम्भावना है, तो स्नेह, ममता, बन्धुत्व, सौहार्द, पारिवारिक प्रीति का बन्धन, सामाजिक सम्बन्ध, यहाँ तक कि इस संसार का सारा आनन्द ही बिल्कुल हेय और अनुपादेय हो जाता है। यदि मैं जानता कि मेरे जीवन के सर्वस्व रूप में प्रियजन किसी भी समय अदृश्य हो सकते हैं, तो क्या मैं उन्हें लेकर आनन्द पाऊँगा? इसीलिए तो महामाया प्रमाद के आवरण से मनुष्य की बुद्धि को आवृत करके इस संसार को चला रही हैं। इस संसार के लिए सर्वाधिक आवश्यक मन का यह विशेष भाव नहीं रहने से जगत् नहीं रहेगा। इसीलिए भोगी के लिए यह एक अमूल्य वस्तु है।

इस श्लोक के साथ इस एक श्लोक को भी जानना उचित है, जिससे एक विस्तृत धारणा होगी –

अजरामरवत् प्राज्ञो विद्यामर्थञ्च चिन्तयेत्।

गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत्।।

यहाँ धर्म कहने से मोक्ष-धर्म समझना होगा। जो इस जीवन-कारागार से मुक्ति चाहता है, उसे तो पहले ही यह जानना होगा कि मैं जहाँ हूँ, वहाँ से किस दिन चले जाने का आदेश होगा, इसका कुछ भी निश्चित नहीं है। इसीलिए मुझे अपनी गठरी-पोटली को हमेशा बाँधकर रखना अत्यावश्यक है। ऐसा नहीं है कि केवल इस वर्तमान वास-स्थान का त्याग कर देना होगा, अपितु कहाँ जाकर रहना होगा, यह भी बिल्कुल अनिश्चित है। इस चिन्तन के सुस्पष्ट हो जाने पर परवर्ती जीवन के शान्ति और कल्याण हेतु मनुष्य बेचैन हो उठेगा, इसमें सन्देह नहीं है।

हम लोग कैसी विकट अनिश्चितता के बीच दिन-रात बिता रहे हैं, उसके बारे में सोचकर शरीर काँप उठता है।

वर्ष १९१८ ई. की वर्षा ऋतु में एक दिन सन्ध्या को अचानक भूकम्प आ गया। उस समय हल्की वर्षा हो रही थी। हमलोग घर से बाहर निकलकर प्रांगण में खड़े होकर भीगने लगे। तदुपरान्त चारों ओर बहुत शोरगुल सुनकर, जल्दी से वहाँ जाकर देखा कि शहर का एक दोतल्ला घर गिर गया था और एक व्यक्ति बाहर खड़ा होकर रो रहा था। दोतल्ले पर उस व्यक्ति की पत्नी अपनी कई पुत्र-पुत्रियों के साथ सोई हुई थी। उनके ऊपर ही वह घर गिर पड़ा था। अनेक प्रयत्न करके मजिस्ट्रेट साहब ने पुलिस के एक प्रशिक्षित कुत्ते की मदद से ईंट आदि के मलबे के नीचे एकदम दबे-कुचले उन मृतकों को बाहर निकलवाया। यह बीभत्स दृश्य चित्र की तरह मेरी स्मृति-पटल पर सुस्पष्ट रूप से अंकित हो गया है। इस तरह की घटनाएँ संसार में निरन्तर हो रही हैं। यह सब तो प्राय: सभी लोग जानते हैं।

इस अनिवार्य विपदा से प्राण बचाने के लिए मनीषियों ने कितने ही मार्गों का अन्वेषण किया है। कई लोग ज्ञान-भक्ति-योग आदि मार्गों का अवलम्बन करके चिरकाल से इस विपदा से मुक्ति पाने का प्रयास करते हैं। उन लोगों ने एक और अद्भुत उपाय बताया है, उसका नाम है, संन्यास। मुमुक्ष संन्यासी के दल में सम्मिलित होकर अपना परिचय बदल देंगे, तृतीय चरण में वैदिक रीति से माता-पिता का श्राद्ध करके अपना जन्म-सम्बन्ध छोड़ देंगे। अन्तत: अपना श्राद्ध करके 'मैं मर गया हूँ' अर्थात् इस जगत् में मैं मृतवत् रहूँगा, इस भाव का अवलम्बन करके स्वयं को सर्वतोभावेन अध्यात्म-साधना में संलग्न करेंगे।

यह प्रक्रिया जाने या अनजाने लगभग सभी धर्म-सम्प्रदायों में है। प्रत्येक धर्म में (वह प्रवृत्ति धर्म हो या निवृत्तिपरक धर्म हो) प्रवेश के समय एक न एक अनुष्ठान होता है, जो उसे

शेष भाग अगले पृष्ठ पर

श्रीरामकृष्ण-गीता (१४)

स्वामी पूर्णानन्द, बेलूड़ मठ

(स्वामी पूर्णानन्द जी रामकृष्ण संघ के वरिष्ठ संन्यासी हैं। उन्होंने २९ वर्ष पूर्व में इस पावन श्रीरामकृष्ण-गीता ग्रन्थ का शुभारम्भ किया था। इसे सुनकर रामकृष्ण संघ के पूज्य वरिष्ठ संन्यासियों ने इसकी प्रशंसा की है। विवेक-ज्योति के पाठकों के लिए बंगला भाषा से इसका हिन्दी अनुवाद रामकृष्ण मिशन आश्रम, नारायणपुर के स्वामी कृष्णामृतानन्द जी ने की है। – सं.)

यथावरुह्य चेत् तत्र गुल्मपूर्णं जलाशयम्।।
अपसृतोऽपि गुल्मोऽयं तत्क्षणात् पुनरागतः।।२१।।

– जैसे जलकुम्भी से भरे जलाशय या तालाब में उतर कर यदि जलकुम्भी को हटा दिया जाये, तोत वह पुनः उसी क्षण वापस आ जाती है।।२१।।

मायावृतेन जीवेन माया मुमुक्षुचेतसा।।
अपसृता प्रसह्यापि चाविर्भवति सा पुनः।।२२।।

– उसी प्रकार माया से आवृत जीव के द्वारा मन में माया से मुक्त होने की इच्छा से माया को जोर पूर्वक हटा देने के बाद भी वह फिर से (माया) आविर्भूत हो जाती है।।२२।।

अपसृतस्तु गुल्मश्चेद् बंशदण्डेन वाधितः।।
तदा प्रचाल्य तं बंशमयं नागन्तुमर्हति।।२३।।

– परन्तु यदि जलकुम्भी को हटाकर, बाँस की लकड़ी से बाँध दिया जाये तब बाँस को धकेलकर वह गुल्म फिर नहीं आ सकता।।२३।।

दूरीकृत्य तथा मायां स्याद्भक्तिज्ञानवेष्टनम्।।
शक्या नान्तः प्रवेष्टुं सा सच्चित्सुखं प्रकाशते।।२४।।

– उसी प्रकार माया को दूर हटाकर, भक्ति-ज्ञान का घेरा लगा दिया जाये, तो फिर वह माया अन्दर प्रवेश नहीं कर सकती तथा सच्चिदानन्द ही मात्र प्रकाशित रहता है।।२४।।

श्रीमहाराज उवाच

कश्चित्तु साधुरागम्य दक्षिणेश्वरमन्दिरम्।।
दिनं कतिपयं तत्र स्थितो वाद्यगृहोपरि।।२५।।

– श्रीमहाराज ने कहा – दक्षिणेश्वर मंदिर में आकर एक साधु ने नहबतखाने के ऊपर के कमरे में कुछ दिन निवास किया था।।२५।। **(क्रमशः)**

पिछले पृष्ठ का शेष भाग

पारिवारिक सम्बन्ध से ऊपर उठा देता है। मुसलमानों का सुन्नत, ईसाईयों का बपतिस्म, हिन्दुओं का उपनयन मनुष्य को उसके जन्म-संस्कार से ऊपर उठा देता है। वैदिक सम्प्रदाय में संन्यास इसी आत्मोन्नयन का चरमोत्कर्ष है।

मानव जीवन को सभी दृष्टि से जान सकने पर भी जीवन के बहुत उन्नत होने की सम्भावना रहती है और इसे साधित कर लेने पर कितने मंगल की सम्भावना है, उसे जो लोग चिन्तन करके देखते हैं, वे लोग समझ सकेंगे। **(क्रमशः)**

पृष्ठ ३७३ का शेष भाग

नहीं हैं। यही आत्मज्योति है। अज्ञानियों के भीतर यह ज्योति आच्छन्न रहती है, इसीलिए उसको देखा नहीं जा सकता। भगवान की कृपा से जब साधक सिद्धिलाभ करता है, तब उसके सब आवरण नष्ट हो जाते हैं और आत्मज्योति प्रकट होती है। भगवान ने कृपा करके अर्जुन के आवरण को दूर किया और अर्जुन उनके दिव्य रूप को देखने में समर्थ हुए।

संजय कहता है – अर्जुन ने देवाधिदेव उस विराटरूपधारी भगवान के शरीर में नाना आकृतियोंवाले सम्पूर्ण जगत् को कई भागों में बँटा हुआ देखा। उस रूप को देखकर विस्मय में डूबे हुए अर्जुन को रोमांच हो गया और भगवान के चरणों में सिर रखकर और दोनों हाथ जोड़कर वन्दना करते हुये वह कहता है – **(क्रमशः)**

साधुओं के पावन प्रसंग (४४)

स्वामी भास्करानन्द

स्वामी चेतनानन्द

(स्वामी चेतनानन्द जी महाराज से रामकृष्ण संघ के भक्त भलीभाँति परिचित हैं। वर्तमान में महाराज वेदान्त सोसायटी, सेंट लुइस के मिनिस्टर-इन-चार्ज हैं। उन्होंने श्रीरामकृष्ण, श्रीमाँ सारदा, स्वामी विवेकानन्द और वेदान्त पर अनेक पुस्तकें लिखी और अनुवाद की हैं। प्रस्तुत पुस्तक में रामकृष्ण संघ के महान त्यागी संन्यासियों के संस्मरण हैं, जिनके सम्पर्क में लेखक स्वयं आए थे। 'विवेक ज्योति' के पाठकों हेतु मूल बंगला से इसका हिन्दी अनुवाद धारावाहिक रूप से दिया जा रहा है। – सं.)

स्वामी भास्करानन्द (१९००-१९७८) (बुद्ध महाराज) को १९६१ ई. में अद्वैत आश्रम में प्रथम बार देखा था। उसी वर्ष वे न्यासी नियुक्त हुए थे तथा गम्भीर महाराज (स्वामी गम्भीरानन्द जी) का दर्शन करने के लिए आये थे। तदुपरान्त मठ में उनको कई बार देखा हूँ। वे सदानन्दमय सात्त्विक संन्यासी थे। उनके शरीर का रंग बहुत सफेद था तथा हँसते समय उनके सफेद दाँत बहुत अच्छे लगते थे। उनका हृदय भी बाहर के जैसा ही सफेद था। वे इतने सरल थे कि कुछ भी गोपनीय नहीं रख पाते थे। कोई साधु यदि किसी अन्य साधु के विरुद्ध शिकायत करता, तो वे उस साधु को बुलाकर कहते थे – सुनो, उस साधु ने तुम्हारे विरुद्ध यह शिकायत की है। इससे एक असहज वातावरण उत्पन्न हो जाता था। इसके परिणामस्वरूप कोई साधु उनके पास शिकायत नहीं करते थे।

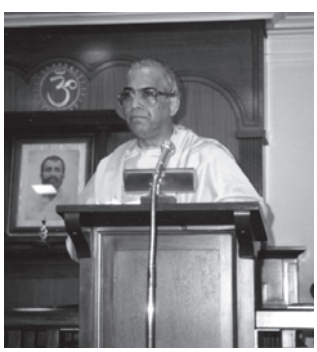
स्वामी भास्करानन्द

अद्वैत आश्रम की लाईब्रेरी में पुराना उद्बोधन (५१ वर्ष, १ और २ संख्या) में 'शोनाने नेताजी' नामक स्वामी भास्करानन्द जी द्वारा लिखित एक लेख पढ़ा। महाराज उस समय सिंगापुर आश्रम के अध्यक्ष थे। नेताजी सुभाषचन्द्र बसु (बोस) समय मिलने पर ध्यान करने के लिए वहाँ आते थे। वे उस समय 'आजाद हिन्द फौज' को लेकर बहुत व्यस्त थे। परवर्तीकाल (सम्भवत: १९६२-६३ ई.) कोलकाता में एक जापानी कार्यालय में कार्यरत एक व्यक्ति के साथ मेरा परिचय हुआ। वे अद्वैत आश्रम में पुस्तक खरीदने आए हुए थे। उन्होंने कहा कि वे आजाद हिन्द फौज में नेताजी के अंगरक्षक थे। एक दिन नेताजी ने उनको सिंगापुर रामकृष्ण मिशन से एक जपमाला लाने के लिए कहा। उन्होंने ५४ संख्यावाला रूद्राक्ष का एक माला लाकर नेताजी को दिया। नेताजी ने कहा, ''मैं १०८ संख्यावाला रूद्राक्ष का माला चाहता हूँ।'' उन्होंने कहा, ''१०८ वाला माला वहाँ पर नहीं है। आप दो बार इसको घूमायेंगे तो १०८ हो जायेगा।'' उस व्यक्ति का नाम मुझे स्मरण नहीं है।

श्रीरामकृष्ण की मूर्ति, रामकृष्ण मिशन, सिंगापुर

स्वामी भास्करानन्द जी १९३९ से १९४५ ई. तक सिंगापुर आश्रम के महन्त थे। 'शोनाने नेताजी' लेख में बुद्ध महाराज ने नेताजी के सम्बन्ध में कई छोटी-छोटी घटनाएँ लिखी है। १५ फरवरी, १९४२ ई. को जापानियों ने सिंगापुर पर अधिकार कर लिया तथा उसका नाम दिया 'शोनान'। जापानी भाषा में इसका अर्थ 'दक्षिण सागर का प्रकाश' होता है। महाराज ने एक दिन होटल में रासबिहारी बसु के साथ भेंट की। उन्होंने बुद्ध महाराज से कहा, ''अभी धर्म-टर्म रख दीजिए। सब कार्य में लग जाइये। भारत के स्वाधीन होने पर उस विषय में सोचा जायेगा।'' महाराज ने उत्तर दिया, ''हाँ, हमलोग तो सेवाकार्य हेतु सदा प्रस्तुत रहते हैं। हमलोगों से जो सम्भव होगा यथासामर्थ्य हमलोग करेंगे ही।''

इस ओर नेताजी भवानीपुर घर से गाड़ी में भागकर रेलगाड़ी से अफगानिस्तान चले गये। वहाँ से इटली होकर जर्मनी गये। जर्मन लोग उनको सारमेरिन द्वारा भूमध्यसागर ले गये तथा वहाँ से जापानी लोग अपने सारमेरिन से 'शोनान' में ले आये। वहाँ से नेताजी हवाई जहाज से टोकियो गये।

बुद्ध महाराज ने लिखा है : कई महिनों के बाद सुना कि सुभाष बाबू टोकियो में आये हुए हैं तथा वहाँ से जल्दी ही रेडियो में भाषण देंगे। उन्होंने रेडियो पर तीन दिन तक

तीन भाषण दिया था। उसका सारांश यह था : भारत के स्वाधीनता संग्राम के लिए एक अनमोल संयोग जुटा है। इस संयोग को हाथ से जाने देने पर अनेक वर्षों तक इस प्रकार का संयोग मिलने की सम्भावना नहीं है। एक अकल्पनीय उपाय से मेरा इस देश में आना सम्भव हुआ है। ब्रिटिशराज जिस प्रकार मुझे भारत के बाहर आने से नहीं रोक पाया, उसी प्रकार भारत में प्रवेश करने से मुझे नहीं रोक पायेगा। आपलोग जानते हैं कि मैं एक क्रान्तिकारी हूँ। आपलोग यह भी जानते हैं कि अमेरिका की सहायता लेकर डी. भेलेरा ने आयरलैण्ड के स्वाधीनता संग्राम को चलाया था। हमलोगों को भी उसी प्रकार एक स्वाधीन राज्य का सहयोग मिला है। आधुनिक संसार में जापान एक पराक्रमशाली जाति है। हमलोग भी उनकी सहायता लेकर भारत के स्वाधीनता संग्राम को चलायेंगे। मैं विश्वास करता हूँ कि इसमें आप सभी मेरी सहायता करेंगे। मैं शीघ्र ही शोनाने जाऊँगा।

सात दिन के भीतर ही वे विमान से शोनाने आये। शहर के सर्वश्रेष्ठ 'कैथे' नामक सिनेमा हॉल में उनके स्वागत का आयोजन किया गया। उनके साथ कई जर्मनप्रवासी भारतीय थे। निर्दिष्ट समय पर रासबिहारी बाबू सुभाष बाबू को लेकर व्याख्यान मंच पर आये। विपुल जनता के समक्ष रासबिहारी बाबू ने कहा, ''ये हैं आपके प्रिय नेता सुभाष बाबू, मैं इन्हें आपको समर्पित करता हूँ। आज से ये आपके सुप्रिम कमाण्डर होंगे। मैं बहुत वृद्ध हो गया हूँ, मुझे अवकाश लेने दीजिए। वे आपको हमारी मातृभूमि भारत के स्वाधीनता के लिए मार्गदर्शन करेंगे। मैं विश्वास करता हूँ कि आप सब आँखें मूँदकर उनको नियुक्त नेता स्वीकार करेंगे।'' तत्पश्चात् सुभाष बाबू ने अपने भविष्य के कार्य के सम्बन्ध में कुछ बताकर सभा विसर्जित किया।

सुभाष बाबु के माल्या आने की बात विद्युत-वेग से सर्वत्र प्रचारित हो गयी। जिन्होंने सुभाष बाबू को भारत में पहले देखा था, उन्होंने उनको देखकर ही पहचान लिया और जिनलोगों ने टोकियो-रेडियो पर उनके भाषण सुनकर यह धारणा बना लिया था कि ये जापानी सुभाष बाबू हैं, वे भी धीरे-धीरे उनके कार्यकलाप देखकर तथा सगे-सम्बन्धियों के निकट सूत्रों से जानकर उनके सम्बन्ध में सन्देह नहीं कर पाये अर्थात् सन्देहमुक्त हो गये कि ये भारत के ही सुभाष बाबू हैं।

शोनाने के समुद्र-तीर पर एक विशाल घर को उन्होंने अपना निवास-स्थान बनाया। वह घर सशस्त्र प्रहरी द्वारा सदा रक्षित था। सुभाष बाबू की लिखित अनुमति के बिना उस घर में सर्वसाधारण को प्रवेशाधिकार नहीं था। सुभाष बाबू की प्राण रक्षा हेतु जापानियों ने उनको सभी तरह से सुरक्षा का प्रबन्ध किया था। उनके आने-जाने के लिए एक बड़ी गाड़ी थी तथा उसके साथ सशस्त्र गार्ड रहते थे। उनके लिए एक हवाई जहाज सदा तैयार रहता था। वे जब चाहते, उन्हें तत्क्षण जापानी पायलट सहित हवाई जहाज तैयार मिलता।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

जिस दिन से रासबिहारी बाबू ने सुभाष बाबू के ऊपर कार्यभार सौंप दिया, उसी दिन से उन्होंने पूर्णनिष्ठा से कार्य आरम्भ किया। उनके सहकर्मियों से सुना हूँ कि वे रात्रि में तीन घण्टे से अधिक नहीं सोते थे। पूरा दिन कर्मव्यस्तता में ही चला जाता था। कार्यभार ग्रहण करने के कुछ दिन के बाद ही उन्होंने सर्वसाधारण को निमन्त्रित करके एक विशाल सभा का आयोजन किया। शोनाने के म्यूनिसिपल ऑफिस के सामने विस्तृत मैदान में एक जनसमुद्र के सामने उन्होंने उनके माल्या आगमन के उद्देश्य पर प्राय: डेढ़ घण्टा तक भाषण दिया। भाषण के प्रारम्भ में ही मूसलाधार वर्षा आरम्भ हो गयी। आश्चर्य है कि, इस पर भी वे कुछ भी विचलित न होकर जनता को लक्ष्य करके अपना भाषण अविरल देते रहे। वर्षा की उपेक्षा करते हुए जनता भी उनके भाषण को सुनती रही। देखने में आया कि भाषण के अन्त में सभी लोग गीले वस्त्र में ही शान्तचित्त से अपने-अपने घर वापस चले गये। बातों-बातों में कभी-कभी सुभाष बाबू इस सभा का उल्लेख करते हुए कहते थे, ''देखा, उस दिन सभा में मूसलाधार बारिस होने पर भी सभा में सभी लोग किस प्रकार अविचलित होकर भाषण सुन रहे थे। इससे स्पष्ट होता है कि हमारे कार्य हेतु साधारण जनता की अपार सहानुभूति मिलेगी। इसमें किंचित मात्र भी सन्देह नहीं है।''

१९४३ ई. में विजया दशमी की रात्रि में सुभाष बाबू ने अपने निवास-स्थान से सिंगापुर Indian Independence League की गाड़ी भेजकर मुझे उनके साथ अविलम्ब भेंट करने का अनुरोध किया। उस समय रात्रि के ९ बज रहे थे। मैं उसी गाड़ी में उनके साथ भेंट करने के लिए गया। गाड़ी

जैसे ही मकान के द्वार पर पहुँची सशस्त्र प्रहरियों ने अति सर्तकता से सुभाष बाबू के सेक्रेटरी के साथ मेरा परिचय करा दिया। सेक्रेटरी हासान मुझे सुभाष बाबू के पास ऊपर ले कर गये। पहुँचने के साथ ही उन्होंने बहुत विनम्रता तथा श्रद्धा से प्रणाम किया और मुझे बैठने के लिए कहा तथा कर्मचारियों को चाय लाने का आदेश दिया। इसके बीच में बातचीत चलने लगी। उनके द्वारा हमारे सिंगापुर आश्रम के कार्यकलाप के सम्बन्ध में जानने के उत्सुक होने पर मैंने उनको इसके सम्बन्ध में विस्तृत रूप से बताया। तदुपरान्त चाय-पानी समाप्त होने पर पुन: वार्तालाप आरम्भ हुआ।

इसी प्रकार कुछ बातचीत होने पर मैंने कहा, ''हमारे मिशन के कार्यकलाप के बारे में आपसे तो कुछ भी छिपा नहीं है। मिशन के उद्देश्य तथा आदर्श को बचाते हुए जितना हो सकता है, उतना हमलोग भी आपके कार्य में सहयोग करेंगे, इस विषय में आप निश्चिन्त रहिए।'' उनके अनुरोध से रात्रिकालीन-भोजन समाप्त करके आश्रम वापस आते-आते रात्रि के बारह बज गये। उनके साथ भेंट करने जाने पर वे कभी भी बिना भोजन कराये नहीं छोड़ते थे। कोई भी ऐसा नहीं था, जो उनके आदर-सत्कार से प्रभावित हुए बिना रह सकें।...

शोनाने में रहते समय श्रीमाँ की जन्मतिथि में निमन्त्रित होकर नेताजी श्रीरामकृष्ण मिशन आश्रम में आये थे। उस दिन मन्दिर में उन्होंने प्राय: आधा घण्टा तक ध्यान किया। तदुपरान्त पूजा के समाप्त होने पर प्रसाद ग्रहण करके कुछ समय तक बातचीत की। प्राय: एक घण्टा तक इस प्रकार व्यतीत होने पर उन्होंने एक 'चण्डी' पुस्तक हेतु विशेष उत्साह प्रकट किया, मेरे द्वारा अपनी चण्डी पुस्तक देने पर उन्होंने बहुत आनन्द प्रकट किया।

नेताजी हमारे मिशन के कार्य हेतु एक बहुत बड़े आधार-स्तम्भ थे। यहाँ के (सिंगापुर के) आश्रम हेतु अनाथालय के लिए निवेदन देने पर मकान-निर्माण हेतु उन्होंने पर्याप्त सहायता दी थी। मकान निर्माण हेतु उन्होंने स्वयं लगभग ५०,००० डॉलर दान किया तथा और ५०,००० डॉलर अन्यों द्वारा एकत्रित करवाया। उन्होंने स्वयं आकर 'Boys Home' का उद्घाटन किया। उन्होंने अनाथालय के छात्र-छात्राओं के लिए अन्न-वस्त्र का प्रबन्ध कर दिया था। क्योंकि युद्धकालीन Blackmarket & Food Control के समय तीन सौ छात्र-छात्राओं के लिए अन्न-वस्त्र की व्यवस्था करना हमारे लिए एक कठिन समस्या थी। **(क्रमश:)**

पृष्ठ ३५१ का शेष भाग

ग्रहण नहीं करेंगे।

सिरुतोंडर ने चतुराई से बताया कि उनका पुत्र घर में नहीं है और इसलिए उनके साथ भोजन में सम्मिलित नहीं हो सकता।

लेकिन वैरावर ने जोर देकर कहा, ''बाहर जाओ और उसे बुलाओ, वह आएगा।''

सिरुतोंडर ने वैरावर की आज्ञा का पालन किया और वैसा ही किया जैसा उनको करने के लिए वैरावर ने कहा था।

सिरुतोंडर बाहर जाकर अपने पुत्र का नाम लेकर पुकारे, ''सिराला वा (अर्थात् सिराला आओ।)''। आश्चर्य से भी आश्चर्य ! जैसे ही उसके पिता ने उसे जोर से पुकारा, सिराला दौड़ता हुआ पिता के पास आ गया।

अपने बच्चे को जीवित देखकर सिरुतोंडर तथा उसकी पत्नी विस्मित हो गये।

सिरुतोंडर ने कहा, ''सिराला, वैरावर तुम्हारे साथ भोजन करना चाहते हैं।'' इतना कहकर उन्होंने घर के भीतर प्रवेश किया, जहाँ वैरावर भोजन कर रहे थे। लेकिन वहाँ न तो वैरावर थे और न मांस ही था। सभी अदृश्य हो गये थे।

जब सिरुतोंडर तथा उनकी पत्नी तिरुवेंगट्टू नंगैयार वैरावर को खोज रहे थे, तभी भगवान शिव उनके सामने प्रकट हुए। उन्हें आशीर्वाद दिया और उन्हें स्वधाम में ले गए। ○○○

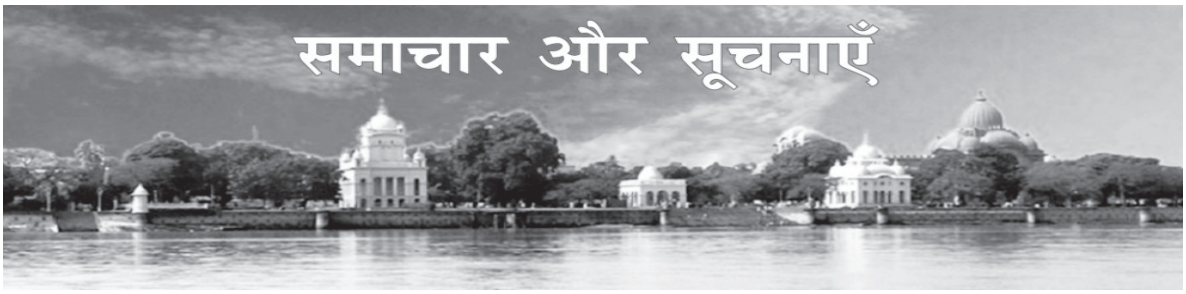

निम्नलिखित केन्द्रों द्वारा रामकृष्ण मिशन की १२५ वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में जनसभाओं, विभिन्न सांस्कृतिक एवं अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया गया – अहमदाबाद, बलराम मन्दिर, चेन्नई मठ, कोयम्बटूर मिशन, डिगबोइ, जलपाइगुड़ी, करीमगंज, कोयिलांडी, कृष्णनगर, लिम्बड़ी, लखनऊ, मुम्बई, नवद्वीप, नारायणपुर, नरोत्तमनगर, रायगंज, राजामहेन्द्रवरम्, राजकोट, राँची मोराबादी, सरिषा, तमलुक, तंजौर, वड़ोदरा एवं विशाखापटनम्।

रामकृष्ण मिशन आश्रम, नारायणपुर द्वारा २८ अप्रैल, २०२२ को कच्चापाल एवं इरकभट्टी आदिवासी विकास केन्द्रों में दो बालिका छात्रावास एवं एक माध्यमिक विद्यालय भवन का उद्घाटन किया गया।

रामकृष्ण मठ एवं मिशन के उपाध्यक्ष स्वामी गौतमानन्द जी महाराज ने १ मई, २०२२ को **कोयम्बटूर मिशन** में स्वामी शिवानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय के डायमण्ड जुबली ब्लॉक एवं भारतीय संस्कृति पर स्थायी प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

रामकृष्ण मठ एवं मिशन के उपाध्यक्ष स्वामी सुहितानन्द जी महाराज ने ४ मई, २०२२ को **श्यामलाताल आश्रम** में नये अतिथि भवन 'प्रेमानन्द धाम' का उद्घाटन किया।

बसावनगौड़ी केन्द्र बैंगलूर स्थिति स्वामी यतीश्वरानन्द स्मृति भवन का उद्घाटन ६ मई को स्वामी गौतमानन्द जी द्वारा किया गया। स्मृतिभवन में एक कक्ष में स्वामी यतीश्वरानन्द जी के चित्र एवं उनके द्वारा उपयोग की गयीं कुछ वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया।

स्वामी सुहितानन्दजी द्वारा **रामकृष्ण कुटीर, अलमोड़ा** में रसोई व भोजन कक्ष एवं साधु-निवास का उद्घाटन क्रमश: ११,१२, एवं १७ मई को किया गया।

१६ मई, २०२२ को बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर अपने शताब्दी उत्सव के अन्तर्गत **देवघर विद्यापीठ** द्वारा विशेष पूजा एवं नारायण सेवा (दरिद्रों में भोजन एवं उपहार वितरण) की गयी।

रामकृष्ण मठ एवं मिशन के महाध्यक्ष पूज्यपाद स्वामी स्मरणानन्द जी महाराज द्वारा विवेक तीर्थ (न्यू टाउन) कोलकाता में विवेकानन्द ऑडीटोरियम का उद्घाटन १६ मई, २०२२ को किया गया। अनुमानत: ३०० संन्यासियों एवं ७०० श्रद्धालुओं ने कार्यक्रम में भाग लिया। सभागार का अग्रभाग शिकागो स्थित आर्ट इन्स्टीट्यूट के समान है, जहाँ १८९३ में स्वामीजी ने विश्वधर्म महासभा को सम्बोधित किया था।

नरोत्तमनगर आश्रम द्वारा आश्रम की ५०वीं वर्षगाँठ के अवसर पर १८ से २३ मई, २०२२ तक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। स्वामी गौतमानन्द, केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह, केन्द्रीय कानून एवं न्यायमंत्री श्री किरन रिज्जु, मुख्यमंत्री अरुणाचल प्रदेश श्री प्रेम खन्डु, उप मुख्यमंत्री अरुणाचल प्रदेश श्री चाउना मेन, विभिन्न अन्य गणमान्य व्यक्तियों एवं लगभग ५००० लोगों ने २१ मई को आयोजित विशेष कार्यक्रम में भाग लिया। आश्रम के निकट, विवेकानन्द मार्ग नामक नयी सड़क के किनारे स्थापित स्वामी विवेकानन्द की प्रतिमा का अनावरण श्री अमित शाह द्वारा किया गया। इस अवसर पर एक वीडियो डॉक्युमेन्टरी एवं स्मरणिका का विमोचन किया गया। अर्द्ध शताब्दी समारोह में साधु-सम्मेलन, भावप्रचार परिषद आश्रमों की सभा, भूतपूर्व छात्र-सम्मेलन, भक्त सम्मेलन एवं सांस्कृति कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

विवेकानन्द विद्यापीठ, कोटा, रायपुर द्वारा २८ मई, २०२२ को शिक्षक-प्रशिक्षण शिविर का तीन सत्रों में आयोजन किया गया, जिसमें लगभग ५०० शिक्षकों ने उत्साह के साथ भाग लिया।